ISSN : 2582-1660
मूल्य : ₹ 25

तीरभुक्ति

वर्ष : 2, अंक : 4, अप्रैल-जून 2020
अखिल भारतीय मिथिला संघक (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

चानोदाइ हरगौड़ी विवाह रुक्मिणीहरण धूर्तसमागम काठक लोक छुतहा घैल
अन्हार जंगल स्वयंवर जखने कहल कक्का हो एना कतेदिन ओरिजनल काम लेटाइत आँचर
बुधिबधिया चौबटियापर ताल मुट्ठी तेतैर गाछ मे आम कोना उल्कामुख सिमरियाक पंडा
गाम नहि सुतैये भफाइत चाहक जिनगी ओकर अंगनाक बारहमासा बसात

मैथिली रंगमंच

लॉकडाउन मे अखिल भारतीय मिथिला संघ कएलक राशन आपूर्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघ सदैव मैथिल लोकनिक दुख सुख मे संग रहल अछि आ अपना सामर्थ्य अनुसार सब जरूरतमंद भाय-बहिन लोकनिक मदति करैत आबि रहल अछि। कोरोना वायरसक वैश्विक प्रसारक बाद जखन देश मे लॉकडाउन घोषित भेल आ बहुसंख्य लोकनिक समक्ष भोजन-राशनक समस्या उपस्थित भेल, त अ.भा.मि.सं. एहन परिस्थिति मे सोझा आएल आ देश भरिक भिन्न भिन्न शहर मे अवस्थित मैथिल लोकनिकें राशन आपूर्ति कएलक। लॉकडाउन केर चलते कार्यकर्ता लोकनिक घर सं बहराएब आ प्रत्यक्ष सामग्री वितरण संभव नहि छल। अध्यक्ष श्री विजयचन्द्र झाक कुशाल नेतृत्व मे संघक प्रबुद्ध कार्यकर्ता लोकनि एकर नीक उपाय ताकलनि। सार्वजनिक अपील कएल गेल जे जिनका सोझां भोजन-राशनक समस्या होए, ओ लोकनि अपन समस्या संघक पदाधिकारी लोकनिकें बताबथु। फोन आयब शुरू भेल, कार्यकर्ता लोकनि जरूरतमंद सबहक सूची तैयार कयलनि आ संघक पदाधिकारी लोकनि जरूरतमंद सभसं गप हुनका हुनक नजदीकी किराना दोकान सं राशन लेबाक लेल निर्देशित कएलनि। दोकानदार लोकनिक मोबाइल नंबर पर हुनक वस्तु-जातक दाम 'पेटीएम' केर माध्यमे पठा देल गेल। मुख्यत: दिल्ली एनसीआर क्षेत्र मे एहि सुविधाक लाभ जरूरतमंद लोकनिकें भेटल। संगहि लुधियाना, चेन्नई, कटिहार आ अनेकानेक आन शहर सभमे लगभग 1500 व्यक्ति कें एहि तरहें राशन सहायता ऑनलाईन उपलब्ध कराओल गेल। एहि पुनीत कार्य मे संघक महासचिव अखिलेश मिश्र बढ़ि चढ़ि क योगदान कएलनि। संगहि, संघक महासचिव विद्यानन्द ठाकुर, सचिव शंकर कुमार झा, कौशल झा, कार्यकारिणी सदस्य ओम कुमार चौधरी इत्यादि लोकनि सेहो एहि काज कें नीक जकां संपादित कएलनि। एहि सं फराक, संघक उपाध्यक्ष अनिल झा नजफगढ़ मे आ कार्यकारिणी सदस्य अरुण कुमार मिश्र तथा सुमन ठाकुर किराड़ी विधानसभा क्षेत्र में जरूरतमंद लोकनिक भोजनक प्रत्यक्ष प्रबंध सेहो कएलनि। संघक अध्यक्ष विजयचन्द्र झा सब पदाधिकारी आ कार्यकर्ता लोकनिकें एहि काज लेल हार्दिक धन्यवाद आ प्रशंसा कएलनि अछि। ■

मदद को मिथिला संघ की पहल

■ स, नई दिल्ली: अखिल भारतीय मिथिला संघ दिल्ली-एनसीआर में गरीब लोगों की लगातार मदद कर रही है। संघ ने मदद के लिए अनूठी पहल की है। संघ के अध्यक्ष विजयचंद्र झा के मुताबिक उनके कार्यकर्ता जरूरतमंदों की सूची उन्हें भेजते हैं। साथ में जहां मदद चाहिए, वहां के किसी किराना दुकान के मालिक का पेटीएम नंबर भी भेजा जाता है। सामान खरीदने के बाद जितनी रकम का बिल बनता है, वह रकम पेटीएम के जरिए दुकानदार को भेज दी जाती है। संघ इस तरह तकरीबन 700 परिवारों को मदद पहुंचा चुका है। झा के मुताबिक, इस काम में अखिलेश मिश्र, ओम चौधरी और शंकर झा का योगदान सराहनीय है।

दैनिक भास्कर 14-Apr-2020 मधुबनी Page 1

गरीब प्रवासियों की मदद कर रहा है मिथिला संघ

भास्कर न्यूज | मधुबनी

अखिल भारतीय मिथिला संघ दिल्ली-एनसीआर में गरीबों की लगातार मदद कर रहा है। संघ दिल्ली सहित बिहारी के प्रवासियों को मदद पहुंचा रहा है। अध्यक्ष विजयचंद्र झा के मुताबिक उनके कार्यकर्ता जरूरतमंदों की सूची भेजते हैं। साथ में जहां मदद चाहिए, वहां के किसी किराना दुकान के मालिक का पेटीएम नंबर भी भेजा जाता है। सामान खरीदने के बाद जितनी रकम का बिल बनता है, वह रकम पेटीएम के जरिए दुकानदार को भेज दी जाती है। संघ अबतक 1000 परिवारों को मदद पहुंचा चुका है। श्री झा के मुताबिक इस काम में अखिलेश मिश्र, ओम चौधरी, और शंकर झा अपना योगदान दे रहे हैं।

श्रद्धांजलि

लोहना (मधुबनी) निवासी वरिष्ठ मैथिली साहित्यकार राज 01 अगस्त कें अंतिम सांस लेलनि। अखिल भारतीय मिथिला संघ परिवार दिश सं हुनका अंत:करण सं श्रद्धांजलि।

मूल्य : ₹ 25
वर्ष : 2, अंक : 4
अप्रैल-जून 2020

तीरभुक्ति

RNI No. : DELMAI/2018/76698 ISSN : 2582-1660
अखिल भारतीय मिथिला संघक (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

संरक्षक
प्रभात झा
सांसद, राज्य सभा

संस्थापक
विजयचन्द्र झा
अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.

संपादक
विनीत कुमार झा उत्पल*
ऋतेश पाठक

संपादक मंडल
रौशन झा, भास्कर ज्योति, स्वाती शाकम्भरी, डॉ. प्रवीण कुमार झा, त्रिपुरारी ठाकुर

विशेष सहयोग
पंकज कुमार

प्रबंध संपादक
विद्यानंद ठाकुर

प्रबंधन मंडल
पं. कौशल झा, अंजनी कुमार झा, ओम चौधरी, शंकर कुमार झा

आवरण चित्र
विष्णुप्रिया (मुरलीगंज, मधेपुरा)

डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

स्थायी पता
म.नं.-435-ई, गली नं. 7, ई-ब्लॉक,
संगम विहार, नई दिल्ली-110062
फोन: सं.: 9911364316
प्र.: 9650461788, 9717539000
ईमेल: teerbhuktimaithili@gmail.com
कृपया पत्राचार लेल ईमेल कें प्राथमिकता देल जाए।

*प्रेस आ पोथी अधिनियमक अधीन

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

विषय सूची

- संपादकीय 5

यात्रा
- मैथिली रंगमंच : पटना-रांचीक अनुभव, समस्या आ भविष्य / *मिथिलेश कुमार मिश्र* 7

पड़ताल
- मैथिली रंगमंचक विकास मे अवरोधक तत्व / *कुमार गगन* 16

विस्तार
- मैथिली रंगमंच आ सिनेमा : अतीत आ संभावना / *भास्करानंद झा भास्कर* 19

विमर्श
- कला आ मिथिला के कला : विमर्श-भूमिका / *कुणाल* 25

व्यक्ति विशेष
- अरविन्द अक्कूक नाट्य-शिल्प / *प्रमोद कुमार सिंह* 28

नारी जगत
- मैथिली नाटकमे चित्रित नारीक सामाजिक स्थिति / *संतोषी कुमार* 31
- मैथिली रंगमंच आ महिला रंगकर्मीक सहभागिता / *सोनी नीलू झा* 35

आत्मकथ्य
- नचनियाक नालीबेली/रंगमंच यात्रा / *प्रियंका झा* 37

प्रसंगवश
- मिथिलाक प्रदर्श-कला परम्परा पमरिया: एक विश्लेषण / *डॉ. शंकरदेव झा* 39

प्रवासी मंच
- मैथिली नाटक आ कोलकाता / *लक्ष्मण झा 'सागर'* 45

गाम-घर
- ग्रामीण रंगमंच: भोर हेबाक आस / *मनीष झा 'बौआभाइ'* 48
- वीरान पड़ल अछि गामक रंगमंच / *नीलेश दीपक* 51

विशेष
- इंटरनेट आ मिथिलाक्षर, मैथिली भाषाक फॉण्ट, मिथिलाक्षरमे पोथी आ पत्रिका / *आशीष अनचिन्हार* 53

पत्रिकामे प्रकाशित आलेख आ रचनामे व्यक्त विचार आ दृष्टिकोण लेखक केर छनि। संपादक अथवा प्रकाशक कें ओहिसं सहमत होयब आवश्यक नञ अछि।

समीक्षा विधा उपेक्षित किएक

मैथिली भाषा एतेक पुरान भेला के बादी एकर साहित्य मे आलोचना-समालोचना आ समीक्षा विधाक विकास नहि भ सकल, एकर जिम्मेदार के? आइ साहित्य संरचना मे जतेक रचनात्मकता आ अनुभव के आवश्यकता होयत अछि, ओहि सं बेसी योग्यता तमाम मैथिली साहित्यकार के अछि, तकर बादी समीक्षा विधा कोनो सुखद स्थान नहि बना सकल अछि। एखन कविता खूब लिखल जा रहल अछि आ कवि सभ पुरस्कृत सेहो। मुदा कथा, उपन्यास, व्यंगक संग समीक्षा देखि के निराशा होयत अछि, जे एकर स्थिति कहिया बदलत। आजुक युवा मे मंच पर जेना आबय के धड़फड़ी अछि आ हथपकड़ा ब्राह्मणक नौत (कार्यक्रम शुरू भेला के बाद कोनो कवि कें देखहि कें कविता पढ़हि के लेल मंच पर बजाओल जायत अछि) जेना मंच पर कवि कविता पढ़ैत अछि आ दक्षिणा पाबैत अछि। एही स्थिति मे समीक्षाक स्तर की आ कोना होयत, सोचल जा सकैत अछि।

समीक्षा अंकक श्रृंखला मे 'तीरभुक्ति' के ई दोसर अंक अछि। पहिलुक अंक मे ओही पोथी सभक समीक्षा आयल छल जकर प्रकाशन दू-तीन वर्षक भीतर भेल छल मुदा दोसर अंक मे ओहनी पोथी सभक समीक्षा भेटत जे पुरान अछि आ पढ़ल जा रहल अछि। दुनू अंक मे पचास सं बेसी पोथी के समीक्षा प्रकाशित भेल जाहि मे शोध प्रबंध, यात्रा वृतांत, ग्राम गाथा, उपन्यास कथा संग्रह महाकाव्य, संस्मरण, कविता संग्रह, बाल साहित्य, निबंध संग्रह, व्यंग्य सहित तमाम विधा के पोथी छल। दू टा समीक्षा अंक के प्रकाशन मे बड़ रास अनुभव भेल, मुदा लागैत अछि ओ सपना दिवास्वप्न रहि गेल।

– **सानु सागर**, हटियागाछी, सहरसा

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता - 8

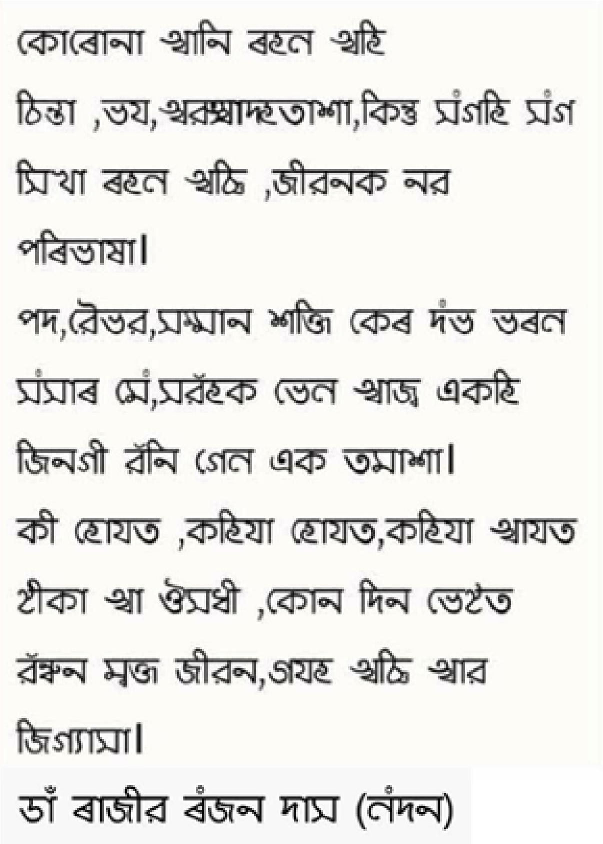

मिथिलाक्षर चिन्हु आ ईनाम पाबु

अखिल भारतीय मिथिला संघ समस्त मैथिल संस्कृति आ पहिचानक संरक्षण लेल सदिखन प्रयत्नशील अछि। एहि क्रममे नव प्रयास अछि मैथिलजन कें मिथिलाक्षर सं जोरबाक प्रयास।

एहि प्रयासमे तीरभुक्तिक प्रत्येक अंकमे किछु सामग्री मिथिलाक्षरमे प्रकाशित कएल जाएत। जकर देवनागरी लिप्यांतरण पाठकगण सं आमंत्रित रहत।

सर्वश्रेष्ठ लिप्यांतरण कय पठेनिहार पाठक कें अखिल भारतीय मिथिला संघ दिसि सं 500 टाका मूल्यक पुरस्कार प्रदान कएल जाएत।

लिप्यांतरण क' अपन प्रविष्टि teerbhuktimaithili@gmail.com पर ईमेल सं वा संपादकीय कार्यालय (20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001) पर डाक सं पठाओल जा सकैछ।

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता (क्रमांक-6 केर विजेता)

विजेता : ममता ठाकुर द्वारा नागेंद्र ठाकुर, बी 36/डी1, मंगलम अपार्टमेंट, शालीमार गार्डन एक्सटेंसन 2, गाज़ियाबाद, 201005

सराहनीय प्रयास : चन्द्रशेखर झा (मोतिहारी), दिव्या चौधरी (दरभंगा), नन्दिता शर्मा, कुमुद झा, किरण लता झा

संपादकीय

नाटकक लिखित इतिहासक आरंभ भरतमुनि के नाट्य-शास्त्र सं मानल जायत अछि। एही कथाक अनुसार नाटकक निर्माण भेला के बाद अभिनय प्रश्न के सुलझाबय लेल भगवान ब्रह्मा भरतमुनिसं आग्रह केलनि। पहिलुक बेर 'असुरपराजय' नामक नाटक रंगमंच पर खेलल गेल। मुदा असुरक विरोध के देखैत 'रंगशाला' के निर्माण कयल गेल, 'अमृत मंथन' नामक नाटक के मंचन भेल। बाद में शिवजी के उपस्थिति मे 'त्रिपुरदाह' नाटक खेलल गेल। तहिया सं शुरू भेल नाटक कर्म वैदिक काल, रामायण काल, महाभारत काल, आदि काल सं आबैत-आबैत आधुनिक काल मे समसामयिक विषय पर नाटक खेलल जा रहल अछि।

मिथिला त' पुरातनकाल सं संस्कृतक केंद्र छल। सन 1300 के पूर्वार्ध मे ज्योतिरीश्वर आ उमापति मिश्र संस्कृत के प्रकांड विद्वान भेला जे संस्कृतक संग तत्कालीन स्थानीय भाषा मतलब 'मैथिली' संग काव्य रचना केलनि। ज्योतिरीश्वर अपन 'धूर्तसमागम-प्रहसन' (सन 1324) और उमापति मिश्र अपन 'पारिजात हरण' (सन 1325) सन रचना लोकक आगू आनलाह। 'धूर्तसमागम-प्रहसन' मे ते मैथिली भाषा मे 12 टा गीत अछि। कीर्तनियां शैली में लिखल 'पारिजात हरण' संस्कृत आ मैथिलीक मिश्रित शैलीक प्रमाण अछि।

हिन्दी नाटक केर प्रकांड विद्वान डॉ. दशरथ ओझा लिखैत छथि, 'विक्रम केर चौदहम शताब्दी मे संस्कृत नाटकमे सबसं पहिने मैथिली गीत प्रवेश केलक आ ओ गीत एतेक आकर्षक प्रतीत भेल जे संस्कृत नाटक मे मैथिली भाषा के उत्तरोतर स्थान भेटय लागल। परिणाम ई भेल जे कालांतरमे मैथिली संपूर्ण नाटक मे व्याप्त भ' गेल। संस्कृतक काज नाटकक ढांचा प्रस्तुत करबाक रहि गेल छल। पंद्रहम शताब्दीक अंत होयत-होयत संस्कृत शैली संपूर्ण मैथिली नाटक मे विरचित हुए लागल। ई मैथिली नाटक राजसभा मे आश्रय पाबि के नेपाल मे सेहो विकसित हुए लागल।'

मैथिली साहित्यमे आधुनिक नाटकक प्रारंभ कविवर जीवन झाक नाटक 'सुन्दर संयोग' (सन 1904) सं मानल जायत अछि। डॉ. कमल मोहन चुन्नू कहैत छथि जे 'समाजक आधुनिकता आ नाटकक आधुनिकता दुनू दू बात अछि। नाटकक आधुनिकता सं अथवा रंगमंचक आधुनिकता सं अनभिज्ञ लोक द्वारा एहन अपरिपक्व-अतार्किक स्थापना देल गेल होयत।' मुदा ओ आधुनिक नाटकक प्रारंभ के लेल कोनो नाटकक नाम अपन पोथी 'निनाद' के भूमिका मे नै लैत छथि। हां, छह दशकक काल खंड की बादक नाटक 'पाथेय' के चर्चा अवश्य करैत छथि, जिनकर लेखक गुणनाथ झा, कोलकाता संग तकर बाद लिखल नाटक के चर्चा करैत छथि, मुदा एही नाटक के ओ एक कालखंडी नाटकक विशेषण दैत नव प्रयोग आ नव शिल्प-शैली कहैत छथि।

मिथिला केर गाम-गाम मे पसरल रंगकर्म पिछला पांच दशक सं शहर केंद्रित भ' गेल अछि। कोलकाता, पटना, रांची, जमशेदपुर, दरभंगा, दिल्ली सन शहर मे मैथिली नाटक के धूम रहल मुदा आइ ग्रामीण रंगमंच खत्म भ' गेल। मिथिला के गाम मे हिन्दी नाटक के बोलबाला भ' गेल। एहि दिशामे युवा रंगकर्मी नीलेश दीपक आ मनीष जा 'बौआभाइ' केर आलेख एकबेर सोचबाक लेल विवश करत जे कोना शहर सं गाम दिस मैथिली नाटक जाय। कोलकाता के नाटकक परिदृश्य पर लक्ष्मण झा 'सागर', पटना-रांची पर मिथिलेश कुमार मिश्र, पमरिया नाच पर शंकरदेव झाक आलेख मैथिली शोधकर्ता के सोचबाक लेल विवश करत। भरतमुनि काल मे स्त्री-पात्रक आभाव में ब्रह्मा अप्सरा के रचना केने छलाह। आधुनिक काल मे मैथिली नाटक मे स्त्री-पात्र के कमी साफ़-साफ़ देखा पड़ रहल अछि। सोनू नीलू झाक आलेख गहनता सं स्त्री-पात्र के अध्ययन केने अछि। एकल नाटक करय वाली मुंबई केर विभारानी अपन दम पर अपन पहचान कायम केने छथि, मुदा हुनकर लिखल नाटक आ हुनकर अभिनीत नाटक पर व्यापक अध्ययन करय के खगसा अछि।

एहि अंक मे मैथिली रंगमंचक विकास के अवरोधक तत्व पर वरिष्ठ नाटककार कुमार गगन, मैथिली रंगमंच आ सिनेमा पर भास्करानंद झा भास्कर, अरविन्द अक्कूक नाटक पर प्रमोद कुमार सिंह, मैथिली नाटक मे चित्रित नारी के सामाजिक स्थिति पर संतोषी कुमार के अलावा प्रसिद्ध नाटककार कुणाल जी के आलेख अछि। युवा गजलकार आशीष अनचिन्हार के आलेख 'इंटरनेट आ मिथिलाक्षर, मैथिली भाषा के फॉण्ट, मिथिलाक्षर मे पोथी आ पत्रिका' लोकक लेल आइना के काज करत आ जानकारी बढ़ाओत जे मिथिलाक्षर संग फॉण्ट के लेल जतेक दावेदारी आजुक काल मे कयल जा रहल अछि, ओ कतेक सच आ कतेक झूठ अछि।

संपूर्ण समाज कोरोनासं पीड़ित भ' रहल अछि आ एकर की निदान होयत, कियो नै जानैत अछि। कोरोना के कारण एहि अंक मे देरी भेल, ताहि लेल क्षमाप्रार्थी छी। कोरोना काल मे मैथिली के प्रसिद्ध गीतकार प्रदीप, मैथिलीक प्रसिद्ध नाटककार दयानाथ झा, कवि कैलाश झा 'किंकर' आ राज, हिन्दी रंगमंच आ हिन्दी सिनेमा के मैथिल कलाकार सुशांत सिंह राजपूत संग कतेक सर-संबंधी हमरा सभ के बीच सं विदा भ' गेलाह, जेकर क्षतिपूर्ति संभव नै अछि। ई धराधाम पर आयब आ जायब ते लागल रहत। पृथ्वी एहन रंगमंच पर अयला के बाद एतौका नाटक मे सभ के अपन-अपन प्रस्तुति दिये पड़त, निजी आ सार्वजनिक जिनगी दुनू में। मुदा केकर कतेक दृश्य मे प्रस्तुति अछि, से कियो नै जानैत अछि। रचनात्मकता आ कलात्मकता सदैव चलैत रहबाक चाही। कोनो भी लोक के हुनकर रचना कर्म जीवित राखत, इहलोकमे सेहो आ परलोकमे सेहो।

– विनीत उत्पल

संपादकीय नीति

- 'तीरभुक्ति' प्रत्येक तेसर मासक अंतिम सप्ताहमे प्रकाशित होइछ।
- तीरभुक्तिमे मुख्यत: शोध आलेख प्रकाशित प्रकाशित होइत अछि। संगहि किछु विशिष्ट कॉलम सेहो प्रकाशित होइत अछि।
- तीरभुक्ति केर प्रत्येक अंक एक विशेष थीम पर केंद्रित होइत अछि। एकर सूचना पत्रिकामे आ समाजिक माध्यम सबमे देल जाइछ। लेखकगण सं निवेदन जे थीमहि केर संगत विषय पर शोध आलेख पठाबी। थीम सं भिन्न आलेख यथायोग्य समय अयला पर प्रकाशित होयत।
- तीरभुक्ति Blind Peer Review पद्धति केर शोध पत्रिका अछि। सम्पादक मण्डल आ समीक्षक केर सहमति केर बादहि आलेख प्रकाशित कयल जाइछ।
- प्रत्येक शोध आलेखमे सन्दर्भक स्पष्ट उल्लेख आवश्यक अछि। एहि लेल APA 6जी Edition सन्दर्भ शैलीक प्रयोग कयल जाए।
- शोध आलेखक आरंभमे शोध सारांश (अधिकतम 100 शब्द) आ अंतमे शोध निष्कर्ष लिखब अनिवार्य अछि। सम्पूर्ण आलेख 2000-2500 शब्दक सीमामे हेबाक चाही।
- **हम किएक लिखैत छी** कॉलम आत्माभिव्यक्ति केर कॉलम अछि। एहि कॉलममे युवा रचनाकार लोकनिकें प्राथमिकता देल जाइछ।
- तीरभुक्ति पूर्णत: मैथिली पत्रिका अछि। आन भाषामे लिखल आलेख एतय स्वीकार नहि होइत अछि। लेखक स्वयं एकर मैथिली अनुवाद करा पठा सकैत छथि।
- प्रत्येक आलेखक संग लेखकक उद्घोषणा अनिवार्य अछि, जाहिमे लेख मौलिक आ अप्रकाशित होयबाक सूचना होय। संगहि आलेख कतहु आओर विचाराधीन नहि होय।
- फेसबुक वा सोशल मीडियामे कतहु आन ठाम प्रकाशित आलेख सेहो स्वीकार नहि होयत। लेखकलोकनि सं आग्रह जे एहन आलेख पठाबी।
- कोनो तरहक तथ्यात्मक त्रुटिक लेल लेखक स्वयं उत्तरदायी हेताह। उद्घोषणाक स्वरूप सम्पादकीय टीम स प्राप्त कयल जा सकैछ।
- तीरभुक्ति त्रैमासिक पत्रिका अछि। ताहिसं आलेख प्राप्तिक बाद प्रकाशन धरि 3 सं 6 मासक समय लागि सकैत अछि। एहि अवधिमे आलेख अन्यत्र कतहु प्रकाशनार्थध विचारार्थ नहि पठाओल जाए। यदि एहन बेगरता होय त सम्पादक कें सूचित क आलेख वापिस लेल जा सकैछ।
- तीरभुक्ति मे प्रकाशनार्थ सभटा रचना teerbhuktimaithili @gmail.com पर पठाओल जाए। रचना कृतिदेव 010 अथवा वाकमैन चाणक्या फॉन्ट मे 14 फॉन्ट साइज़ मे टाइप हेबाक चाही। आलेख एमएस वर्ड आ पीडीएफ दुनु रूपमे पठाओल जाए।
- प्रकाशित भेलाक बाद पत्रिका लेखक लोकनि आ नियमित सदस्य लोकनिकें डाक सं पठाओल जाइछ। सदस्यता विवरण सभ अंक मे प्रकाशित होइत अछि।
- जे नियमित सदस्य नहि छथि, ओ पत्रिका प्राप्ति लेल तीरभुक्ति कार्यालयमे अथवा पत्रिकामे प्रकाशित प्राप्ति स्थल सब पर सम्पर्क क सकैत छथि। ■

शोध पत्र जमा करबाक लेल दिशा-निर्देश

- शोध-पत्र एमएस वर्डमे मंगल वा कृतिदेव फॉण्टमे 14 पॉइंट साइजमे टंकित करायके ई-मेल करू।
- शोध-पत्र लिखैत काल सन्दर्भक स्पष्ट उल्लेख करू। पुस्तकक सन्दर्भ, पत्र-पत्रिकाक सन्दर्भ, प्रकाशन वर्ष आ संस्करणक अंकित हैब अनिवार्य अछि। सन्दर्भक लेल ए.पी.ए.-छठम शैली (A PA 6th Edition) के उपयोग करब अनिवार्य अछि।
- शोधपत्र पूर्ण रूपेण मौलिक हेबाक चाही, जेकर घोषणा-पत्र संलग्न हेबाक चाही, नहि त' शोध-पत्र पर विचार नहि कयल जायत।
- शोध-पत्रक प्रकाशन संपादक-मंडल पर निर्भर अछि। संपादक-मंडल के संतुष्ट हेबाक बादे शोध-पत्र प्रकाशित कयल जायत।
- शोध-पत्रक आरंभमे शोध-सारांश (बेसी सं बेसी 100 शब्द) आ अंतमे निष्कर्ष अवश्य लिखू।
- पोथी-समीक्षाक लेल संपादकक लग कार्यालय कें पता पर पठाबी।

मैथिली रंगमंच : पटना-रांचीक अनुभव, समस्या आ भविष्य

✍ मिथिलेश कुमार मिश्र

लेखक संप्रति झारखंड विधान सभा (रांची) मे संयुक्त सचिव छथि। झारखंड विधान सभाक त्रैमासिक पत्रिका 'उड़ान' केर संपादक सेहो छथि। झारखंड विधान सभाक विधायी शोध संदर्भ एवं प्रशिक्षण कोषांगक प्रभारी। संसदीय विषयक राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय सेमिनार आदि मे संसाधक (Resource Person) के रूप मे सम्मिलित।

सांस्कृतिक गतिविधि : 1983 सं रंगमंच, आकाशवाणी, पटना सं जुड़ाव। आकाशवाणी पटनाक आकस्मिक समाचार वाचक, कम्पीयर, नाटक कलाकार, वार्ताकार आदि दूरदर्शन पटना सं 1994 सं जुड़ाव। मिथिला मखान सिनेमा मे अभिनय। बलचनमा, दबंग चुनरिया आदि धारावाहिक मे अभिनय। चेतना समिति, भंगिमा, झारखंड मिथिला मंच आदिक सक्रिय सदस्य। शैलबाला पुरस्कार, बिहार कलाश्री पुरस्कार प्राप्त।

महान दार्शनिक प्लूटो अपन पुस्तक रिपब्लिक मे लिखने छथि, जे लोकतंत्र कें सभ सं पैघ खतरा भीतर सं अछि। लोकतंत्र अपन आंतरिक संक्रमण सं पतित होइत अछि। वर्तमान मे मैथिली रंगमंचक समक्ष जे आसन्न खतरा अछि, से आंतरिक आ वाह्य दुनू। बाहरी खतरा सं त' मुठभेड़ संभव मुदा आंतरिक संक्रमण कोना दूर होइत विस्तारपूर्वक एहि पर विचार करवा लेल आवश्यक जे नाटक आ रंगमंचक पृष्ठभूमि मे जा क' अन्वेषण करी, तदनुसार वर्तमान धरिक यात्रा तय करी।

पटनाक गतिशील मंच

मैथिली रंगमंच कें स्थायी स्वरूप देबा मे जं कोनो संस्था अगुआ छल त' ओ छल 'चेतना समिति' पटना, जे वर्ष 1974 मे सुधांशु शेखर चौधरीक 'भफाईत चाहक जिनगी' संग अपन रंगयत्रा आरंभ अएलक से आइयो धरि ठमकल नहि अछि। प्रत्येक वर्ष विद्यापति पर्व समारोहक अवसर पर एकटा मौलिक नाटक लिख क' ओकर मंचन करबाक परम्परा रहल अछि, पछाति चेतना समिति ओकरा छपबितो अछि। प्रत्येक वर्ष सर्वश्रेष्ठ अभिनेता कें 'शैलबाला पुरस्कार' सं सम्मानित कएल जाइछ, जकर राशि अत्यल्प रहितो ओ नोबेल पुरस्कार जकां लोकप्रिय पुरस्कार अछि। विगत दू बरख सं चेतना समिति नाट्य सप्ताह सेहो आयोजित क' रहल अछि, जे रंगमंच कें जीवित रखबाक दिशा मे मजगूत डेग।

एहि क्रम मे 'अरिपन', पटनाक नामोल्लेख आवश्यक। 1981-82 मे 'बेचारा भगवान' सं अपन उपस्थिति दर्ज कएनिहार अरिपन मंत्रेश्वर झा, आइएएस के नेतृत्व मे 1984-85 सं कएक बरख ध रि अन्तरराष्ट्रीय मैथिली नाट्य प्रतियोगिता आयोजित करैत रहल। जाहि मे पटना, कलकत्ता, दिल्ली, बेगूसराय, दरभंगा, मधुबनीक अतिरिक्त विराटनगर आ काठमाण्डू के नाट्यदल सेहो सम्मिलित होइत छल। नि:संदेह ओ मैथिली रंगमंचक लोकप्रियताक शिखर काल मानल जा सकैछ। एहि संस्था मे जतक अवदान कलाकारक छलन्हि, ताहि सं सए गुणा बेशी मंत्रेश्वर झा, आईएएस, जयशंकर दास, आईएएस आ गजेन्द्र नारायण चौधरी, पत्रकार (संपादक, दी इंडियन नेशन, पटना) केर। जे लोकनि अर्थ आ पब्लिसिटी के अभाव नहि होमए देलखिन।

पटनाक रंगमंच पर 1983 मे आएल 'नवांगन' अपन बरखे दिनुका रंगयात्राक कालखण्ड मे

"बालोहं जगदानदो न मे बाला सरस्वती,
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्रयम।।"

जकां अपन उपस्थिति दर्ज कए विलीन भ' गेल, ओ लगभग 11 गोट नाटक एहि अवधि मे कएलक।

पटनाक मैथिली रंगमंच मे सभ सं बेशी सक्रियता आन बला संस्था सिद्ध भेल 'भंगिमा', जे 1984 क भदवारि मास मे 'ओकरा अंगनाक बारहमासा' संग अपन रंगयात्रा आरंभ कएलक आ एखन धरिक 36 बरखक अवस्था मे सभटा मिला क' 180 टा नाटकक मंचन क' चुकल अछि, औसतन 5 प्रतिवर्ष। ई कीर्तिमान संभवत: आन कोनो संस्था लग नहि। संगहि एहि

संपर्क *: संयुक्त सचिव, झारखण्ड विधान सभा, रांची, मो. : 9431883026, 8210144552, ईमेल : mithileshkumarmishra@gmail.com*

अवधि मे 200 के लकधक मे कलाकार, निर्देशक, तकनीकी विशेषज्ञ, गामक, संगीतज्ञ, नर्तक, नृत्यांगना एहि संस्था सं जुड़लाह। राष्ट्रीय स्तर पर चयनित रूक्मिणी हरण (संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित), केर मंचन दिनांक 23-1-1991 कें शिविर मंच कोलकाता आ दिनांक 25-1-1991 कें रवीन्द्र मंच, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय कोलकाता मे भेल। कुणाल निर्देशित एहि नाटक कें ई गौरव प्राप्त भेलैक, जे पहिल खेप कोनो मैथिली नाटक संगीत नाटकक अकादमी, दिल्ली द्वारा चयनित, मंचित आ प्रशंसित भेल। पछाति भंगिमा कतेको नाटक राष्ट्रीय फलक पर मंचित कए प्रशंसित भेल। भंगिमा संस्थाक सदस्य होएबाक प्रथम शर्त जे ओ रंगकर्मी होइथ आ नाटक करथि।

पटना मे 'कला समिति' आ 'आंगन' सेहो यथेष्ट मैथिली नाटक कए अपन मजगूत उपस्थिति अंकित करौलक, मुदा अर्थ आ कलाकारक अभाव मे कला समिति मे एकटा युवा कलाकार निर्देशक, तकनीकी पक्षकार छलाह आ अरिपनक समारोह मे पुरस्कार जीतबाक सभ सं केने क्षमता ओहि संस्था मे छलैक। ओतहि आंगन संस्था मे अनुभवी, उत्साही आ प्रतिभासम्पन्न उर्जावान कलाकारक समावेश छल, मुदा मुरुकवा जकां किछुए दिनक रंगयात्राक इतिहास।

1983 सं जे हमर रंगयात्रा आरंभ भेल से चेतना समिति, पटनाक विद्यापति पर्व समारोह अवसर पर मंचित नाटक होइत 1984 मे भंगिमा के प्रवेशक संग रंगकर्मक प्रति भूख आ पिपासा बढ़ा देलक। 1983 सं 2004 धरिक पटना प्रवासक मध्य 50 गोट सं बेशी मैथिली आ हिन्दी नाटक मे अभिनय करबाक अवसर भेटल। नाटकक भूत 1983-84 मे एहन चढ़ल छल, जे एकहि संग तीन शिफ्ट मे तीन फराक-फराक नाटकक रिहर्सल आ मंचन सेहो कएल। एहि अवधि मे चेतना समितिक शैलबाला पुरस्कार संग, बिहार कलाश्री पुरस्कार, अखिल भारतीय असैनिक सचिवालयक अन्तरराष्ट्रीय नाट्य प्रतियोगिता, 2003 मे 'सिकंदर पोरस' नाटक मे अभिनय लेल उत्कृष्ट रंगकर्मी पुरस्कार, जवाहरलाल नेहरू युवा रंगकर्मी पुरस्कार आदि भेटल।

सरकारी सेवा मे रहबक कारणें 1 जनवरी, 2005 कें पटना सं रांची आबि एतहि डोली सोपी ल' क' बसि गेलहुं। मोन मे नाटकक उत्कंठा आ रंगकर्मीक जीजीविसा एखनहुं छल, मुदा अफसोस...।

रांची मे रंगमंचक स्थिति

2005 मे रांची अयबा पर हमर नाट्य गतिविधि अत्यंत संकुचित भ' गेल। एतय धुर्वा आ अशोक नगर मे दू खेप जॉब भेकेंसी करबाक अवसर भेटल। 2005 सं पूर्व मैकॉन, रांचीमे बकलेल मंचित गेल छल। वर्ष 2010 मे झारखण्ड मैथिली मंच, रांची द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व समारोह मे श्री कुमार मनीष अरविन्द, आईएफएस केर निर्देशन मे नाटक अन्हेर नगरीक मंचन भेल, जाहि मे रांचीक लगभग सभटा नीक कलाकार सम्मिलित भेलाह। संतोष झा, प्रेमचन्द्र झा, उत्तम चौधरी, गिरीश सत्यम, कृष्ण मोहन झा, मोहन झा, सुकुमार झा आदि कलाकार अभिनय कएलनि। नाटक अत्यन्त सफल रहल। गोवर्धन दासक भूमिका करबाक सौभाग्य हमरा प्राप्त भेल। ओना पटनाक भारतीय नृत्य कला मंदिर मे प्रबोध साहित्य सम्मान वितरणक प्रथम कार्यक्रम 2004 मे सेहो अन्हेर नगरीक मंचनक अवसर प्राप्त भेल छल। संगहि दरभंगा मे सेहो ई नाटक मंचित भेल।

पटना मे 'कला समिति' आ 'आंगन' सेहो यथेष्ट मैथिली नाटक कए अपन मजगूत उपस्थिति अंकित करौलक, मुदा अर्थ आ कलाकारक अभाव मे कला समिति मे एकटा युवा कलाकार निर्देशक, तकनीकी पक्षकार छलाह आ अरिपनक समारोह मे पुरस्कार जीतबाक सभ सं केने क्षमता ओहि संस्था मे छलैक।

अस्तु अन्हेर नगरीक संग रांचीक दर्शक मे एकटा नव उत्साहक सृजन भेल हरमू मैदानक मुक्ताकाश मंच पर 6-7 हजार दर्शकक सोझां पहिल खेप कोनो नाटक भेल छलैक, मुदा अगिले बरख ग्रहण लागि गेलैक।

दिल्लीक चर्चित संस्था मैलोरंग के आमंत्रित कएल गेलैक नाटकक मंचन लेल। प्रकाश झाक मैलोरंग के संबंध मे एतए किछु अंकित करब परमावश्यक। वर्ष 2005 मे प्रकाश झाक नेतृत्व मे किछु उत्साही नवतुरिया कलाकारक संग मैलोरंग संस्थाक गठन कएल गेल, जे दिल्ली सनक स्थान पर सेहो मैथिली रंगमंच लेल पूर्ण समर्पित संस्था अछि। श्रीराम सेंटर आ एनएसडी के सभागार मे निरंतर मैथिली नाटक क' हजारो दर्शक वर्ग तैयार करबा मे मैलोरंगक अवदान कें बिसरल नहि जा सकैछ। एहि अवधि मे काठक लोक, ओरिजिनल काम, मुक्तिपर्व (अनुवाद), बड़ा नटकिया कौन (अनुवाद), जल डमरू बाजे, कोसी सन बेदर्दी जग मे कोई नई, शेक्सपीयर के रोमियो जूलियट (अनुवाद) सनक दर्जनो नाटक क' क' 15 वर्ष मे मैलोरंग संपूर्ण भारतवर्ष मे मजगूत उपस्थिति दर्ज करबा मे सक्षम रहल अछि।

प्रकाश झा अत्यन्त समर्पित निर्देशक आ कलाकार छथि, नाटक मे नव-नव प्रयोग करबा मे सेहो हुनका कोनो परहेज नहि, आ से नाटक के वैशिष्ट्य प्रदान करैत अछि। दिल्ली मे प्राय: सभागार मे मंचन होइत अछि आ ओतए रंगकर्म कें तकनीकी रूप सं बूझए बला दर्शकक बाहुल्य रहैत अछि, तें प्रयोगधर्मिता सफल मानल जा सकैछ। मुदा रांचीक मैथिली रंगमंच ताहू मे मुक्ताकाश आ जकर दर्शकक परिचय मात्र भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक अन्हेर नगरीक मैथिली अनुवाद देखबा धरि सीमित होइ, जाहि मे आरम्भ सं अंत धरि हास्येक माध्यम सं सभटा गंभीर गप्प परसल जाइछ। संगहि स्थानीय लोकप्रिय कलाकार लोकनिक मंच पर उपस्थिति ओकरा आर माधुर्य प्रदान कएने छल। तेहन दर्शकक समक्ष 'बड़ा नटकिया कौन' केर मैथिली अनुवाद 'पैघ नटकिया' के

प्रदर्शित कएल गेल। निर्देशक प्रकाश झाक प्रयोगधर्मिता ओतए हठधर्मिताक सीमा नांघैत प्रतीत भेल, परिणाम दर्शकक मध्य घोर निराशा। नाटकक कथानक भाव आ निर्देशन ककरो मगज मे नहि सन्हिया सकलै। अत्यन्त दुःखक संग अंकित करए पड़ि रहल अछि, जे ने त' हमहूं नाटक बूझि सकलियै आ ने हमरा नीके लगल। ओना संस्थाक सक्रिय कार्यकर्ता होएबाक कारणें हमर आन व्यस्तता सेहो छल, मुदा अपन बुद्धि-विवेक पर हमरा पहिल खेप प्रश्नचिन्ह लगैत बुझा गेल। दर्शकक घोर विरोध आ हो हल्ला दुआरे बाध्य भ' क' नाटक बीचहि मे रोकए पड़लैक। हमरा जनतबे ई पहिल घटना छल जे नाटक कें विरोधक कारणें पूरा होमए सं पहिने रोकल गेल होअए। परिणाम हमरा सभक समक्ष अछि, ओकर बाद हमरा लोकनि मैथिली नाटक नहि क' सकलहुं।

ओना हिन्दी नाटक हम करैत रहलहुं अछि आ 2015 मे झारखण्ड विधान सभाक स्थापना दिवस के अवसर पर जाहि मंच पर कवि सम्मेलन मे सुरेन्द्र शर्मा, गजेन्द्र सोलंकी, दिनेश बावड़ा, डॉ. सीता सागर, अनिल चौबे, सनक राष्ट्रीय स्तरक कवि लोकनि अपन काव्य-पाठ कएलनि। संगहि श्यामानन्द झा, मोनिका मुण्डू, संथाली नाग, सुरेन्द्र यादव आदि गीत-गजल प्रस्तुत कएलनि, ओहि प्रतिष्ठित मंच सं 'सैयां भए कोतवाल' नाटकक प्रस्तुति भेल, जाहि मे राजाक भूमिका करबाक अवसर भेटल। दर्शक वृन्द मे छलाह मा. मुख्यमंत्री, मा. विधानसभा अध्यक्ष, मा. मंत्रीगण, मा. सदस्यगण, राज्य सरकार आ विधान सभाक वरिष्ठ पदाधिकारी आ अन्य कर्मीक संगे गणमान्य आगंतुक, उपस्थिति 2000 सं बेशी छल। मुदा संतोष नहि। जे संतोष मैथिली नाटक क' क' भेटैत रहल अछि, से हिन्दी मे कथमपि नहि।

रांची मे संतोष झा सनक विलक्षण प्रतिभासम्पन्न पुरुष कलाकार संग सरोज झा सनक कुशल अभिनेत्रीक अतिरिक्त रामकुमार झा, प्रेमचन्द्र झा, उदय झा, कुमार मनीष अरविन्द, बुबुजी, सतीश झा, डॉ. कृष्ण मोहन झा मोहन, निशा झा सनक कलाकार उपलब्ध रहितहुं मैथिली नाटक नहि होयब चिन्ताक विषय अछि। सरोज झा हिन्दी नाटकक सर्वाधिक सफल अभिनेत्री छथि आ दूरदर्शनक समाचार वाचिका आ आकाशवाणीक कलाकार छथि।

रांचीक मैथिली संस्था सभक कर्ता-धर्ता पदाधिकारी लोकनिक मान्यता छैन्हि जे नाटक मात्र सभागारक वस्तु थिक ओ मुक्ताकाश मे नहि भ' सकैए। हमर मान्यता अछि जे चेतना समिति मे 1974 सं अद्यावधि प्रत्येक वर्ष मुक्ताकाशहि मे नाटकक मंचन होइत रहल अछि आ सब सं बेशी भीड़ नाटके काल मे अंतिम दिन जुटैए। रांची मे जे नाटक होअए तं

रांची मे संतोष झा सनक विलक्षण प्रतिभासम्पन्न पुरुष कलाकार संग सरोज झा सनक कुशल अभिनेत्रीक अतिरिक्त रामकुमार झा, प्रेमचन्द्र झा, उदय झा, कुमार मनीष अरविन्द, बुबुजी, सतीश झा, डॉ. कृष्ण मोहन झा मोहन, निशा झा सनक कलाकार उपलब्ध रहितहुं मैथिली नाटक नहि होयब चिन्ताक विषय अछि।

हम अपना कें परम सौभाग्यशाली बूझब आ नहि तं चारि बरख बाद मात्र मैथिली नाटक करबा लेल पटनाक बाट ध' लेब।

मिथिला मे एक जमाना मे शेरपुरक उमाकांत थियेटर काफी जगजियार रहए आ ओहि मे हमर मामा राम खेलावन झा नियमित कलाकार छलाह। हुनका द्वारा कएल गेल हरिश्चन्द्र, परशुराम आ सुल्ताना डाकू के भूमिकाक चर्चा आइयो बूढ़-पुराण सभ करैत छथि। हमर परिवार मे हमरा संग हमर पत्नी सुनीता मिश्र 'मिथिला मखान' सिनेमा मे अभिनय कएने छथि तं ज्येष्ठ पुत्र गिरीश सत्यम्, कनिष्ठ पुत्र शिवम् कुमार आ पुत्री पूजाक संग-संग अनुज अखिलेश मिश्र पटना मे दर्जनो नाटक मे अभिनय कएलनि। तात्पर्य ई जे हमर सम्पूर्ण परिवार रंगकर्म लेल समर्पित रहल अछि। तें किछु दर्द, आक्रोश अछि आ किछु लिखबाक धृष्टता सेहो कएल।

मैथिली रंगमंचक मूल समस्या

वर्तमान मे रंगमंचक मूल समस्या अछि, जे ई अखैन धरि कोनो व्यावसायिक स्वरूप नहि ग्रहण क' सकल अछि। रंगकर्मी लोकनिक रोटीक समस्या मात्र रंगकर्म सं दूर नहि भ' सकैछ। सभ कलाकार रोटीक जोगाड़ सं निवृत्त भेलाक बादे बाचल खुचल समय रंगकर्म कें द' पबैत छथि। भूमंडलीकरणक एहि दौर मे युवा वर्ग अपन कैरियरक प्रति ततेक ने बेशी संवेदनशील आ दुविधाक स्थिति मे छथि, जे रंगकर्म लेल समय देब बेस कठिनाह। रंगकर्म मात्र सिनेमा, अथवा टीवी के धारावाहिक या डॉक्यूमेंट्री आदि मे एकटा स्थान बनेबाक माध्यम टा रहि गेल अछि। प्रयोगधर्मिता, हठधर्मिताक सीमा धरि पहुंच गेल, जाहि सं नाटककार आ रंगकर्मी दुनू पक्ष कें साहित्यिकता सं अरुचि भेल जा रहल छनि। एकर कारण अछि सामान्य दर्शक आ उद्‌बुद्ध पाठकक बौद्धिक स्तर मे महान अन्तर (Forbidden Gap) सामान्य दर्शक मे साहित्य बोध क्षमता अति अल्प होइछ। नाटक आ रंगमंचक प्रति जन सहयोगक घोर अभाव अछि।

विगत 37 बरखक रंगमंचक अनुभवक आधार पर हम ई कहि सकैत छी, जे हम स्वयं अनुभव कएलहुं अछि जे रंगकर्मी रूप मे कखनहु परिवार, समाज मे ओ स्थान नहि भेटल, जे दूरदर्शन के धारावाहिक, विभिन्न चैनल मे धारावाहिक आ डॉक्यूमेंट्री सहित सिनेमा मे अभिनय क' क' भेटल। अथवा मंच संचालक रूप मे जे प्रतिष्ठा प्राप्त भेल, से रंगकर्मी रूप मे नहि, जखैन कि हम सदैव अपना कें मात्र रंगकर्मी मानैत रहलहुं अछि, शेष कार्य अंगी रूप मे। एहि क्रम मे एकटा भोगल यथार्थक चित्रण उचित बुझना जाइछ।

वर्ष 2018 मे 'आयुष्मान भारत' योजनाक प्रचार-प्रसार लेल भारत सरकारक संगीत एवं नाटक प्रभाग कें ई दायित्व देल

गेलैक, जे सम्पूर्ण राज्यक विभिन्न जिला के नाट्य दल मे सं तीन टा दल कें चयन कए ओकरा सं नाटकक माध्यमे प्रचार-प्रसार कराओल जाए। संयोगवश उप निदेशक, संगीत नाटक प्रभाग, रांची द्वारा ओहि चयन लेल हमरा निर्णायक बनाओल गेल। कार्यक्रमक मुख्य अतिथि छलाह स्वास्थ्य मंत्री आ आन विशिष्ट अतिथि मे विभागीय सचिव/प्रमंडलीय आयुक्त/उपायुक्त रांची। उप विकास आयुक्त, रांची/दूरदर्शन, रांचीक पूर्व केन्द्र निदेशक आदि।

विशेषज्ञ रूप मे अपन उद्बोधन लेल उद्घोषिका द्वारा हमरा मंच पर बजाओल गेल। आमंत्रणक क्रम मे आन गप्पक अतिरिक्त हमर परिचय राज्य सरकारक संयुक्त सचिव आ नाटकक निर्णायक रूप मे कराओल गेल।

अपन उद्बोधनक क्रम मे हम कहने रही जे एहिठाम उपस्थित होएबाक लेल हम गर्वक अनुभव क' रहल छी आ ओ एहि लेल नहि जे हम संयुक्त सचिव छी, अपितु मात्र एहि लेल जे हम विगत 37 वर्ष सं सक्रिय रूप सं रंगकर्म सं जुड़ल छी आ एखनहुं रंगकर्म लेल समर्पित छी।

कलाकारक अभाव, महिला कलाकारक घोर अभाव, स्थायी नाट्यागृहक अभाव आ रिहर्सल लेल स्थानक अभाव सेहो रंगमंचक समक्ष एकटा गंभीर चुनौती रूप मे मुंह बओने ठाढ़ अछि। भाड़ाक सभागार मे नाट्य मंचन लेल अनुकूल परिस्थिति उपलब्ध नहि रहैछ। उदाहरण लेल रांची विश्वविद्यालयक आर्यभट्ट सभागार जं नाटक लेल उपयुक्त अछि, तं ओकर एक दिनक भाड़ा 57 हजार टाका मात्र। शेष प्रकाश व्यवस्था सं ल' क' सभटा खर्च फराक। आड्रे हाऊस जं सस्त मे भेटियो जाएत तं बैसबाक क्षमता मात्र एक सय। आवाज तेना ने गुंजत जे किछु बुझबे नहि करबै। पटना मे प्रेमचन्द रंगशाला आ कालिदास रंगालय छोड़ि आन कोनो मे नाटक करबाक सामर्थ्य रंगकमर्मी कें भइए नहि सकैछ। पहिने चेतना समितिक विद्यापति भवन मैथिली नाटक लेल सस्त मे उपलब्ध होइत छल, मुदा आब ओ दिवा स्वप्न। एहना स्थिति मे श्रम आ धनक अपव्यय अपरिहार्य।

रंगमंचक पतनक कारक तत्व

साहित्यक विभिन्न विधा- उपन्यास, कथा, कविता, गीत, नृत्य, नाटक मध्य नाटके टा एकटा एहन विधा रहल अछि, जाहि मे साहित्यक विभिन्न विधाक समावेश अछि, तें नाटक कें सम्पूर्ण साहित्य मानबा मे हमरा कोनो संकोच नहि।

सम्पूर्ण भारतवर्ष मे विभिन्न मैथिली संस्था द्वारा गोटेक सए स्थान पर विद्यापति पर्व समारोह अथवा मिथिला महोत्सव किंवा जानकी महोत्सव, कोशी महोत्सव, दूर्गा पूजा, काली पूजा, सामा-चकेवा, छठि पूजा आदि-आदि नाम सं हजार सं ऊपर सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत अछि। एहि मे हम मात्र ओहने संस्था वा कार्यक्रमक उल्लेख करय जा रहल छी, जनिकर खर्चक बजट 5 लाख सं ऊपर कें होइत छैन्हि, ऊपरी सीमा निर्धारण नहि कएल जा रहल अछि। बहुतो ठाम जएबाक अवसर सेहो भेटल आ किछु पढ़ल, कहल-सुनल साक्ष्यक आधार पर हमरा ज्ञात भेल जे चेतना समिति, पटना, अरिपन, पटना, भंगिमा, पटनाक अलावा किछु दिल्ली, कलकत्ता आ दरभंगा, मधुबनीक मैथिली संस्था सभ कें अपवादस्वरूप छोड़ि दी तं अधिकांश मैथिली संस्था जे बड़का-बड़का खर्च बला सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करैत अछि, तकर कर्ता-धर्ता बहुत ज्ञानी, विद्वान वा साहित्यिक/सांस्कृतिक दृष्टि बला लोक नहि रहलाह अछि, तें मैथिलीक सांस्कृतिक कार्यक्रम मध्य कवि-सम्मेलन आ नाटकक स्थान न्यून भेल जा रहल अछि।

कलाकारक अभाव, महिला कलाकारक घोर अभाव, स्थायी नाट्यागृहक अभाव आ रिहर्सल लेल स्थानक अभाव सेहो रंगमंचक समक्ष एकटा गंभीर चुनौती रूप मे मुंह बओने ठाढ़ अछि। भाड़ाक सभागार मे नाट्य मंचन लेल अनुकूल परिस्थिति उपलब्ध नहि रहैछ।

आब हमरा लोकनि कें चायनिज फास्ट फूड के आदति लागि गेल अछि, तं सोचियो कोना सकैत छी, जे धानक बिया बाउग क' क' पुनः धनरोपनी की, कमठाऊन करी, जे इन्द्र भगवान संग नहि देलनि तं करीन वा दमकल सं पटौनी करी, धान काटि, छोपि, बोझ बान्हि खलिहान मे आनी। दाऊन करी पुनः ढेकी सं कुटाबी, ओसाबी, फटकी, कोठी मे ढाड़ी आ तखन अदहन मे द' क' मांड पसा भात परसी। एतेक प्रक्रियाक काज कोन जखन 2 मिनट मैगी अछि उपलब्ध। तहिना रंगमंच वा नाटक के मादें सोचबे किऐ करब, जखन फास्ट फूड जकां गवैया छथि तैयार। ओहो मे दुटा वर्ग अछि एकटा साधक संगीतज्ञ- एहन गवैया लोकनि जे संगीत साधना मे अपनाकें गला देलनि, साज पर पूर्ण नियंत्रण राखि विद्यापति गीत वा आन-आन तरहक भजन-गजल-लोकगीत पारम्परिक गीत आदि गबैत छथि, ताहि सं कला, साहित्य व संगीतक सदा-सर्वदा समृद्धिए होइत। मुदा दोसर दिस भोजपुरीक अनुगामिनी संगीतज्ञ- आइ भोजपुरीक नाम लैत देरी भिखारी ठाकुरक निर्देशित नाटक नहि मोन पड़ैत अछि, मोन पड़ैत अछि ट्रक ड्राइवरक गीत-संगीत। तहिना हमर मंच सब लोकगीतक नाम पर सांस्कृतिक प्रदूषण ाक मार्ग पकड़ि कतए जा रहल अछि, से सर्वथा विचार योग्य। आ एकर कारण छथि ओ संस्थाजीवी महान आयोजक लोकनि। संगहि हमर नवतूरक श्रोता आ दर्शक, जनिका हम एहने पाठ पढ़ा रहल छियैन्हि। कारण श्रोता लग मे जखन ऑप्शन दैबै आ ओ भ्रष्ट संगीत दिस उन्मुख होएए त' ओकर कोन दोष। हम ऑप्शन देबे किए केलिऐ?

वर्तमान श्रृंगारिक गीत सभ मे रस, अलंकार, गुण, छन्द, माधुर्यक कोनो टा स्थान नहि।

जतए विद्यापति नायिका वर्णन करैत कहैत छथि-

कनक कदली पर सिंह समारल
तापर मेरू समाने

मेरू ऊपर दुइ कमल फुलायल
नाल बिना रूचि पाई।
अथवा घोर श्रृंगारिक पद-
की कहब हे सखि रातुक रंग
सपनहुं सूतल कापुरुष संग
कांचुलि खोलि आलिंगन देल
मोहि जगाए आपु नीन गेल
हे बिहि-हे बिहि बड़ दुःख देल।
तकर स्थान आब ल' लेलक अछि

कानफाड़ू संगीतक मध्य रॉक शैली मे गाओल गेल फूहड़तम गीत। बहुतो गायक कहियो हारमोनियमक रीड छुनहूं नहि होएताह से भेला गबैया।

एकटा प्रश्न कतेको बरख सं मोन मे औनाईत अछि जे समूह कार्य सं एकल कार्य उत्तम कोना भ' सकैए? रंगमंच मे विभिन्न विधाक विशेषज्ञ लोकनिक समेकित प्रयास सं टीम वर्क सं एकटा प्रतिफल बहराइत अछि, जे सफल/असफल होएब ओकर श्रम, साध्य, वातावरण, परिस्थिति पर निर्भर करैछ।

यदि गबैया लोकनि सं पूछल जाए, जे मैथिली कार्यक्रम मे अहां आदर्श रूप मे माने फोकट मे अपन कार्यक्रम प्रस्तुत क' दिअं। हम मात्र यात्रा व्यय, भोजन, आवास, परिवहन, पाग, डोपटा के प्रबंध करब तं कै गोट गबैया तैयार हेताह। ई प्रश्न एखन धरि हम दर्जनो महानुभाव सं पूछलियैन्ह, उत्तर अछि शून्य। दोसर दिस कोन रंगकर्मी संस्था अहां सं अभ्यास खर्च, मंचनक व्यवस्था, यात्रा व्यय, आवासन, परिवहनक अतिरिक्त किछु नगद भुगतानक जिज्ञासा कएलक अछि, तं उत्तर पुनः शून्य भेटल। अर्थात आइयो जे रंगकर्म मे लागल छथि से सर्वथा मां मैथिली/मिथिलाक प्रति अनुराग रखैत छथि, याचना करब अभीष्ट नहि।

आब दोसर प्रश्न अबैए जे कि गबैया लोकनि अद्‌भुत प्रतिभासम्पन्न होइत छथि, तें हुनका लाखक-लाख टाका चाही आ रंगकर्मी सभ निठल्ला तें फोकटो मे महग।

उत्तर चाही हमरा संस्थाक कर्ता-धर्ता लोकनि सं जे कए गोट एहन गबैया छथि, जे गीत-संगीतक अतिरिक्त पढ़ि-लिखि क' यूपीएससी, स्टेट पीसीएस, आईआईटी, एआईआईएमएस, एनआईटी, नीट, आईआईएम, सीए/सीएस अथवा प्राध्यापक वा केन्द्र सरकार वा राज्य सरकार मे श्रेणी एक अथवा श्रेणी दू स्तर के पदाधिकारी छथि। की हुनका लोकनि कें पढ़ि-लिखिक' कोनो उच्च पद धारण करबाक लालसा नहि छैन्हि? हमरा उत्तर चाही, कारण हम एहि पर अन्वेषण क' रहल छी! सुविधा लेल हम संकेत क' दैत छी। सरोज कुमार मिश्र 1980 के दशक मे अद्‌भुत रूप सं अपन गायकीक बल पर उभरि क' सोझां अएलाह, पटनाक बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग सं जे आई एनआईटी अछि, मैकेनिकल इंजीनियरिंग मे स्नातक छलाह, मुदा दूर्भाग्य सं मानसिक असंतुलनक कारणे ओ आई विक्षिप्तावस्था

एकटा प्रश्न कतेको बरख सं मोन मे औनाईत अछि जे समूह कार्य सं एकल कार्य उत्तम कोना भ' सकैए? रंगमंच मे विभिन्न विधाक विशेषज्ञ लोकनिक समेकित प्रयास सं टीम वर्क सं एकटा प्रतिफल बहराइत अछि, जे सफल/असफल होएब ओकर श्रम, साध्य, वातावरण, परिस्थिति पर निर्भर करैछ।

मे छथि। कवि आ गायक सियाराम झा 'सरस' के अनुज 'रमेश' आरम्भ मे सरस-रमेश के जोड़ी रूप मे किछु दिन मंचक शोभा बढ़ौलनि, मुदा शीघ्रे सभ छोड़ि-छाड़ि पढ़ाई मे लागि गेलाह आ बिहार लोक सेवा आयोग सं उप समाहर्ता बनलाह। इहो हुनका रास नहि अएलनि आ आइ स्वतंत्र रूप सं साहित्य सेवा मे लागल छथि। हमर अनुज अखिलेश कुमार मिश्र 1983 सं 1988 धरि चेतना समितिक विद्यापति पर्व समारोह सहित, एमएलएसएम कॉलेज, दरभंगा, डोराण्डा आ धुर्वा रांची सहित अनेको मंच पर अपन गायकी अजमौलनि। महान गायक महेन्द्र जी (रविन्द्र महेन्द्र) क आशीर्वाद प्राप्त छलनि। मुदा 1988 मे इंटर करैत-करैत ओ गायकी छोड़ि पठन-पाठन मे लागि गेलाह आ आई बीपीएससी सं बिहार वित्त सेवाक उपायुक्त पद पर छथि। आर कोनो नाम हमरा ज्ञात नहि।

रंगकर्मीक गप्प करी तं यूपीएससी, स्टेट पीसीएस सहित आन-आन महत्वपूर्ण सेवा मे प्राध्यापक, बैंक अधिकारी, अभियंता, केन्द्र/राज्य सरकारक उच्च पदस्थ अधिकारी आदिक दर्जनो नाम सोंझा अबैत अछि। उदाहरण- श्री मंत्रेश्वर झा (भा. प्रशासनिक सेवा, रंगमंच-छात्र जीवन मे), श्री ओमप्रकाश भारती (यूपीएससी, संगीत नाटक अकादमी), श्री एन. एन. झा (यूपीएससी, संगीत नाटक प्रभाग), श्री शिवम् कुमार (यूपीएससी, सहायक समादेष्टा, एसएसबी), श्री अखिलेश मिश्र (बीपीएससी, बिहार वित्त सेवा), श्री विभूति आनन्द (प्राध्यापक), श्री अनिल झा (प्राध्यापक), श्री कमल मोहन चुन्नू (प्राध्यापक), श्री प्रदीप बिहारी (बैंक अधिकारी), श्रीमती स्वाति सिंह (बैंक अधिकारी), श्री किशोर कुमार झा (संपादक, राष्ट्रीय सहारा), श्री अरविन्द रंजन दास, श्री कुमार मनीष अरविन्द (भारतीय वन सेवा), श्री परवेज अख्तर (निदेशक, पुरातत्व)।

रांची मे हिन्दी नाटक बेसी कएल तें हिन्दी भाषी कलाकारक सम्पर्क मे बेशी रहलहु-

श्री अजय मलकानी (प्राध्यापक), श्री केदार नाथ पांडेय (आकाशवाणीक पीईपी), डॉ. कमल बोस (प्राध्यापक), डॉ. सुशील ठाकुर (प्राध्यापक), संजय लाल (प्राध्यापक), सुकुमार दा (बैंक अधिकारी), अनिल ठाकुर (प्राध्यापक) आदिक साहचर्य भेटल। तकला सं 100-50 नाम भेटि जाएत मुदा गवैया लोकनि जे संगीत छोड़ि पढ़िक' कोनो पैघ स्थान प्राप्त कएने होथि से हमरा नहि बूझल अछि। हम धृष्टता करब जे अहां सहमत नहि होई त' प्रमाण सहित परिचय दी, मैथिली गायकक। हम अपन नाम कतहु अंकित नहि कर' चाहैत छी, कारण हम रंगकर्मी के सभ सं पैघ बुझैत छी, पदक महत्व ओहि सोझां न्यून। ई कन्ट्रोवर्सी भ' सकैछ,

मुदा हमर गुरु स्व. पंडित ताराकांत झा, पूर्व सभापति, बिहार विधान परिषद्, पटना, पूर्व महाधिवक्ता कहैत छलाह, जे मनुष्य कें कंट्रोवर्सी मे रहबाक चाही तें हमरा लेल ई सर्वथा उचित।

आब किछु आन पक्ष पर चर्चा आवश्यक। मैथिली नाटक मे कोनो एहन संवाद प्रायः नहिए देखबा-सुनबा मे आयल अछि, जे हमरा लोकनि सपरिवार स्वस्थ वातावरण मे नहि देखि सकी। हिन्दीक सखाराम बाइन्डर वा थैंक्यू मिस्टर गेलार्ड के बात हम नहि करब, ओ हमर समाजक नाटक नहि अछि। मुदा मैथिली गीत-संगीत अपन सांस्कृतिक विरासत कें अक्षुण्ण रखबा मे सर्वथा असफल भेल जा रहल अछि। एहि प्रसंग एकटा ऐतिहासिक गप्प-मगध सम्राट अजातशत्रु कोटि प्रभासक बादो वज्जि गणराज्य पर सफलता नहि पाबि रहल छलाह, तं ओ अपन महामात्य वस्साकार के गौतम बुद्ध लग पठौलखिन्ह। महात्मा बुद्ध कहने रहथिन जे जे समाज अपन सांस्कृतिक धरोहर कें अक्षुण्ण रखबा मे सक्षम होयत, ओ कथमपि पतनोन्मुख नहि भ' सकैए। ई मूल मंत्र मानि अजातशत्रु अपन छल-बल-कौशल सं वज्जि गणराज्य मे एहन स्थिति उत्पन्न कएलनि, जे ओ अपन सांस्कृतिक विरासत सं दूर भेल आ पथभ्रष्ट भ' क' मगध के आधीन भ' गेल।

अपन सांस्कृतिक विरासत अक्षुण्ण रखबा लेल हमरा लोकनि रंगमंच पर ध्यान दी, से अपरिहार्य।

भविष्य मे संभावना

हमर मान्यता अछि, जे मैथिल बाय नेचर आन कोनो भाषा-भाषी सं कुशाग्र बुद्धिक लोक होइत अछि, आ से अभिनयो मे स्थापित अछि।

जं समस्त भारतवर्षक विभिन्न मैथिली संस्थाक संरक्षक, कार्यकर्ता लोकनि ई निश्चित क' लैथि जे बरख मे कमसं कम एकटा मैथिली नाटक अवश्य करब त' नाटक लिखनिहार, कलाकार, निर्देशक आदिक बाढ़ि लागि जाएत।

जं रंगमंच सिनेमा वा सीरियल के प्रवेश द्वार छैक, तं कोनो क्षति नहि सभक कल्याण हेतैक।

वर्तमान मे कॉरपोरेट कल्चर हरेक क्षेत्र मे हावी भ' रहल अछि। किएक नहि रंगमंच कें सेहो व्यावसायिक स्वरूप देल जाए। एहि लेल आवश्यक अछि जे कोटा कल्चर वा आंध्रा कल्चर जे आईआईटी प्रवेश परीक्षा आ मेडिकल लेल कोचिंग व्यवसायक पर्याय अछि। फिटजी, आकाश, एलेन, वायवरेंट, रेजनिन्स, सूपर30, विद्यामंदिर क्लासेस, ब्रदर एकेडमी, कैरियर प्वाइंट, बंसल, नारायण आदि सनक कोचिंग संस्थान संगहि यूपीएससी लेल दिल्लीक बाजीराम, सदृश कोचिंग संस्थान सनक कोचिंग संस्थानक स्थापना मैथिल रंगकर्मी लोकनि करैथि आ रंगमंचक शिक्षा सशुल्क प्रदान करथि। हिन्दी, मराठी, बंगला, कन्नड़ मे त' धुरझार एहन कोचिंग चलि रहल अछि। एहि सं प्रशिक्षक लोकनि कें सेहो पारिश्रमिक भेटतनि आ प्रशिक्षु नीक जकां तकनीकी रूप सं रंगमंच, सीरियल, सिनेमा लेल सक्षम रूप मे तैयार भ' सकताह।

हमर मान्यता अछि, जे जाहि भाषाक रंगमंच सक्रिय छैक आ अपन सांस्कृतिक विरासत सं जुड़ल अछि, ओ भाषा कहियो विलुप्त नहि भ' सकैए। सभ रंगकर्मी सहृदय भ' एहि काज सं पुनः जुड़थि आ नव पीढ़ी आ सेवानिवृत लोक कें जोड़थि ग्रामीण रंगमंच कें सक्रिय करथि त' उत्थान संभव। जे बच्चा किशोर वा वयस्क रंगकर्म सं जुड़ल छथि, ओ कहियो लजकोटर नहि भ' सकैछ।

एक भाषायी सर्वेक्षणक अनुसार एहि सदीक अंत धरि विश्वक 90 प्रतिशत भाषा विलुप्त भ' जायत। हमारा देश मे लगभग 1650 टा भाषा बाजल जाइत अछि, मात्र झारखण्ड मे 32 गोट जनजातीय भाषा प्रामाणिक रूपें सरकारी दस्तावेज मे अंकित अछि आ मैथिली सहित 16टा भाषा कें द्वितीय राजभाषाक दर्जा प्राप्त छैक।

हमर मान्यता अछि, जे जाहि भाषाक रंगमंच सक्रिय छैक आ अपन सांस्कृतिक विरासत सं जुड़ल अछि, ओ भाषा कहियो विलुप्त नहि भ' सकैए। सभ रंगकर्मी सहृदय भ' एहि काज सं पुनः जुड़थि आ नव पीढ़ी आ सेवानिवृत लोक कें जोड़थि ग्रामीण रंगमंच कें सक्रिय करथि त' उत्थान संभव। जे बच्चा किशोर वा वयस्क रंगकर्म सं जुड़ल छथि, ओ कहियो लजकोटर नहि भ' सकैछ। हुनक संवाद संप्रेषण क्षमता आ बौद्धिक स्तर निश्चित रूपें श्रेष्ठ होएत। भाषाक रक्षा लेल रंगमंचक विकास अपरिहार्य। आवश्यकता अछि एकरा सम्मान देबाक।

महिला पात्रक समस्या ग्रामीण मंच पर पहिनहुं छल आ आइयो अछि। ग्रामीण रंगमंच कें नाट्य प्रशिक्षण कार्यशाला, संगोष्ठी, थियेटर स्टडी सर्किल, नाट्य समारोह सं जुड़ाव नहि होयब आ कलाकारक शहर दिस पलायन एकर अधोगतिक प्रमुख कारण मानल जा सकैछ। रंगमंचक स्थिति कमजोर होमए मे नाट्यालेखक अभाव सेहो एकटा महत्वपूर्ण कारण अछि। नाटककार लोकनि आलेख लिखबा काल रंगमंचक परिस्थितिक आकलन करबाक अपेक्षा मात्र साहित्यक पाठ पर विशेष ध्यान दैत छथि। जखन कि नाटक मे साहित्यिक गुणवत्ता सं बेशी आवश्यकता छैक ओकर रंगमंचीय गुणवत्ता। एहि क्रम मे पंडित गोविन्द झा लिखित नाटक रूक्मिणीहरण के चर्च आवश्यक बुझना जाइछ। दिनांक 4 एवं 5 अगस्त, 1990 कें भंगिमाक वार्षिकोत्सवक अवसर पर एकर मंचन भेल, निर्देशक छलाह कुणाल। दिनांक 4 अगस्त 1990 कें मंचनक उपरांत दिनांक 5 अगस्त 1990 कें विद्यापति भवन, पटना मे समीक्षा गोष्ठी छल। नाटककार पंडित गोविन्द झा प्रस्तुति आलेख पर कुपित होइत बाजल छलाह जे एहि आलेख मे कुणाल तेना ने काट-छांट कएलनि अछि, जे ई हमर आलेख अहिए नहि। नाट्य विधाक तकनीकी पक्ष बुझने बिना नाटक मंचन कएने सं प्रस्तुतिक स्तरहीनताक कारणें रंगमंच अपन गंभीर दर्शक वर्ग सं लगातार दूर भेल जा रहल अछि। विभिन्न संस्थाक निर्देशक आ

कलाकार लोकनि नव नाट्यलेख पर काज करबाक अपेक्षा पूर्व स्थापित नाटक अथवा अनुवाद नाटकक मंचन पर बेस जोर दैत छथि, अपवाद मात्र चेतना समिति, पटना अछि।

रंगमंच समक्ष अस्तित्वक संकट सर्वोपरि अछि। मात्र मराठी नाटक अपन पेशेवर स्वरूप ग्रहण करबा मे सक्षम भेल अछि, ओ अपन नियमित दर्शक तैयार कएलक अछि, जे प्रेक्षागृह मे नियमित रूप सं टिकट कटा क' नाटक देखबाक अभ्यस्त अछि। ओकर पछोर बंगला आ कन्नड़ नाटक सेहो धएने अछि। ओना राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली स्थित श्रीराम सेंटर मे टिकट शो पर हिन्दी नाटक नियमित रूप सं होइत अछि। किछु सीमा धरि 'मैलोरंग' सेहो मैथिली नाटकक दर्शक तैयार करबा मे सफल सिद्ध भेल अछि। भंगिमा, पटना विगत 36 वर्ष सं चेतना समिति, पटना विगत 46 वर्ष सं एहि काज मे लागल अछि। कलकत्ता स्थित विभिन्न नाट्य संस्था सभ श्रीकांत मंडल, दयानाथ झा, त्रिलोचन झा, गुणनाथ झा, अशोक झा आदिक नेतृत्व मे उल्लेखनीय कार्य कएलक अछि। सब संस्था मिला क' गोटेक सए के लक-धक मे नाटक कलकत्तो मे भेल, मुदा कोनो संस्था नियमित नहि रहि सकल।

प्राचीन काल मे निःसंदेह मनोरंजनक साधनक रूप मे नाटकक महत्वपूर्ण स्थान छलैक, मुदा आइ ओ स्थिति नहि अछि। सिनेमा, दूरदर्शन, मोबाइल, इंटरनेट सनक चुनौतीक समक्ष रंगमंच अपन अस्तित्व लेल आइ भागीरथ प्रयास क' रहल अछि। ओना रंगमंचक समृद्ध धरोहर रहितहु सदैव ओकरा कठिन चुनौतीक सामना करबा लेल बाध्य होमए पड़लैक अछि। कमोवेश वैह स्थिति आइयो छैक। संक्षेप मे जे कहल जाए तं रंगमंच सामुदायिक जीवनक अंग अछि, जकर स्वरूप पूर्णरूपेण स्थानीय होइत छैक। क्षेत्रीय रंगमंचक समुच्चय राष्ट्रीय रंगमंचक स्थापना करैत अछि, नै कि कोनो भाषाक रंगमंच। ग्रामीण रंगमंच साधन, कलाकार, रंगकर्मी, प्रकाश व्यवस्थाक अभावक कारणें नीक स्थिति मे नहि अछि। ओना एकटा सुखद सूचना ई अछि जे नवारम्भ, मधुबनीक प्रकाशक, कवि, लेखक आ रंगकर्मी अजित आजादक अनुसार आइ मिथिलांचल मे बरख भरि मे 1000 सं बेशी मैथिली नाटकक मंचन भ' रहल अछि। ■

यूपीएससी परिणाम : मिथिला आ मैथिली

संघ लोक सेवा आयोग (यूपएससी) केर वर्ष 2019 केर मुख्य परीक्षा परिणाम हालहि मे बहराएल। आन बरखक सदृश इहो बरख मिथिला क्षेत्र केर परीक्षार्थी लोकनि कें बेश सफलता भेटल आ गोटेक परीक्षार्थी टॉप 100 रैंक मे सेहो स्थान बनौलनि। भागलपुर निवासी श्रेष्ठ अनुपम सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनक 19म रैंक प्राप्त केलाह। आइआइटी दिल्ली सं केमिकल इंजीनिरिंग पढ़ाइ केनिहार अनुपम कें दोसर प्रयास मे ई उपलब्धि भेटल। सीतामढ़ी केर नानपुर, बेला निवासी दीपांकर चौधरी कें 42म स्थान भेटल अछि आ समस्तीपुर जिलाक वारिसनगर प्रखंड अंतर्गत गोही ग्रामवासी ओम कांत ठाकुर 52म स्थान पर रहलाह। ओतहि मधुबनीक बाबूबरही प्रखंड केर बरुआर गामक मुकुन्द ठाकुर 54म स्थान पर रहलाह। मुकुन्द जी केर ई प्रथम प्रयास छल। पूर्णियाक सुखसेना निवासी शिखर चौधरी कें 97म स्थान भेटल। आइआइटी पटना सं मैकेनिकल इंजीनियरिंग मे स्नातक शिखर कें पहिल प्रयास मे सफलता भेटल। शिखर एहि सं पूर्व भारतीय वन सेवा परीक्षा मे नवम स्थान प्राप्त कएने छलाह।

भागलपुरक विशाखा जैन 101, सीतामढ़ीक पूजा कुमार 107, मुजफ्फरपुर केर सुजीत शंकर 122म आ समस्तीपुर केर सत्यम 169म आ एहि जिला धुरलख निवासी राहुल मिश्रा 202 रैंक पर रहलाह। राहुल सेहो आईआईटी सं इंजिनियर छथि। दरिभंगाक संकेत 343म स्थान पर छथि। बेगूसराय जिलाक साहेबपुर कमाल प्रखंडक गोविंदपुर गामक निवासी अभिषेक सहनी 452 स्थान पर अएलाह। अभिषेक बिहार पुलिस मे सिपाही रूप मे चयनित भ अपन करिअर शुरू कयने छलाह आ बाद मे झारखंड सचिवालय मे असिस्टेंट ऑफिसर भेलाह। सीतामढ़ीक डुमरा स्थित अमघट्टा रोड निवासी आदित्य सौरभ 495म आ एहि जिलाक परिहार प्रखंडक मुजौलिया राजपूत टोला निवासी अक्षय रंजुमेश 595म स्थान प्राप्त कएलाह। किशनगंजक अनिल बसाक 616 स्थान पर अएलाह। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालयक पूर्व छात्र आ पूर्णिया जिलाक निवासी दीपक कुमार कें सेहो 684 रैंक प्राप्त भेलनि। ओ बिहार सरकार मे मद्य निषेध निरीक्षक आ बाद मे सहायक आयुक्त (वाणिज्य कर) सेहो भेलाह।

यूपीएससी मे मैथिली वैकल्पिक विषय केर परिणाम केर सेहो प्रतीक्षा मिथिला मे बेश रहैत छैक। प्रबोधन आईएएस केर संचालक सुरेन्द्र राउत अपना वाल पर सूचना देलनि जे मैथिली विषय सं छ टा विद्यार्थी चयनित भेलाह। हालांकि समाचार लिखबा धरि मात्र दू विद्यार्थी उदय शंकर प्रसाद (रैंक 353) आ कुमार सौम्य (रैंक 696) केर विवरण भेट सकल। आईआईटी खड़गपुर सं केमिकल इंजिनयरिंग पढ़ल उदय शंकर मधुबनीक परजुआरि डीह टोल निवासी छथि। पूर्व मे प्राइवेट सेक्टर मे काज करवाक अलावा ओ भारतीय वन सेवा मे सेहो 47म रैंक पर चयनित भ चुकल छथि। झारखंडक गोड्डा जिलाक निवासी कुमार सौम्य केर ई तेसर प्रयास छनि। प्रथम प्रयास मे ओ 979 रैंक पर आबि सशास्त्र सेना मुख्यालय सेवा मे नियुक्त भेल छलाह। मंथन आईएएस केर शेखर झा सेहो 10 टा विद्यार्थीक चयन मैथिली भाषा सं हेबाक सूचना देलाह मुदा हुनका सं कोनो विद्यार्थीक विवरण नहि भेट सकल। अखिल भारतीय मिथिला संघ सभ सफल परीक्षार्थी कें बधाइ दैत अछि आ उज्ज्वल भविष्यक कामना करैत अछि। ■

तीरभुक्ति मे विज्ञापन द प्रबुद्ध मैथिल समाज तक पहुंचाउ अपन सनेश

विज्ञापनक दर

बैक कवर पेज (कलर)	:	50,000
फ्रंट कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
बैक कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
डबल स्प्रेड पेज (कलर)	:	40,000
इनर पेज (श्वेत/श्याम)	:	20,000
हाफ पेज (श्वेत/श्याम)	:	10,000

विज्ञापन राशि अखिल भारतीय मिथिला संघ केर नामे चेक/डिमांड ड्राफ्ट/एनईएफटी कएल जाए। संघक बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	अखिल भारतीय मिथिला संघ (Akhil Bhartiya Mithila Sangh)
खाता संख्या	:	11084229861
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	110002087
बैंक	:	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा	:	पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

मैथिली रंगमंचक विकास मे अवरोधक तत्व

✍ कुमार गगन

लेखक पटना उच्च न्यायालय मे प्रशाखा पदाधिकारी पद कार्यरत छथि। संगहि पटना स्थित मैथिली रंगमंचक एकटा मजगूत खाम्ह छथि। दर्जनों नाटक मंचनमे हिनक अग्रणी भूमिका रहलनि अछि। एखन धरि 50 सं बेशी नाटक मे अभिनय। सात टा मैथिली नाटकक लेखन आ 10 मे निर्देशन। धारावाहिक 'नैन न तिरपित भेल' मे अभिनय। 'बिहार कला श्री सम्मान', 'डॉ. चतुर्भुज सम्मान' इत्यादि सं सम्मानित।

रंगमंच सन व्यापक शब्दक अर्थ बुझबाक जखन प्रयास करै छी तं मन मे सहजहि प्रश्न उठैत अछि, की मैथिली रंगमंच सन कोनो व्यवस्था मैथिल समाज मे अवस्थित अछि? ऊं अछि, जं ओकर स्वरूप केहन अछि...? एकर प्रसार कतय धरि भेल अछि? जं नहि भेल तं किएक नहि भेल? जे भेल से किएक भेल? जे भेल तकर प्रसार कतय धरि भेल? एहि लेल कतेक चिन्तन होइए? मेधावी व प्रबुद्ध लोक रंगमंच सं किएक विमुख भ' जाइए? की, समाज कें रंगमंचक आवश्यकता छै? जं छै तं प्रयास किएक नहि होइए? जं. रंगमंच नहि रहत तं भाषा आ संस्कृतिक बात केनाइ कतेधरि उचित? केवल बौद्धिकता सं समाज मे चेतना कोना आओत? जं समाज चेतनाहीन भ' जायत तं मानवीय मूल्यक रक्षाक बात केनाई कतेक ईमानदारी?

एहि सभ तरहक प्रश्न जखन मन मे उठैत अछि तं एकर विवेचना करैक हेतु विस्तार सं चर्च भेनाइ आवश्यक। एहिठाम हम संक्षेप मे वा एना कही जे सूत्र मे विवेचना करबाक प्रयास करब। एकर उत्तर तकबाक प्रयत्न करब। एहि लेल हम कोनो विशेष बौद्धिक, सैद्धांतिक व दार्शनिक बात नहि करब, बल्कि शुद्धक' व्यवहारिक बात करब। कारण हम छी रंगमंचक लोक। रंगमंच एक व्यवहारिक कला होइछ। एहिमे समयानुसार अनेक परिवर्तन आ परिवर्द्धन होइत रहलैक अछि। समयक अनुसारे जेना नाटकक कथ्य व रूप बदलैत रहैछ, ओहि अनुसारे रंगमंच सेहो परिवर्तित होइत रहैछ। वैज्ञानिक प्रगतिक संग-संग रंगमंचक सेहो पर्याप्त विकास भेलैक। देशक आन-आन भाषाक रंगमंचक अपेक्षा जखन मैथिली रंगमंचक बात करै छी तं स्थिति उत्साहवर्धक नहि लगैछ। एकर पाछां कोनो एक कारक उत्तरदायी नहि, बल्कि अनेको अछि। एहि पर समयानुकुल उचित विमर्श होयबाक चाही।

जखन मैथिली रंगमंचक बात करै छी तं ई अपन भूमि पर नहिये जकां अछि, जखन कि मिथिलाक समृद्ध नाट्य-परंपरा कीर्तनिया, संग-संग सलहेश, लोरिक, विद्यापत, आदि समृद्ध लोकनाट्य (नाच) परंपराक रहलैक अछि। एहन सन समृद्ध परंपरा अछैत कालांतर मे एकर ठोस व विकसित रूप नहि आकार ल' सकल। एकर की कारण? एकर पाछां कारण अछि जे भाषा आधुनिक काल मे समृद्ध छै ओकर रंगमंच ओतैक समृद्ध छै। उदाहरण स्वरूप कन्नड़, मराठी, बांग्ला, गुजराती आदि। कोनो क्षेत्र विशेषक भाषा आ ओकर रंगमंच मे अन्योन्याश्रय संबंध होइछ छैक। बात करी, मिथिला क्षेत्रक भू-भाग कोन स्थिति मे अछि। आधा भाग नेपाल आ ओकर अपन शासन व्यवस्था, अपन भाषानीति। इम्हर भारतक मिथिला बिहारक एक क्षेत्र विशेष अछि। ओहू मे कोशी क्षेत्र अलग आ बांकी क्षेत्र अलग। एक स्वतंत्र राज्य नहि होयबाक कारणें, मैथिली कोनो राज्यक राजकीय काम-काजक भाषा नहि अछि, फलतः सरकारी संरक्षण व मान्यता नहि होयबाक कारणे एहि भाषाक समृद्धि नहि भेलैक। बांग्ला, मराठी, कन्नड़, गुजराती स्वतंत्र राज्य विशेषक अपन काम-काजक भाषा छै। तें एकर विकास भेलैक। राष्ट्रीय फलक पर एक-सं-एक पैघ साहित्यकार व नाटककार भेलैक। मिथिलांचल एखन केवल एक शाब्दिक बात अछि एकर एखन

संपर्क : सौराठ, मधुबनी, मो. : 9430888341

कोनो स्वतंत्र राजनैतिक भू-गोल नहि छैक। एहि प्रकारें राजनैतिक कारण सं ई भाषा उपेक्षित होइत गेल तें भाषाक समृद्धि नहि भेलैक। जखन भाषे समृद्ध नहि तें रंगमंचक बाते की?

सामाजिक पक्ष

आब बात करी मैथिल समाजक स्वरूप पर। नाटक व रंगमंचक विकास कोनो क्षेत्र विशेषक सामाजिक संरचनाक अनुरूप होइत छैक। यैह कारण अछि जे सामाजिक परिवर्तन सं नाट्य लेखन आओर ओकर प्रस्तुतिकरण मे अनायासे अन्तर आबि जाइत छैक। नाटक प्रकृत्या एक सामाजिक कला धिक एहिमे आयोजन सं ल' क' अबलोकन धरि समस्त क्रिया समाजे द्वारा सम्पादित होइत अछि। वैयक्तिक अथवा एकान्तिक साधना सं नाट्य क्षेत्र मे सफलताक संभावना नहि कएल जा सकैछ। कहबाक मतलब जे रंगमंच सामाजिक स्वरूपक अभिव्यंजक होइत अछि। नाटकक अधिकालिक निर्माण आओर ओकर प्रदर्शन सुखी तथा शांत समाज मे संभव भ' पबैत अछि। धनहीन व अशांत समाज तं अपन साधारण आवश्यकताक पूर्ति मे अहर्निश उलझन मे रहैत अछि। मिथिलाक बहुसंख्य समाज, बाढ़ि आदि प्राकृतिक आपदा सं ग्रस्त, भूमिहीन लोक वा एना कही जे राजनीतिक उपेक्षाक कारणें, विपन्न रहल। समाजक विशाल जन समुदाय अर्थाभावक कारणें मूलभूत भौतिक सुविधा सं वंचित रहल। विशाल जन समुदायक अपन भूमि सं पलायन करैत रहल।

एहि समुदायक बीच अपन लोकनाट्य परंपरा छलैक मुदा रंगमंच युग विशेषक जन-रुचि आ तत्कालीन आर्थिक व्यवस्थाक आधार पर निर्मित होइत छैक। एहि जन समुदायक समयांतराल मे अपन दु:ख, पीड़ा, व्यथा संगहि ओकर नव आकांक्षा छलैक। ओकर एहि व्यथा गाथा कें ओकर भाषा व शैली मे ओकर मनोरंजन करैत ओकरा शिक्षित करैबला, भोजपुरीक भिखारी ठाकुर सन कियो रंगशिल्पी नहि भेलैक मिथिलामे आधुनिक काल मे। हबीव तनवीर सन कियो रंगचिंतक निर्देशक नहि भेल जे ओहि वंचित समाज, जे स्वभावत: कलाकार होइत अछि, ओकरा बीच काज कए क' ओकरा आधुनिक रूपें ठोस बनाक' ओकर रोजी रोटीक व्यवस्था क' सकितय, जेना ओ छत्तीसगढ़क आदिवासी लोकक बीचक कलाकारकें प्रशिक्षित कए राष्ट्रीय मंच पर स्थान दियौलनि। कहबाक तात्पर्य जे मिथिलांचलक विशाल जन समुदाय शहर जाक' जन-बोनिहार-कारीगर-कलाकारक स्थान पर कुली-मजदूर बनैत गेल, अपन रंग परंपरा सं दूर भ' गेल। शहर मे आबि अपन पहचान मिटबैक लेल बाध्य भ' गेल। फलत: मिथिलांचल मे जे एक नव रंगमंचक निर्माण भ' सकैत छल ताहि सं वंचित रहि गेल। मतलब जे मिथिलाक विशाल समुदाय समाजक संरक्षणक अभाव वा नेतृत्वहीनताक कारणें अपन पारम्परिक लोकनाट्य शैली कें आधुनिक समाजक अनुरूप ओकर जीवनशैली व रुचि के अनुरूप अपना कें विकसित नहि क' पऔलक। जं से होइत तं मिथिला मे रंगमंचक एक नवस्वरूप देखबा मे अबैत।

आब बात करी मैथिल समाज मे, दोसर समुदाय जे शिक्षित, प्रबुद्ध आ अपेक्षाकृत आर्थिक रूप सं सम्पन्न छल, ओकरो बीच रंगमंचक कोनो विकसित रूप नहि आबि सकल। पारसी नाट्यशैली सं प्रभावित उत्सवधर्मी नाट्यमंचन होइत रहल एहि समुदाय मे। हिन्दी-उर्दू मिश्रित भाषाक नाटक। कालांतर मे शहरी मिश्रित लोकक अनुराग व आग्रह पर बिधक नाम पर मैथिली नाटकक मंचन। एकरा अहां कोनो रंगमंचक संज्ञा नहि दे सकै छी। मात्र नाट्य प्रदर्शन बिना कोनो रंग चिंतन व उद्देश्य कें, रंगमंचक परिकल्पना कें साकार नहि क' सकैछ।

मिलाजुलाक' हमरा कहबा मे कोनो असोकर्य नहि जे एहू शिक्षित ग्रामीण समुदाय मे मैथिली रंगमंचक कोनो अवधारणा नै छल आ ने अछि। विकासक तं बाते दूर।

राजनैतिक उपेक्षा संगहि अदूरदर्शिताक कारणें मिथिलांचल मे औद्योगिक विकास नहि भेल फलत: शहरीकरण एहि क्षेत्र मे नहि भेल। कोनो पैघ विकसित शहर एहि क्षेत्र मे नहि अछि। तें आर्थिक सम्पन्नता सं दूर रहल। एकहु टा शहर मे आधुनिक प्रेक्षागृह तक नहि। नाट्य मंचन हेतु प्रेक्षागृह चाही, समुचित आधुनिक रंग सज्जा व प्रकाश व्यवस्था होयबाक चाही। जखन कोनो सुविधे नहि तखन रंगमंचक विकासक बात की कएल जाय।

प्रवासी समाजक भूमिका

तं कहबाक ई मतलब जे मिथिलांचलक अपन भूमि पर मैथिली रंगमंचक उपस्थिति नहियें जकां अछि, यदा कदा कोनो नाट्य आयोजन भ' गेला सं ओकरा हम मैथिली रंगमंचक कोनो विशिष्ट अवधारणा कें रहें कोना स्वीकारि ली। मिथिलाक आम लोक मे एखनो वैह धारणा छै, मैथिली नाटक माने हंसी मजाक-हल्लुक-फल्लुक गप्प। मैथिली मे गंभीर सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक नाटक कोनादन लगैत छैक। माने मैथिली नाट्य मंचनक प्रति गंभीर नहि अछि लोक, तखन रंगमंचक विकासक बात तं आकाश कुसुम लगैछ। एहने ठाम ओ हिन्दीक कहावत छै दीप तले अंधेरा। से जखन मैथिली रंगमंचक परिकल्पना मिथिलाक अपन भूमि पर तकैत छी तं अन्हार लगैछ।

निष्कर्षत: कहल जा सकैत अछि जे मिथिलाक अपन भूमि पर आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, रूढ़िवादी-परंपरावादी सोचक कारणें अपन कोनो रंग परम्परा व रंगमंचक विकास नहि क' सकल अछि, एखन धरि। तखन बात उठैत अछि जे मैथिली रंगमंचक अस्तित्व अछि कतय? तं ई अछि प्रवासी प्रबुद्ध मातृभाषानुरागी मैथिलजन द्वारा स्थापित देशक किछु खास-खास शहर मे मैथिली रंगमंच। वर्तमान मे कोलकाता, पटना, नई दिल्ली, जनकपुर (नेपाल) आदि शहर मे आधुनिक रंगमंचक संकल्पना कें साकार करैछ। ओना एक समय मे एहि सब शहरक अतिरिक्त जमशेदपुर, बोकारो, बेगूसराय, विराट नगर, आदि शहर मे सेहो मैथिली रंगसंस्था सभ सक्रिय छल। मुदा एहिठाम आब मैथिली रंगमंचक गतिविधि बन्ने जकां भ' गेल अछि। एहि शहर मे नाट्य मंडलीक सक्रियताक कारण 'अरिपन' पटना द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय मैथिली नाट्य प्रतियोगिता समारोह छल। वर्तमान मे मैथिल जन समुदायक विशाल जनसंख्या देशक विभिन्न शहर मे बास करैत अछि। अनेको सांस्कृतिक सामाजिक संस्था काज

क' रहल अछि। एक-सं-एक मेधावी, प्रतिभाशाली, प्रभावशाली लोक सभ देशक विभिन्न शहर मे अपन गतिविधि संग लोकप्रिय छथि, मुदा रंगमंचक गतिविधि कतेक शहर मे अछि?

मनोवैज्ञानिक पक्ष

चेतना समिति, पटनाक देखाउंस पर विभिन्न शहर मे विद्यापति पर्व समारोह मनाओल जाइत अछि। गीतनाद, नृत्य, कवि सम्मेलन, पुस्तक प्रदर्शनी, व्यंजन प्रदर्शनी, कला प्रदर्शनी, मुदा नाट्य प्रदर्शन कतेक ठाम होइत अछि। जखन कि पटनाक चेतना समिति प्रतिवर्ष नव नाटक लिखबाय ओकर मंचन पर्व समारोह मे करैत अछि। ई परम्परा आन शहरक समारोह मे किएक नै भेलैक? ई एक विचारणीय प्रश्न अछि। एहूठाम मैथिल मानसिकता कें बुझय पड़त। असल मे रंगकर्म, अनुराग, मेधा, श्रम, तपस्या, संघर्षक मांग करैत छै। ककरा लग ऐतेक समय छैक, ककरा एतेक सोचैक फुर्सत छै, तखन तं पाइक जोगाड़ करू, लाखो टाका सांस्कृतिक कार्यक्रम, मनोरंजन के नाम पर खर्च करू, मुदा नाटकक नाम पर हजारों टाका देबय मे आंखि लगैत छैक। एहि सभ बातक जखन अवलोकन करै छी तं लगैत अछि जे समाजकें रंगमंचक बेगरते नै छै। विभिन्न संस्थाक लोकक अपन-अपन स्वार्थ छै, आम लोक मे चेतनाक अभाव छै। से नै तं कम सं कम वर्तमान समय मे मुम्बई, पूना, हैदराबाद, बेगलौर, विशाखापत्तनम, इलाहाबाद, वाराणासी, रांची, डालटेनगंज, बोकारो, अहमदाबाद, बड़ौदा, जमशेदपुर, बेगूसराय, दड़िभंगा, मधुबनी, सहरसा, पूर्णिया मे नियमित रूपें आधुनिक मैथिली रंगमंचक परिकल्पना साकार भ' सकैए।

से साकार होयत कोना जाधरि कोनो कुशल नेतृत्व रंगकर्म व रंगमंचक स्थापना हेतु आगां बढ़िक काज नहि करत। रंगमंचक प्रति अनुरागक भाव ऐतैक तखन ने। एकर कमी बहुत खटकैत अछि। यैह कारण अछि जे विभिन्न शहर मे प्रबुद्ध लोकक अछैतो मैथिली रंगमंचक गतिविधि देखबा मे नहि अबैछ।

प्रवासी शिक्षित मैथिल समुदायक सामाजिक मनोभावक जखन विश्लेषण करैत छी तं मुख्यतया तीन प्रकारक 'भाव' देखबा मे अबैछ। पहिल अछि 'संतुष्टि भाव'। जे करै छी से ठीक छै। आब कतेक करू। इहो की कम छै। जतबा भेलै सेहो कम नै भेलै। बेसी परेशानी के उठाबय। जे चलैत आबि रहल छै वा चलि रहल छै से बढ़िया छै। एहि तरहक संतुष्टि भाव रंगमंच सन सदैव प्रयोगशीलताक मांग करैबला विधाक मार्ग मे अबरोधक काज करैछ। प्रयोग करबाक प्रकृति प्रयोगशीलता कहबैछ। प्रयोग यथार्थ कें जीवन के परिप्रेक्ष्य मे देखबाक साधन होइछ। प्रयोगशीलताक माध्यम सं कथ्य व शिल्पक नव-नव आयाम खुलैछ जे रंगमंचक लेल आवश्यक छैक। चेतना समिति द्वारा आयोजित रंग उत्सव मे जखन नाट्य-प्रदर्शन सब देखल तं कतेको ठामक प्रस्तुति निराश कएलक। कारण वैह पुरान लोक, वैह पुरान ढंगक प्रस्तुति। नवीनताक सर्वथा अभाव। मुदा प्रदर्शन दलक मुखियाक हाव-भाव बतबैत छल जे पूर्ण संतुष्ट छथि। कहबाक मतलब जे एहि तरहक भाव रंगमंचक विकास मे सहायक नहि होइछ। दोसर अछि 'अहंभाव'। हम जे करै छी वैह ठीक। हम जे बुझै छिऐ सैह सही छै। हमरे टा लग ज्ञान अछि। हमरा आगां दोसर के? ककरो कोनो अवगति छै, बाजत। रंगमंच सन सामाजिक सामूहिक विद्याक लेल ई भाव घातक होइछ। कतेको रंगसंस्था एहि मनोभावक कारणें टूटि गेल वा शिथिल भ' गेल।

मतलब ई जे नेतृत्व मे जं अहंभाव भ' जेतैक तं संघटन मे विघटन भेनाइ स्वभाविक प्रक्रिया होयतैक। रंगमंच सन विधा मे लोकक बात सुनैइये पड़तै। एहिमे कुशलताक मांग होइ छै। तकर कमी सेहो देखबा मे अबैछ। परिणाम संतोषप्रद नहि होइछ।

तेसर भाव जे सभसं खतरनाक अछि ओ थिक 'ईर्ष्या भाव'। अपने किछु करब नै मुदा दोसर जे किछु सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधि करत ओकर मीन-भेष निकालैमे अपन ऊर्जा कें नष्ट करैत रहब। रंगमंच सन कलात्मक विधा, साहित्यक आन विधा सन 'स्वांतः सुखाय' भाव सं काज चलैवला नहि छैक। एकरा समाजक सभ वर्ग सं सहयोग चाहिऐक। मुदा ई 'ईर्ष्याभाव' के की कही! रंगमंच सं जुड़ल लोक स्वभावतः कलाकार व भावुक होइत छथि। कखनो-कखनो एहन-एहन अवरोधक तत्वक ओ शिकार भ' जाइत छथि, जे रंगमंचक विकासक लेल नीक बात नहि होइछ।

आर्थिक पक्ष

आब बात करी 'अर्थक'। वित्तीय संसाधन कोनो संस्थाक रक्त होइछ। जीवन चलैक लेल जहिना रक्त संचार आवश्यक छैक ओहिना संस्था चलबैक हेतु वित्तीय संचार सेहो आवश्यक छै। रंगमंच सन व्यापक विधाक लेल बेसी धनक आवश्यकता होइत छैक। एखन जे मैथिली रंगमंचक स्वरूप अछि ओ अव्यवसायिक अछि। सभ रंग संस्था अर्थाभाव मे दबल रहैछ, अपन कलाकार कें आर्थिक रूप सं सहयोग नहि क' पबैछ, फलतः कलाकारो अपन कार्यक प्रति उत्साह नहि रखैत छथि। रंगमंच कें कम सं कम आवश्यक आवश्यकताक रूप मे तं विकसित होयबाके चाही। एहन सन परिस्थिति मे मैथिली रंगमंच अपन अस्मिता सं जुझि रहल अछि। जे विधा कम सं कम रोजी-रोटीक समस्याक निदान नहि क' सकल तत्संबंधित विधा कें अस्मिता सं जुझवे कहल जयतैक।

तखन किछु मैथिली रंगसंस्था एहन अछि जे अपन कौशल कही वा सरकारी तंत्र लग पहुंच कही, से समय-समय पर सरकारी सहायता ल' क' नाट्य प्रदर्शन करैत छथि। एहि सरकारी तंत्र सं सहयोग लेब' हेतु विभिन्न तरहक मापदंड सं गुजर' पड़ैत छैक, कारण सरकारक नीति व शर्तक अनुपालन कइये कए अहां अपन काज क' सकै छी। तखन अहांक प्रतिबद्धता ओहितंत्रक प्रति भ' जाइत अछि। सरकारी सहायता जतय नाटक आ रंगमंच कें एक प्रकारक आश्रय दैत छैक ओतहि ओ ओकरा नोकसान सेहो करैत छैक। रंगमंचक जीवन्तता, स्वायत्तता, प्रखरता, नव बाट तकबाक संग नव खतरा उठेबाक क्षमताक धार कें अवरोध करैत छैक, एहन तरहक सुविधा कही वा सहायता। किएक तं सरकारी आश्रय पर जीवित रहैवला

संस्कृतिक कोनो अपन वैयक्तिक तेवर व ऊर्जा नहि रहैछ आ ने ओकर कथ्य मे बेसी बेबाकीक अपेक्षा अहां क' सकै छी। रंगमंचक लेल ई प्रवृति बेसी उत्साहजनक नहि होइछ, कारण कालांतर मे अहां अपन दर्शक यानि समाज सं दूर होइत जायब। दर्शक वर्गक चिंता रंगकर्मक अनिवार्यता होइछ। प्रसिद्ध निर्देशक हैराल्ड क्लरमेन कहैत छथि, जे रंगमंच दर्शकक चिन्ता नहि करैछ, ओ रंगमंच अछिये नहि। नाटक दर्शक समूह सं अपन प्रतिध्वनि अछिये नहि। नाटक दर्शक समूह सं अपन प्रतिध्वनि प्राप्त करैत अछि, सरल ढंग सं कही तं यदि दर्शक खेल मे भाग नहि लेत तं ओ खेल अछिये नहि।

वर्तमान समय मे रंगमंडली द्वारा प्रस्तुत अनेकों नाट्य प्रदर्शन देखला सं लगैत अछि जे ओ अपन नाट्यालेखक चयन सं ल' क' प्रस्तुतीकरण मे दर्शकक रुचि कें ध्यान नहि राखि, व्यक्ति विशेषक रुचि व सोच सं प्रभावित भ' जाइत अछि। रंगमंडली कें अपन नाट्यालेख सं ल' क' ओकर प्रस्तुतीकरण मे दर्शकक रुचि ओकर बौद्धिक क्षमता संगहि ओकर सामाजिक परिवेश आदि कें ध्यान रखबाक चेष्टा कएल जयबाक चाही। दर्शक जे समाजेक हिस्सा अछि ओकरो अपन दायित्व बोध होयबाक चाही। नाट्यमंचन एक प्रबुद्ध सांस्कृतिक गतिविधि होइछ, अतएव समाजक प्रबुद्ध वर्ग कें रंगमंचक विकास मे सहयोग करबाक चाही। रंगमंडली आ दर्शकक बीच ई लोकनि सेतुक काज क' सकैत छथि। जखन दर्शकक विशाल वर्ग रंगमंचक गतिविधि सं जुड़ि जायब रंगमंच अवश्ये विकसित होयत। एहि लेल समाजक प्रबुद्ध व प्रभावशाली लोक सभहक सहयोग अपेक्षित होइछ। मुदा एहन सौभाग्य मैथिली रंगमंचक लेल वर्तमान मे नहि देखबा मे अवैछ। ओना किछु अपवाद के छोड़ि देल जाय तं।

समन्वयक अभाव

एकटा कहबी छै ने - सोन तं कान नै आ कान तं सोन नै! मैथिली रंगमंचक लेल ई कहावत सेहो चरितार्थ होइछ। जकरा लग एकटा निश्चित रंगनीति छै ओकरा संसाधनक अभाव छै, जकरा लग संसाधन छै ओकरा लग कोनो रंगनीति नहि। एकरा एकटा उदाहरण सं बुझि सकैत छी। पटनाक चेतना समिति लग अपन प्रेक्षागृह छैक, कार्यालय व पूर्वाभ्यासक लेल पर्याप्त कक्ष छैक। अर्थसम्पन्न संस्था अछि, कारण नियमित आयक स्रोत छैक। अनेको तरहक साहित्यक-सांस्कृतिक-सामाजिक गतिविधि करैत रहैत अछि। विद्यापति पर्व समारोह मे प्रतिवर्ष नव नाटकक मंचन करैत अछि वा एना कही जे करबैत अछि। किएक तं एहि संस्था कें अपन रंगमंडली नहि छैक। एकटा संयोजक बनबैत अछि जे विभिन्न रंगमंडलीक कलाकारक सहयोग सं साल मे एक बेर नाट्य प्रदर्शन करबा दैत छथि। दोसर दिस विगत 36 वर्ष सं निरंतर मैथिली रंगकर्म करैबला नाट्य संस्था 'भंगिमा' जे मैथिली रंगमंच मे अनेको नव आयाम जोड़लक, अपन परम्परागत नाट्यशैली किरतनिया आ लोकनाट्यकें परिशोधित कए आधुनिक रूपें समाजक सोंझा अनलक, एक सं एक प्रयोगधर्मी नाटक कएलक, राष्ट्रीय फलक पर पहिल बेर सन् 1991 मे मैथिली रंगमंचक स्थापना अपन चर्चित नाट्य प्रस्तुति 'रुक्मिणीहरण' नाटक सं कएलक, एकरा लग एखन ध रि अपन स्थायी कार्यालय भवन नहि छैक, अपन नाट्य गतिविधि आ पूर्वाभ्यास कक्ष लेल चेतना समितिक विद्यापति भवनक कृपा पर निर्भर रहय पड़ैत छैक। आर्थिक विपन्नताक कारणें बहुत रास बात सोचल रहि जाइत छैक।

एना किएक छैक? समाज मे एहन विरोधाभास किएक छैक? इहो एकटा विचारणीय बिन्दु अछि। कारण बहुत भ' सकै छै। कोनो एक कारक एकरा लेल उत्तरदायी नहि छैक। हमरा लगैत अछि जे एखनो हमर समाजक बौद्धिक-साहित्यक-सांस्कृतिक पुरोधा लोकनि मे रंगचेतनाक अभाव छनि। मैथिली रंगमंचक प्रति बुद्धिजीवी, साहित्यकार, समाजक प्रबुद्ध वर्ग, विशिष्ट जन लोकनि द्वारा सेहो अपेक्षित भूमिकाक निर्वहन नहि भ' सकल। रंगमंचक प्रति हिनका लोकनिक प्रतिबद्धता मे सदैव कभी देखबा मे आएल। किछु साहित्यकार, नाटककार, संस्कृतिकर्मी जे प्रारम्भ मे रंगमंच सं जुड़ल छलाह, समयानुकूल अपन प्रतिबद्धता रंगमंच सं विमुख भ' साहित्य व सांस्कृतिक अन्य विधा दिस जोड़ि देल। समाज कें द्वारा सेहो एकरा उपेक्षित विधा मानि लेल गेल परिण ाामस्वरूप रंगकर्म सं जुड़ल लोक तिरस्कृत होइत रहलाह। मैथिली रंगमंचक विकास नहि होयबाक पाछां एकटा इहो कारण अछि। आजुक पढ़ल-लिखल, मेधावी युवा पीढ़ी मे रंगकर्मक प्रति जे आस्था-समर्पण, उत्तरदायित्व होयबाक चाही से नहि भ' पाएल। कारण सामाजिक-सांस्कृतिक दायित्वबोधक अपेक्षा व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाक भावना प्रबल होयब थिक। आधुनिक पालन-पोषण, भौतिकवादी सोच ओकरा एहि तरहक धैर्य, तपस्या, श्रमक मांग करैबला विधा सं दूर रखबाक लेल बाध्य करैछ। जकरा मे स्वभावतः रचनात्मक कलात्मक गुण विशेष छै ओहो या तं एहि सं दूर रहि कलाक आन विधा दिस आकर्षित होइत अछि वा रंगमंचक कें मात्र सीढ़ी बुझि जुड़ैत अछि। ओकरा प्रसिद्धि पाबैक लेल आजुक युग मे टीवी व सोशल मीडिया भ' गेल छैक। आजुक प्रतिभाशाली युवक कवि-लेखक-कथाकार बनि सकैए, मुदा रंगकर्मी कहेनाइ ठीक नै बुझैए। एकर की कारण? साल-दू-साल मे मंच भेटि जाइ छै, प्रचार भ' जाइ छै, प्रतिष्ठा भेटय लगैत छैक, पुरस्कार-सम्मान, भेटय लगैत छैक, से बात रंगमंच मे नहि छैक। रंगमंच कठोर परिश्रम व साधना मंगैत छैक, तखन सिद्धिक प्राप्ति होयतैक। तकरो कोनो निश्चितता नहि छै, तखन एहि अनिश्चितताक खेलक खिलाड़ी किएक बनत आजुक सुविधाभोगी महत्वाकांक्षी युवक। ओना तं ई सभ ओनो रंगमंचक लेल कें आजुक समय मे तथापि मैथिली रंगमंचक लेल ई भाव बेसी प्रबल छै।

अस्तु, एहनो सन विकट अन्हार वातावरण मे आशाक दीप जरैत अछि जखन देखैत छी जे मैलोरंग सन मैथिली रंग संस्था भारत रंग महोत्सव (भारंगम) सन प्रतिष्ठित अन्तरराष्ट्रीय नाट्य समारोह हिस्सा बनि मैथिली रंगमंचक उपस्थिति दर्ज करबैत अछि। एहि दीपक इजोत मैथिली रंगमंच कें कतय धरि प्रकाशित करैत अछि, सेहो देखबाक अछि। ■

मैथिली रंगमंच आ सिनेमा : अतीत आ संभावना

✍ भास्करानंद झा भास्कर

लेखक ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयसं फ़ोनेटिक्स (ध्वनि विज्ञान) सहित अंग्रेजी साहित्यमे स्नातकोत्तर। सम्प्रति परमाणु ऊर्जा विभागक अंतर्गत मुम्बई स्थित एकटा यूनिटमे अधिकारी पद पर कार्यरत। मैथिली, अंग्रेजी एवं हिन्दीमे समान रुपसं लेखन। मिथिला दर्शन, कर्णामृत, मिथिलांचल टुडे, मैथिली दर्शन आदि सहित कैकटा राष्ट्रीय ओ अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकादिमे कविता, समीक्षा, आलेख आदि प्रकाशित। इंडियन नेशन, टाइम्स ऑफ़ इंडिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, टेलीग्राफ़ आदि में समसामयिक विषय पर लेख/पत्र/विचार आदि केर प्रकाशन। सम्मेलन, संगोष्ठी, काव्य गोष्ठी आदिमे मंच संचालन। अंग्रेजीमे 3 गोट कविता संग्रह: सूथिंग सेरेनेड्स (2018), टू इंडियाज (2019) आ थॉट्स इन सॉलिच्यूड (2020)। मैथिली कविता संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। फिलिपिंसमे विद्यालयक पाठ्यक्रममे अंग्रेजी कविता "नेल्शन मंडेला-द गांधी ऑफ साउथ एफ्रिका" सम्मिलित।

मैथिलीक अपन गौरवपूर्ण इतिहास आओर समृद्ध साहित्य रहल अछि। आधुनिक भारतीय भाषादिमे मैथिली नाट्य-साहित्यक गौरवशाली परम्परा अनवरत चलैत आबि रहल अछि। मैथिली नाटक आ रंगमंचक इतिहास ज्योतिरीश्वरक "धूर्त समागम", दसौत, सामा-चकेवा, झिझिया, जट-जटिन, झुम्मरि, रमखेलिया, भगैत आदिसं प्रारम्भ होइत अछि। मध्ययुगमे मैथिली नाट्य-परम्पराक सक्रियता बंगाल, असम आ नेपाल धरि छलैक। ओतय मैथिली नाटककें सर्वाधिक आदर छलैक। मैथिली नाटक आ रंगमंच किरतनिया नाटकक माध्यमे चौदहम सं उन्नैसम शताब्दी धरि अपन पताका फहरबैत रहल। मुदा अठारहम-उन्नैसम शताब्दीक पछाति मैथिलीक समुन्नत नाट्य-परम्परा क्रमशः क्षीण होमय लागल। उन्नैसम शताब्दीक अंतमे पारसी थिएटर आ रामलीला मिथिला पहुंचि गेल छल। परिणाम ई भेल जे कीर्तनिया नाटकक असामयिक अंत भ' गेल। बीसम शताब्दीक आरंभिक चरणमे मैथिली नाटकक, एकांकी आ रंगमंचक दिशामे साहित्यक अन्यान्य विधादिक अपेक्षा अत्यंत तीव्र गतिसं प्रगति पथपर पुन:अग्रसर भेल। मैथिली नाटकक प्राचीन परम्पराक टिमिटमाइत लौकें एहि युगमे नव प्रकाश भेटल। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनक गतिविधि सभ के प्रभावक कारण बीसम शताब्दीक छठम-सातम-आठम दशकमे मैथिली नाट्य रचना तथा मंचनक दिशामे सक्रियतासं वृद्धि भेल। गाम-घरक आ नगर-महानगर स्थित विभिन्न संस्था द्वारा नाट्यरचना तथा नाट्यमंचनक आयोजन सं आधुनिक मैथिली नाटकक विकासमे गति अयलैक। शनैः शनैः अनेकानेक प्रतिभासम्पन्न, नाट्यकार, रंगकर्मी आ नाट्य-निर्देशकक पदार्पण भेल। हुनका लोकनिक तत्परता ओ दक्षता सं आधुनिक मैथिली नाटकके प्रेरणा आ मार्गदर्शन भेटलैक। आधुनिक मैथिली रंगमंचक विकासक दिशामे पहिने कलकत्ताक तथा बादमे पटना, दिल्लीक किछु मैथिली संस्था आ दूरदर्शी रंगकर्मी अग्रणी भेलाह आ अपन अपन ढंग सं योगदान-अवदान देलाह। मैथिलीमे व्यावसायिक रंगमंचक घोर अभाव रहल अछि मुदा तइयो अव्यावसायिक रंगमंचक कलाकारलोकनि एकरा प्राणवंत बना क' रखने छथि से बड्ड स्तुत्य अछि।

मैथिली रंगमंच

मैथिली रंगमंचक अपन गौरवशाली इतिहास रहल अछि। मैथिली नाट्य-लेखन ओ नाट्य- मंचनक इतिहासमे ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'धूर्तसमागम', विद्यापतिक 'गोरक्षविजय', उमापति उपाध्यायक 'पारिजातहरण' जेहन प्रयोगधर्मी नाटककार चल गेलाह आ सम्पूर्ण उत्तर भारतमे एकटा नव रंगमंचक नेतृत्व करबाक गौरव सांस्कृतिक रुपसं समृद्ध आ प्रतिभासम्पन्न मिथिलाके प्राप्त भेल। मुदा बीसम शताब्दीमे रुढिवादिताक कारण मिथिलाक रंग-परम्परा मलीन होमय लागल आ पारसी नाटक एवं 'जत्रा'क मंडली अपन प्रदर्शन सं हिंदी एवं बांग्ला नाटकक मंचनक बलें रंगमंचक क्षेत्रक आ सांस्कृतिक क्षेत्र पर कब्जा क' लेलक।

संपर्क *: जे-20, यमुना, अणुशक्तिनगर, मुम्बई-400094, मो.: 7562878005, ईमेल : bhaskaranjha@gmail.com*

आधुनिक रंगमंचक विकासमे वाराणसीक अवदान-योगदान उल्लेखनीय अछि। वाराणसीमे महामहोपाध्यय मुरलीधर झाक सत्प्रयासें एक 'विद्वत मंडली'क स्थापना भेल आ नव रुप सं रंगमंच कौशल दृष्टि सं नाट्य रचना प्रारंभ भेल। परिणामतः मैथिली रंगमंच परम्परामे एक नव ज्योति आयल जकर श्रेय लोकप्रिय नाटककार जीवन झाकें छनि। बीसम शताब्दीक आरम्भमे ओ मैथिली रंगमंच क्षेत्रमे नवीनताक सूत्रपात करैत काशी प्रवासक दौरान पं. जीवन झा "सुंदर संयोग" आ "सामवती पुनर्जन्म" नाटकक रचना कयलनि आ रामनगरमे एकर मंचन कयल गेल। ओ मिथिलाक धोखरल रंग (मंच) केर नव रंग देबाक भागीरथी प्रयास कयलनि। मैथिली नाट्य- लेखनकें पुनर्जीवित ओ स्थापित करबामे लालदासक "सावित्री- सत्यवान" आ बादमे रंगमंचक दृष्टिसं मुंशी रघुनंदन दासक नाटक "मिथिला नाटक" केर मंचन केर सेहो महत्वपूर्ण भूमिका रहल छल।

कहल जाइत छैक कि मिथिलामे 'मिथिला नाटक' केर मंचने सं नाटकक व्यावसायिक मंचन प्रारम्भ भेल छल। बहरिया व्यावसायिक नाट्य- मंडलकें चुनौती देबाक लेल मिथिलामे स्थानीय रंगमंडलक गठन कएल गेल। मधुबनी नाट्य-संघ 9 (1932), नाट्य-परिषद, सरिसव पाहीक (केशव झाक), शेखपुराक उमाकांत झा आ आनंदकुमारक नाट्य-कम्पनी, विद्वान्नाट्य-परिषद, नवटोल (1937), नाट्य-परिषद, पिण्डारुछ, भद्रकाली नाट्य-परिषद, कोइलख सन नाट्य दल उल्लेखनीय अछि। मैथिलीमे व्यावसायिक रंगमंचक अभाव रहल अछि मुदा तइयो अव्यावसायिक रंगमंचक कलाकारलोकनि एकरा प्राणवन्त बनाक' रखने छथि। एहि दिशामे कोलकाता रंगमंच संस्था सभमे मिथिला कला केन्द्र (1960), 'मैथिली रंगमंच' (1966), 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' (1963), 'कूर्मी-क्षत्रिय छात्र-वृत्ति कोश' (1968), मिथियात्रिक (1971), आल इंडिया मैथिल संघ (1973), मिथिला मित्र संघ (1974), कर्ण गोष्ठीक जयंत लोकमंच (1983), कोकिल मंच (1990), मिथिला विकास परिषद (1983), मिथिला नव चेतना समिति, मिथियात्रिक झंकार, नव आयाम आदि सन नाट्य-संस्थासभ आ नव नाट्य आंदोलनक अनेक नाट्यकारक एहि दिशामे प्रेरित कयल। रंगमंचक क्षेत्रमे पटनामे नाट्यमंच (1972), 'रंगलोक', अरिपन (1984), भंगिमा (1984), चेतना समिति, आ दिल्लीक 'मैलोरंग', एवं 'मिथिलांगन' आदि केर सक्रिय सहयोगक फलवस्वरुप मैथिली रंगमंचक विकास तेजीसं भ' रहल अछि।

समकालीन मैथिली रंगमंचक विकासमे कैकटा नगर महानगरस्थ मैथिली नाट्य-संस्थाक अग्रणी भूमिका रहल अछि। मैथिलीक विकासक लेल प्रवासी मैथिल लोकनि जतेक प्रयास कयलनि ओतेक मिथिला क्षेत्रमे नहि भेल अछि। प्रवासी मैथिल रंगमंचकें अक्षुण्ण बना क' रखने छथि। एहन महानगरसभमे कलकत्ताक योगदान-अवदान अविस्मरणीय अछि। मैथिली आंदोलन सं ल' क' पोथी प्रकाशन आ नाट्यमंचन धरि कलकत्ताक भूमिका महत्वपूर्ण रहल अछि। कलकत्तासं शुरु भ' मैथिली रंगमंचक आभा पटनाक धरती पर पसरल आ मैथिली नाटक अपन नव करौट लेलक। कलकत्तामे प्ररम्भहि सं अनेकानेक नाट्य-संस्था अपन नाट्य-प्रस्तुति सं सक्रिय रहल अछि आ एखनो सक्रिय अछि। मिथिला विकास परिषद, कोकिल मंच, मिथिला नव चेतना समिति, मिथिला कल्याण परिषद, रिसरा, मिथियात्रिक झंकार, नव आयाम आदि सन नाट्य-संस्था आइयो रंगमंच पर बेस सक्रिय अछि आ नबका पीढीकें नाट्याभिनय दिस आकर्षित ओ प्रेरित क' रहल अछि। कोलकाताक रंगमंचक अधिकांश रंगकर्मी मैथिली, बांग्ला, हिंदी, भोजपुरी फिल्म, सीरियल, डॉक्युमेंट्री, लघु फिल्म आदिमे अभिनय क' अपन रंगमंचक अभिनय- अनुभवक प्रभावी प्रस्तुति केने छथि आ एखनो क' रहलाह अछि छथि। अपन अभिनय क्षमता सं मैथिल सहित आन आन भाषाक निर्देशक लोकनि बेस प्रभावित छथि। कोलकाता स्थित मैथिली रंगमंचसं जुड़ल कलाकार लोकनिसभमे शंभूनाथ मिश्रा, कोकिल मंचक नाट्य निर्देशक ओ अभिनेता गंगा झा दिनेश मिश्र, उत्तम चौधरी, सुधीर झा, रमेश मिश्रा, विवेक चौधरी, दिलीप चौधरी, संजय ठाकुर, विजय इस्सर, मिथिला विकस परिषदक अध्यक्ष अशोक झा, भवनाथ झा, रंजीत कुमार झा, रघुनाथ चौधरी आदि रंगमंचक साथ-साथ फिल्म, सीरियल, लघु फिल्म आदिमे सक्रिय छथि। महिला रंगकर्मीमे किरण झा (सम्प्रति नव आयामक अध्यक्षा), शशिता राय, पूजा पाठक, अंजना इस्सर, किरण इस्सर, आशा मिश्रा, गीता मिश्रा, रुपा चौधरी, आदि सक्रिय छथि। "पिया संग प्रीत कोना हम करबै", अप्पन गाम अप्पन लोक आ लघु फिल्म" सीए ब'र एमबीए कनिया"मे कलकतिया मैथिल रंगकर्मी सभगोटेक अभिनय देखबा योग्य अछि।

किछु दिन पहिने मिथिला विकास परिषदक अध्यक्ष श्री अशोक झा मैथिली लघु फिल्म 'नपुंसक' आ मिथियात्रीक झंकारक अध्यक्ष आ सुप्रसिद्ध नाट्य निर्देशक श्री शंभुनाथ मिश्र लघु फिल्म 'हमर नाम अछि कोरोना' केर निर्माणक घोषणा कयलनि अछि।

पटनाक मैथिल रंगमंचक नाट्य मंचनक क्षेत्रमे बेस सक्रिय छथि। चेतना समिति, भंगिमा आ अरिपन अपन अपन ढंग सं मैथिली रंगमंचकें कें ऊंचाई प्रदान करबामे लागल अछि। एहि नाट्य-संस्थाक कइकटा रंगकर्मी फिल्म, सीरियल आदिमे काज केने छथि आ अभिनय क' रहला अछि। प्रेमलता मिश्र प्रेम, छात्रानंद सिह झा, तनुजा शंकर, कणुप्रिया, कुमार शैलेंद्र, उमाकांत झा, कुमार गगन, राम बहादुर रेणु, संजय स्वराज, अमित अविचल, अनिल मिश्रा, संजीब पूनम मिश्रा, भास्कर झा, जीतेंद्र नाथ जीतू, सुरुचि वर्मा, हेमंत झा, स्वाति सिंह, रुपम चैधरी आदि भंगिमाक किछु लोकप्रिय रंगकर्मी फिल्मी दुनियामे खूब सक्रिय छथि आ विभिन्न फिल्म, सीरियल आदिमे काज क' रहल छथि। पटना दूरदर्शन पर प्रदर्शितमैथिलीक पहिल

टीवी सीरियल 'नैन न तिरपित भेल", सौभाग्य मिथिला पर "स्वर्ग नै बिनु मुइने", "एस.एन. झा के गजबे दुनिया", "मास्टर साहब", "आब कहु मोन केहन करैया" आदिमे मे अहि सभ रंगमंचक अधिकांश रंगकर्मी काज कयने छथि।

मैथिली रंगमंचके विकासमे दिल्ली के नाट्य संस्था मैथिली लोक रंग (मैलोरंग) के बहुत महत्वपूर्ण योगदान अछि। मिथिला कला ओ संस्कृतिके प्रचार आ प्रसारमे मैलोरंगक अहम भूमिका रहल अछि। देशक राजधानीके बीच अपन उपस्थितिसं ई दिल्लीके मैथिली रंगमंचीय गतिविधिक केन्द्र बनाबयमे सफ़ल भेल अछि। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा रंगमंडलक स्वीकृति पाबयवला पहिल रंग संस्था मैलोरंग विगत बारह-तेरह वर्ष सं मैथिली रंगमंच के समृद्ध करबामे लागल अछि। रंगमंचीय अवदान के संग फ़िल्म ओ सीरियल में कयकटा "मैलोरंगी'' अपन अभिनयक लोहा मनबा रहल अछि। एहि रंगमंचसं जुड़ल फिल्म कलाकारक सूची पैघ अछि। तथापि किछु प्रसिद्ध नाम अछि- शशि रंजन, दूर्गेश चौधरी, मनिषा झा, मनोज पाण्डेय, सोनिया झा, अमित अकेला, नेहा वर्मा, नीलम, निशा सुधा झा, सुधा झा, प्रीति सुमन, सत्या मिश्रा, शैल झा, विनोद साहा, शुभ नारायण झा, कल्पना मिश्रा, अनिल मिश्र आदि जे रंगमंचक संग संग बड़का पर्दा, छोटका परदा पर बेस सक्रिय छथि।

एहि प्रकारें देखल जा सकैत अछि जे एखुनका समयमे मैथिलीरंगमंच कोनो ने कोनो रुप मे राष्ट्रीय स्तर पर अपन गरिमापूर्ण उपस्थितिक भान करा रहल अछि। मैथिलीमे रंगमंचक विकास लेल आवश्यक समस्त महत्वपूर्ण चीज, यथा नाट्य-लेखन, नाट्य-दल आ दर्शक- सब किछु उपलब्ध आ उपस्थित छैक। परंतु दुखक बात जे भरतक आन रंगमंचक जेना ओतेक लोकप्रिय नहि। मुदा तैयो, मिथिला मैथिलीसं प्रेम रखयबला युवावर्ग अपन पुरखाक रंग-धरोहरकें नीक जका रखबाक प्रयासमे लागल छथि। गमैया नाट्यकर्मी ओ नाट्य-दल के छोड़ि दएल जाए तैयो आई पटना, दिल्ली, कलकत्ता आ नेपाल सभ ठाम मैथिली नाट्य- संस्था आ रंगकर्मी नाटकक मंचनक माध्यमे अपन सांस्कृतिक आ साहित्यिक धरोहर आ गौरवकें अक्षुण्ण राखि ओकर प्रदर्शन क' रहल छथि।

सिने-सीरियलमे सक्रिय मैथिली रंगकर्मी

सिनेमाकें दृष्य-श्रव्यक सबसं सशक्त माध्यम मानल जाइत छैक। भाषा, संस्कृति आ सभ्यताक कलात्मक अभिव्यक्ति करब रंगमंच आ सिनेमाक मूल उद्देश्य छैक। मनुक्खक विचार आ भावनाक अभिनयक सशक्त माध्यमके रुपमे रंगमंच आ सिनेमाक बीच एकटा महत्वपूर्ण अंतर-संबंध छैक। 1980-90 के दशकमे रंगमंचकें सिनेमाक समानांतर रुपमे देखल जाइत छलैक। बदलैत समयमे रंगमंच सिनेमा ओ फिल्ममे प्रवेशक लेल एकटा सोपान या 'स्टेपिंग स्टोन' मानल जाए लागल अछि। वस्तुत: साधल रंगकर्मक सफ़ल डेग सिनेमा दिस ल' जाइत छैक। मैथिली नाट्य संस्था एक तरहक 'स्कूल वा यूनिवर्सिटी' के रुपमे प्रयुक्त भ' रहल अछि।

रंगमंच अभिनय के साथ-साथ रंगकर्मीक व्यापक व्यक्तित्व आ सम्मानजनक पहिचान आ परिचिति केर निर्माण करबामे उल्लेखनीय भूमिकाक निर्वहन करैत अछि। रंगमंच पर अभिनय करयबाला रंगकर्मीक सिनेमामे सेहो अपन अभिनयक सुंदरतम प्रस्तुति प्रदर्शित क' राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता हासिल करय चाहैत छथि। मिथिलाक प्रतिभा अपन क्षमता आ अभिनयसं सिनेमा आ टीवीक क्षेत्रमे सेहो अपन परचम लहराबय चाहैत छथि। आ तैं आई मिथिल- मैथिली मंच सं जुड़ल अनेकानेक मैथिल रंगकर्मी मैथिली सिनेमाक अतिरिक्त हिंदी फिल्म, सीरियल, वेब सीरीज आदि मे खूब काज क' रहलाह अछि। मैथिली रंगमंच सं जुड़ल अनेकानेक रंगकर्मी आई सिनेमा जगतमे अपन पहिचान बनबयमे सफल भेल छथि। एहन रंगकर्मीलोकनिमे प्रख्यात साहित्यकार चंद्रनाथ मिश्र 'अमर', बटुक भाइ छात्रानंद सिंह झा, प्रेमलता मिश्र प्रेम, आस नारायण मिश्र, मिथिलाक मुजफ्फरपुर केर रहनिहार प्यारे मोहन सहाय, त्रिलोचन झा, कमलनाथ सिंह ठाकुर आदि प्रमुख छथि। ई सभगोटे फिल्म ओ सीरियलमे काज क' नवतुरियाक लेल प्रेरक व्यक्तित्व बनलाह।

एक दिस "कन्यादान"मे प्रख्यात साहित्यकार आ अपन समयक चर्चित नाट्यकार ओ रंगकर्मी चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनय क' एकटा नव शुरुआत कयलनि त' दोसर दिस "ममता गाबय गीत"मे प्रेमलता मिश्र प्रेम, आस नारायण मिश्र, प्यारे मोहन सहाय आ कमलनाथ सिंह ठाकुर अपन अभिनयसं सबकें आकृष्ट कयलनि। प्रकाश झाक 'दामुल'आ रमेश सिप्पीक 'भ्रष्टाचार' सन फिल्म कयलाक बाद 'मुंगेरी लाल के हसीन सपने' सन चर्चित सीरियलमे अभिनय केनिहार प्यारे मोहन सहाय एनएसडीके फर्स्ट बैच के फर्स्ट बिहारी/मैथिल छलथि। कमलनाथ सिंह ठाकुर पहिल मैथिली फिल्मयमे खलनायक केर भूमिका केने रहथि। विभिन्न सम्मानसं सम्मानित मैथिली रंगमंचक पहिल महिला रंगकर्मी एवं मैथिली, हिन्दी आ भोजपुरी फ़िल्ममें अभिनय केनिहारि साहित्यानुरागी प्रेमलता मिश्र "प्रेम'' भंगिमा, अरिपन, चेतना समिति, मैथिली महिला संघ आदि सहित बहुत रासे नाट्य संस्थासं जुड़ल छलीह। "ममता गाबय गीत"मे अजराक आवाजक डबिंगके संग-संग विधवा भाऊजक भूमिका केलीह। प्रकाश झाक फ़िल्म "दामूल", लक्ष्मण शाहाबादीक भोजपुरी फ़िल्म 'दूल्हा गंगा पार के", एकटा आरो भोजपुरी फ़िल्म " बबुआ हमार", मैथिली फ़िल्म " ससता जिनगी महग सेनूर", डीडी पटनाके लेल प्रमोद चौधरी द्वारा निर्मित धारावाहिक" पर्व भरा मिथिला', "देहाती दुनिया'में, सुनील कुमार (रायपुर, सीतामढी)क भोजपुरी फ़िल्म "माटी"में अभिनय सेहो कयलनि। ओ राष्ट्रीय फिल्म परस्कार सं सम्मानित फिल्म 'मिथिला मखान' मे सेहो उत्कृष्ट अभिनय कयने छथि। वरिष्ठ रंगकर्मी छात्रानंद सिंह झा उर्फ बटुक भाय सेहो मैथिलीक पहिल धारावाहिक "नैन ने तिरपित भेल''मे अपन अभिनय देखौने रहथि।

मैथिली आओर हिंदी रंगमंच सं सिनेमा जगत धरि पहुंच कए चर्चित होमयावला

युवा रंगकर्मीमे प्रमुख नाम अछि-, राम बहादुर रेणू, शशिरंजन 'बंटी', दुर्गेश चौधरी, सागर झा, अनिल मिश्रा, शुभ नारायण झा, संजीव पूनम मिश्रा, भास्कर झा, मनोज पाण्डेय, जीतेंद्रनाथ जीतू, सुरुचि वर्मा, सोनिया झा, सत्या मिश्रा, सुधा झा, निशा झा, भाषा झा, उमाकांत झा, मिथिलेश मिश्र, स्वाति सिंह, प्रीति सुमन, मनीषा झा, अमित अकेला, नेहा वर्मा, विनोद साहा, कल्पना मिश्रा, संतोष झा, उत्पल झा, हेमंत झा, संजीव स्वराज, भवनाथ झा, शंभूनाथ मिश्रा, दिनेश मिश्रा, उत्तम चौधरी, शशिता राय, पूजा पाठक, संजय ठाकुर, अंजना इस्सर, किरण झा, कुमार गगन, अमित अविचल, प्रेमचंद्र मेहता, तनुजा शंकर, कणुप्रिया, प्रवीण कुमार सिंह, विभा रानी आदि।

रंगमंच आ रोजगार/कैरियर

प्रतिभाशाली आ अनुरागी, समर्पित रंगकर्मी लेल रंगमंच एकटा स्कूलक रुपमे सदैव उपस्थित रहैत छैक। दत्तचित, लगन, समर्पणक निस्वार्थ भाव सं एकटा सफल रंगकर्मीके रुपमे अभिनयक हर गुण आ तकनीक के आत्मसात करैत जाइत छथि आ अंततोगत्वा एक साधल अभिनेताक रुपमे हुनक परिचिति बनि जाइत छैक। व्यक्तित्व निर्माणक अतिरिक्त, आत्मविश्वास आ इंटरपर्सनल संबंध कें माध्यमसं ओ एकटा संवेदनशील मनुखके रुपमे उभरि क' समाज ओ राष्ट्रक समक्ष सोझा ठार होयत छथि। आधुनिक समयमे रंगमंच एकटा कैरियरक रुपमे उभरि क' आयल अछि। बहुत रास नाट्य- संस्था जेकि सरकार द्वारा सम्पोषित अछि, एकरा कैरियर ओरियेंटेड बनबैमे महत्वपूर्ण भूमिका निभौने अछि। मैथिली रंगमंच सेहो धीरे- धीरे आब प्रोफेशनल बनबाक प्रक्रिया सं गुजरि रहल अछि। रंगकर्मी हो वा साउंड- लाइट व्यवस्थापक आकि निर्देशक, रंगमंचसं जुड़ल सभ गोटे सिनेमा आ सीरियल, विज्ञापन आदि से जुड़ि रहल छथि। कोलकाता हो वा पटना कि दिल्ली सभ ठाम के नाट्य-संस्थासं जुड़ल व्यक्ति मैथिली, हिंदी, भोजपुरी सिनेमा, धारावहिक, लघु फिल्म आदिमे अपन भाग्य अजमा रहल छथि, काज क' रहल छथि आबेस चर्चित भ' रहल छथि।

किछु वर्ष पहिले धरि रंगमंच कें फुलटाइम प्रोफेशनके रुपमे सोचब मोश्किल छल। मुदा आब रंगमंच रोजगारक अवसर प्रदान करय बला एकटा मेन स्ट्रीम करियर बनि चुकल अछि। यदि अहांक अपन व्यक्तित्वमे रचनात्मक अभिव्यक्ति सं दॉसरकें आकर्षित करबाक हुनर अछि त' अभिनयमे रुचि आ दमदार आवाज अछि त' ई गुण अहांक जीनगी सुन्नर बनेबाक दिशा देखा सकैत अछि। इएह कारण थिक जे आई ड्रामा या नाट्य विधाक प्रति युवावर्गमे तेजी सं क्रेज बढ़ल अछि। ड्रामा कें परफार्मिंग आर्टक दर्जा लगभग भेट गेल छैक। रंगकर्मकें सरकारी प्रोत्साहन आ अनुदान भेटलासं फिल्म मे रंगकर्मीक प्रवेश बढल अछि। सिनेमाक प्रत्येक क्षेत्रमे रंगमंचसं जुड़ल व्यक्ति कें रोजगार भेट रहल छैक। आब रंगकर्मसं आन आन व्यवसाय जेना नीक कमाईक क्षेत्र मानल जाइ लागल छैक। पहिने कहल जाइत छलैक जे रंगमंच रोजगारक चीज नहि, ई एकटा 'शौक' छैक। रंगमंचसं जीवनयापन नहि चलि सकैत अछि। एकरा पेशाक रुपमे नहि अपनायल जा सकैत छैक। मुदा आब जमाना बदलि गेल छैक। आब नाट्यकर्मीकें विविध प्रकारक अनुदान प्रदान कएल जाइत छैक। नाट्यसंस्थाकें सेहो आर्थिक सहायता देल जा रहल छैक। आब रंगमंचक क्षेत्र मे करिअर बनेबाक लेल छात्रवृत्ति सेहो भेंट रहल अछि। संक्षेपमे कहि जे रंगकर्ममे 'रोजगारकता' आ 'व्यवसायिकता' आबि चुकल छैक।

रंगमंचक व्यावसायीकरणमे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी)क स्थापना रंगक्षेत्रमे एकटा युगांतकारी घटना मानल जाइत छैक। 1953 मे स्थापित संगीत नाटक अकादमीके अंतर्गत राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय 1959मे अस्तित्वमे आयल छल। एनसडी अभिनय पाठ्यक्रम बना युवा रंगकर्मीके प्रशिक्षित क' रहल अछि। एनएसडीमे त्रिवर्षीय नाटक - अभिनय, मंचसज्जा, निर्देशन आदि संबंधी प्रशिक्षण द' रहल अछि। नाट्य-सिद्धांत एवं साहित्यक अध्ययनक संग-संग अभिनय, एक्टिंग, सीनक डिजायन, कॉस्ट्यूम डिजायन, लाइटिंग, मेक-अप, थियेटर आर्किटेक्चरक अध्ययन करवा रहल अछि। एहि प्रकारें देखि सकैत छी जे रंगकर्मक क्षेत्रमे आजीविकाक अवसर बढि गेल अछि। कला-कर्मक प्रति समर्पणक भाव सेहो बढ़ि गेल छैक।

रंगमंच फिल्मउद्योगक लेल कलाकारक आपूर्तिकर्ताक रुपमे बरका रोजगार बनि गेल अछि। रंगमंचके संग - संग रंगकर्मीलोकनि फिल्ममे काज क' रहल छथि। जेना राबर्ट एडिनबरोक हिंदी फिल्म "गांधी" हिंदी सहित आन आन भाषाक रंगकर्मी लेल अवसरक दुआरि खोलि देने रहैक तहिना मैथिली रंगकर्मी लेल मैथिलीक पहिल टीवी सीरियल 'नैन न तिरपित भेल" मीलक पाथर/टर्निंग प्वायंट साबित भेल। भंगिमा, अरिपन, मैलोरंग सहित कोलकाताक रंगकर्मीक लेल मीलक पाथर सबित भेल रहैक। एहि सीरियलक ई विशेषता रहय जे एहिमे भाग लेनिहार सभ रंगकर्मिये रहथि। तैं जे स्थान हिंदी रंगमंचक लेल "गांधीके प्राप्त अछि से मैथिलीमे मिथिला दर्शन द्वारा प्रस्तुत धारावाहिक "नैन न तिरपित भेल"के प्राप्त छैक। नैन न तिरपित भेल" डा. उदय नरायण सिंह 'नचिकेता' द्वारा लिखित नाटक "प्रत्यावर्तन" पर आधारित छलैक। संजीब पूनम मिश्रा, उत्पल झा, प्रतिभा कुमारी, स्मिता सिन्हा, विजयलक्ष्मी, शिवाणी, हेमंत झा, हेमंत झा, मधुमिता श्रीवास्तव, मौबनी सरकार, नीलेश कुमार, बसंत कुमार, पूनमश्री, भवनाथ झा, मोना झा, राजीव झा, छत्रानंद सिंह झा, रुपम कुमारी, खुश्बू कुमारी, किरण झा, आदि सन मैथिली रंगमंचक उदीयमान रंगकर्मी अपन अभिनय क्षमताक प्रदर्शन कयने रहथि। 'नैन न तिरपित भेल", "स्वर्ग नै बिनु मुइने", "एस.एन. झा के गजबे दुनिया", "मास्टर साहब", "आब कहु मोन केहन करैया" आदि सीरियल कतेको रंगकर्मीकें रोजगारक दुआरि देखौलक।

तथापि, मैथिली फिल्म शुरुआती एवं पछति किछु फिल्म ओ सीरियलक निर्माणक बाद ठमकि गेल अछि। एक दिस मैथिली फिल्म निर्माण गति बड्ड 'स्लो'

अछि तो दोसर दिस फिल्म बनियो गेलाक बाद ओकरा हॉल नहि भेट रहल छैक। परिणामस्वरुप, मैथिली फिल्म उद्योग के आन भाषाक फिल्म उद्योग जेना ठर होमयमे एखनो बड्ड समय लगतै। बिहार सरकारक पास एहन कोनो नीति नहि जे मैथिली फिल्मके सिनेमा हॉलमे प्रदर्शित करबाक लेल फिल्म वितरककें बाध्य करै। रंगमंच आ सिनेमा मिलिकए तहने किछु क' सकैत अछि जहन बिहारमे एकरा गंभीरता सं लेल जायत। रंगमंच आ फिल्म उद्योगक समीचीन विकासक लेल सरकारी स्तरे पर नहि वरन सभ स्तर पर बहुत किछु करबाक बेगरता छैक।

एहि प्रकारें देखल आ बूझल जा सकैत छै जे मैथिलीक समृद्ध नाट्य-सम्पदा, रंगमंचक सुदीर्घ परम्परा रहितो मैथिली रंगमंचक ओतेक लोकप्रियता नहि भेट सकल अछि जतेक कि भेटबाक चाही। मैथिलीमे व्यावसायिक रंगमंचक बड्ड अभाव अछि। मैलोरंग जकां आनो मैथिली नाट्य-संस्थाकें "सरकारी अनुदान पयबाक लेल रंगमंडल'क दर्जा लेबाक लेल प्रयास करबाक चाही। दोसर दिस मैथिली फिल्म निर्माण आ ताहू संबेसी सिनेमा हालक अनुपलब्धता मैथिलीक समक्ष एकटा पैघ समस्या छैक। राष्ट्रीय पुरस्कार सं सम्मानित मैथिलीक फीचर पहिल फिल्म 'मिथिला मखान' केर पर्दा पर प्रदर्शन एखनो प्रतीक्षित छैक। मैथिली युवा सिनेकर्मी छोट-छोट फिल्म बना, सीरियल, यू-ट्यूब बना मैथिलीक मनोरंजन क्षेत्रकें वाइब्रेंट राखने छथि। 'कवि कल्पना', 'नमो नारायण', यू-ट्यूब पर प्रसारित 'लाल काकी' आ अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शित फिल्म 'गामक घर' बड्ड लोकप्रिय भेल अछि। खएर, एतेक तं कहले जा सकैत अछि जे जाहि भाषा आ साहित्यक इतिहास एतेक प्राचीन छैक ओकरा लेल अपन भविष्यकें सुन्नर करब ओतेक मोश्किल नहि। आवश्यकता छै जे हम सब अपन भाषा, साहित्य, संस्कार आ संस्कृतिकें बचाकए राखी। ■

संदर्भः

1. कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा ,श्रीचंद्रनाथ मिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी,दरभंगा,पृण संण 25
2. अबारा नहितन, केदार नाथ चौधरी, इंडिका इंफोमीडिया, नई दिल्ली, पृण संण 83
3. मैथिली नाटक ओ रंगमंच, डाण प्रेमशंकर सिंह,मैथिली अकादमी, पटना, पृण संण 169,176, 279
4. मैथिली नाटकक विकास, संण देवकांत झा एवं दिनेश कुण झा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृण संण 186, 187
5. रंगमंच का जनतंत्र, ;षिकेश सुलभ, राजकमल प्रकाशन, 2009, पृण संण 66-67
6. मिथिला दर्शन (प्रवेशांक), कोलकाता, मई-जून 2009, पृण संण 58
7. मैथिली दर्पण, मुम्बई, (आलेख-मैथिली सिनेमाक 50 वर्ष, भास्करानंद झा भास्कर),अगस्त 2013, पृण संण 44
8. प्रेमलता मिश्र ' प्रेम' केर साक्षात्कार, http://maithilicinema.blogspot.com/2013/02/premlata-mishra-prem-veteran-artist.html
9. "Mithila Makhaan" Bags the National Award for Best Film in Regional Language, http://maithilicinema.blogspot.com/2016/03/mithila-makhana-bags-national-awards.html

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

पाठकगणसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आ एहि सं जुड़ल मुदा पर मैथिलीमे प्रकाशित ब्लाइंड पीयर रिव्यू प्रणालीक' शोध पत्रिका अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सं जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहां कें सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता अछि। एहि शोध पत्रिका कें आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ एहि सं जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' केर पांच वार्षीय सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' केर सालमे चारि टा अंक प्रकाशित होयत।

मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका,
नियमित सदस्यताः
पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका

*(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सं पठाओल जायत, जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि) सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर चेक/ ड्राफ्ट सहित **'अखिल भारतीय मिथिला संघ'** केर नामे कार्यालयक पता पर पठाबी वा*
teerbhuktimaithili@gmail.com
पर मेल करी।

पत्राचार पता :
तीरभुक्ति, 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

सदस्यता क्रमांक ....

दिनांक ....

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी। हमर विवरण निम्नलिखित अछि–

नाम : ....

पता : ....

....

....

मोबाइल नं. ....

उम्र : .... पेशाः ....

शिक्षा : ....

शुल्क विवरण :

☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

भुगतान :

☐ नगद (विवरण) ....

....

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ....

....

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ....

....

नोट : चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि–

बैंक खाता विवरण

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ

(A khil Bhartiya Mithila Sangh)

खाता संख्या : 11084229861,

आईएफएससी कोड : SBIN0000691

एमआईसीआर कोड : 110002087

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

तीरभुक्ति प्राप्ति स्थल

दिल्ली : **विजय चन्द्र झा / विद्यानंद ठाकुर**
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9650461788, 9717539000

: **प्रकाश झा**
'रंगप्रसंग', राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9811774106

: **भास्कर ज्योति**
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, मो. 9015753660

गाजियाबाद : डॉ. ममता ठाकुर, मो. 9717258787

गुवाहाटी : प्रेमकांत चौधरी, मो. 9435342658

हैदराबाद : मनोज शांडिल्य, मो. 9866077693

दरभंगा : प्रो. भीमनाथ झा, छपकी परड़ी, लक्ष्मीसागर, मो. 9430827936

झंझारपुर : आनंद कुमार झा, मो. 9939041881
: सोनू बुक कॉर्नर, मो. 9931291259

मधुबनी : सुनील कुमार झा, जानकी मैथिली पुस्तक भंडार, मो. 9473115956

मुंबई : विभा रानी, मो. 887970891

पटना : शिव पुस्तक भंडार, विद्यापति भवन, पटना, मो. 9905281145
: किताब कोनचर, लगिचः सदाकत आश्रम, गोसाईं टोला मुंहपर, पटना- 800010 संपर्कः 9955995509

भागलपुर : प्रो. केष्कर ठाकुर, मो. 9430457204

सहरसा : अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज' मो. 9771006810

रांची : कृष्णमोहन झा 'मोहन', मो. 9835903711

मधेपुरा : अरविन्द श्रीवास्तव, मो. 9431080862

समस्तीपुर : नरेश कुमार 'विकल', मो. 9430244114

कोलकाता : लक्ष्मण झा सागर, मो. 9903879117

सिलचर : स्वाती शाकम्भरी, मो. 9213152822

सुपौल : केदार कानन, मो. 7004917511

रायपुर : मनीष कुमार झा, मो. 9425517092

कला आ मिथिला के कला : विमर्श-भूमिका

✍ कुणाल

पांच दशक सं मैथिली रंगमंच व सिनेमा जगत के लेल समर्पित प्रख्यात शख्सियत कुणाल के मूल नाम शिव नारायण झा अछि। दूरदर्शन, पटना सं प्रसारित मैथिलीक पहिल टेलीफिल्म 'नैन न तिरअपित भेल' के पटकथा लेखक। मैथिली मे 100 सं बेसी नाटक के रचनाकार। दू दर्जन सं बेसी लघुकथा संग्रह प्रकाशित। 100 सं बेसी कविता विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित। संप्रति 'मिथिला दर्शन' के कार्यकारी संपादक।

गप्प-सप्प केर क्रम मे, जखन कखनो हम सब गंभीर होइ छी त साहित्य-कला-संस्कृतिक मादे बाजय लगइ छी, सूनय लगइ छी, सोचय लगइ छी। किछु एना बात करइ छी की जाइ सं लगइ छइ जे हमरा सभक संस्कृति, बड़ महान... एहि महान संस्कृतिक उदाहरण अहां की रखइ छी, से महत्वपूर्ण छइ।

हम अहां, साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजन रखइ छी। ओइमे भाषणक बाद, आकर्षणक लेल एकटा लोभ, जकां, जकरा लेल, लोक भाषण-त्रासदी के सहि जाए। ओ सब होइए गीद-नाद, नाटक-नाच झमकउआ। एकरा सांस्कृतिक कार्यक्रम कहल जाइ छइ।

संपूर्ण संस्कृति नइ। एकरा संग मिथिलाक सामाजिक अवचेतन मे एकटा मजेदार प्रक्रिया छइ! एहि कार्यक्रम माने सांस्कृतिक कार्यक्रम करइ वला भद्र लोक ताबत तक नइ मानल जाएत जाबत तक ओ फिल्म अथवा टी.वी. की नेट पर स्थापित नइ भ' जाइ। उच्च पदस्थ अधिकारी वा व्यापारी नइ हो। ओतय तब सब जाए चाहइए। मुदा अइ मे समाज ओकर कोनो सहयोग नइ करइ छइ। ओ खाली देखि दइ छइ, खाली सूनि दइ छइ। समाज एकर आर्थिक पोषण नइ दइ छइ। बैचारिक पोषण नइ दइ छइ। कखनो एकर कला वा, एकरा पर बात नइ करइ छइ। वास्तव मे त' जे एहि अवस्था माने मेकिंग पिरियड मे एकरा बहसल, आवारा, लूज-कैरेक्टर, अश्लील आ कखनो क' अस्पृश्य सेहो बूझल जाइए। मंच से बाहर ई नचनिया, बजनिया, नटकिया होइछ। ...आब कहू! जे एहन लोक द्वारा संचालित कला कय केहन हएत? संस्कृतिक केहन अंग बनत? कने सोइच क' कहू! जे हमहीं सब एहन संस्कृति के लेल की करइ छी।

मोटा-मोटी बाजी त नाच-गान, संस्कृति हिस्सा अनिवार्य कयहिया सं अइ। आर तखन पूलकी बात सब सेहो छइ... चलइन, आदइत, सिद्धांत विधान, व्यवहार, संबंध, आ..., परंपरा, श्रुति, स्मृति-विस्मृति होइ छइ... ओ सब किछु जे जीवन मे होइ छइ, सैह सब साहित्य मे होइ छइ आ संस्कृति मे होइ छइ माने कला मे होइ छइ; आचरणक अनुरूप!

संस्कृति माने कला। जीवन जीबाक कला। जकर विधान समुदाय स्वयं बनओने वा बिगाड़ने अइ...

मोटा-मोटी बात, कला पर आबि जाइए! त एतय स्थूल रूप सं बात शुरू भ' सकइए!

मैथिली मे कला-विमर्श विरल अइ। एइ भाषाक पत्र-पत्रिका मे यदा-कदा नाटक-रंगमंच पर, कहियो काल लिखिआ-कढ़िया-सिबिया पर, लूरि पर, एक-आध बेर कोनो आनो पर लीखल गेलए। बस! ओइ सब पर कखनो कोनो बहस नइ भेलइ। ने लिखित आ ने मौखिक। 1975 सं पहिन कोनो पत्र-पत्रिका मे एहन कोनो स्तंभ नइ होइ! पहिल बेर शिखा मे (1975), तखन अंतिका (2002) मे रंगमंच पर फराक स स्तंभ छल। आन किछू पर अहू सब मे कोनो खास नइ छपल। रंगमंच पर बेसी बात भेल अइछ, मात्र रंगमंच केन्द्रित पत्रिका बहराएल, परन्तु बहस एत्तहु नइ! सबठाम बात 1984 सं पहिने कलकत्ता स' रंगमंच

संपर्क : फ्लैट नंबर-302, राजलक्ष्मी रेजीडेंसी, बी-35, बुद्ध कॉलोनी, पटना-800001, मो. : 9334339348

(एक अंक) आ लोक रंग (तीन अंक) तखन 1984 सं पटना सं भंगिमा पत्रिका (सबसं बेसी अंक एकरे प्रकाशित छइ...) आ दिल्ली सं मैलोरंग... एखन इहो इनू पत्रिका बंद अइ!

2006 सं कोलकाता सं मिथिला-दर्शनक नव प्रकाशन शुरू भेल। एकर एकटा स्तंभ अइ-चंउसइठ कला। मैथिलीक साहित्यकारिता मे ई सर्वथा नव छल आ अइ। परंतु नाम चंउसइठ कला रखितो बेसी बात रंगमंचे पर भेल बाकी मे किछु पर यदा-कदा प्रकाशित भेल। ...प्रश्न उठि सकइए जे एना किए? एकर उत्तरक खोज कएल जा सकइए एहि सं आगा सहयोग हेतइ। मुदा एखन पहिने आवश्यक छइ कला पर बात करबाक निरंतरता बनाओल जाए। ई काज मैथिली मे प्रकाशित होब' बला पत्र-पत्रिका सभक छइ! छइ की नै?

परंतु प्रकाशित त' तखन ने हएत जखन कला पर विमर्श हएत। त' आइ! हम सब कला पर बात करी-मोटामोटी!

कला! एइ शब्दक उच्चारण सं मोन मे की उचरइए? मोनक परदा पर की देखाइए। हृदयक कान मे की सूनाइए? अथवा ज्ञान-कटोरी सं की बहराइए?

हम किछु उदाहरण दइ छी...

जे नैसर्गिक प्रतिभा आ अर्जित-संस्कारक प्रभावोत्पादक प्रकटीकरण छी कला! (हमरा अर्जित संस्कार पर शंका छल, तखन बूझाएल जे अर्जित माने विद्यालय वा गुरु टा सं शिक्षा नइ, घरो सं सीखनाइ सेहो अनायासे, जत कोनो कला-रूप निर्माणक परंपरा होइ।)

जे कला देवताइ लक्षण छी (... सेत पहिने कहलौं जे लोक मे सामान्य कलाकारक की छवि आ स्थिति छइ? तखन, अपना मे दैवी गुणक अनुभव कएल जा सकइए...)

जे कथा जीवनक सार आइ। (?)

जे कला सौंदर्य बोध आइ! (अइठाम सौंदर्य कला बात फंसइए। सौंदर्य की?...)

जे कला सं मोन मे सुखक भाव जगइए आ आनन्द-आह्लादक सृजन करइए, श्रवण करबइए वा दरसन करबइए। (...अइठाम सुख, आनन्द, अह्लादक पेंच सब छइ... ओना इत वैह बात आइजे उदाहरण देब सं पहिने कहने रही।)

कलाक वर्णन पूर्णतया असंभव। मोटामोटी सउंसे ब्रह्मांड आइ सृष्टि कलाक प्रत्यक्ष रूप अइ। (अइठाम कोनो पेंच नइ बूझाइए। एकदम साफ छइ। जे देखाइए, बुझाइए अब कला... परन्तु अतिशय विस्तारक खतरा त छइहे...)

जे कला संजीवनी अइ। जीवनक सब गतिविधि कला अइ! जेना चेतना, आत्माक लक्षण, तहिना जीवनक लक्षण अइ, कला। जीवधारीक समस्त क्रिया कला, तैं सब जीवधारी कलाकार... हं। पइघ कलाकार ओ जे अपना संग आनक जीवन के मनोहर, उत्कृष्ट आ सुंदर रूप मे प्रस्तुत करए... (एत्तहु विस्तार-व्याधि छइ। संग मे मनोहर, उत्कृष्ट, सुंदर के पेंच छइ... की मनोहर? ककरा लेल मनोहर? की सबहक लेल? नइ त किए ने? इंत केना?...)

जे कला अभिव्यक्ति अइ। भावनाक सौंदर्य से अभिव्यक्ति जे सापेक्ष आ लौकिक अइ। एतहु भावना सौंदर्य आ लौकिक के पेंच छइ...)

हमरा लगइए जे एहि निष्कर्षक लेल उदाहरण पर्याप्त भेल जे कलाक मादे, मूलकी उपमा-उपमान छै, विशेषण अलंकार छइ, पर्यायवाची छइ, दृश्य-विधान छइ। एइ सभक बीच, हमर मानब अइ जे कला अभिव्यक्ति अइ। अभिव्यक्तिक आत्यंतिक कामना होइ छइ जीवनक उत्कर्ष। उत्कर्ष माने ओ प्रक्रिया जाइमे हम अधलाह के अनुभव करइ छी आ ओइ सं मुक्तिक अनवरत प्रयास करइ छी। एक संपूर्ण जीवनक लेल प्रयास करइ छी। त, हमरा नइत, वाधक तत्व सबसं ऋणात्मक उर्जा सब सं, आंइत-आंइत के विरूपता सं निरंतर संघर्षक अभिव्यक्ति अइ कला। ई अभिव्यक्ति सापेक्ष अइ, दैनंदिन क उपयोग अइ। ई सत्य आ शिव संग, अवधारणाक अनुरूप सुंदर अइ। एत विरोध, विकल्प, सहमति, सलाह, जोड़-घटाव... सब कछूक संभावन रहइ छइ। एकरा बिना ओ अपडेट नइ भ' सकइए...

निरपेक्ष कला मात्र शोभा हेतु स्थापित रहइए, अचल रहइए, ओकर गति जं छइहो त ओ मात्र कलाक लेल जीवनक लेल नइ।

संस्कृत वाङमय मे कला पर बेस विमर्श छइ। विभिन्न दृष्टिकोण सं देखल गेल छइ। वर्गीकरण-नामकरण भेल छइ। लक्षण सभक निरूपण छइ। कला विमर्श के, ओकर अध्ययन सं लाभ हेतइ। कला के पहिने केना देखल-जानल-बूझल गेल छइ से जानकारी हेतइ...

यजुर्वेदक तेसर चारिम अध्यायक-22, टा मंत्र आ लणित विस्तारक अनुसार कलाक 87 टा भेद छइ! कामसूत्र, प्रबंध कोष आ शूक्रनितिसारक अनुसार कलाक भेद 64 टा छइ। बेसी चर्च एहि चंउसइठ कलाक छइ! जं गूगल बाबा लग नइ जाए चाहीत' हम एत चंउसठियो कलाक नाम गना दइ छी।

गायन, वादन, नर्तन, नाट्य, चित्रकारी, विशेषक, अरिपन, पुष्पशय्या निर्माण, अंगरागादि लेपन, पच्चीकारी, शयन-रचना, जलतरंग वादन, जलक्रीड़ा, जलाघात, रूप-सज्जा, माल्य-निर्माण, मुकुट-पाग निर्माण, वेश-परिवर्तन, कर्णाभूषण निर्माण, इत्र बनओनाइ, आभूषण धारण, जादूगरी, कुरुप के सुंदर बनोनाइ, सिलाइ-कढ़ाइ, कलावंत, बुझअउइल, अंत्याक्षरी, पुस्तक वाचन, काव्य-समस्या पूर्ति, दर्शन, दरी-गलइचा निर्माण, सूत कटनाइ, बढ़इगिरी, वास्तु कला, रत्नपरीक्षा, धातुकर्म, वृक्ष-चिकित्सा, बागवानी, कुतर्क-विकल्प, नाटक-आख्यायिका, बेंत उपस्कर-निर्माण, पशु-पक्षी युद्ध करबाओनाइ, पशु-पक्षीक बोली जननाइ, मालिस केनाइ, केश-सज्जा, गुप्त-कूट-भाषा ज्ञान, विदेशी कला ज्ञान, देशी भाषा-ज्ञान, भविष्य-कथन, कठपुतली नाच, सूनल बात अविकल दोहरओनाइ, आशु-काव्य कर्म, भाव के अनइट क बजनाइ, धोखा-छल, समस्त कोश के ज्ञान, समस्त छन्दक ज्ञान, वस्त्र-गोपन, जुआ, मंत्र-विद्या, बाल क्रीड़ा, शिष्टाचार, वशीकरण, व्यायाम, भविष्य-कथन।

एइ सूची के ठीक सं देखब त' साफे लागत जे जीवनक लेल आवश्यक अधिकांश बात, क्रिया आ आवश्यकता के कलाक श्रेणी मे राखल गेलए। परंतु अन्न उपजओनाइ एइ सूची मे नइ अइ। तहिना युद्ध कला सेहो फराक सं नइ अइ। हं, एकरा व्यायामक अंतर्गत राखल जा सकइ छइ। हं, कृषि, प्रशासन,

सामान्य शिक्षा, न्याय, आवागमन माने छूटकाइ। सबके सेहो कला माइन ली, 63 सं आगां, त' कहले जा सकइए जे जीवनक सबकिछु भेल कला आ समस्त जीब कलाकार... ई मानियो क' बहुत किछु कला सं बाहर रहिते छइ आ कला जीवन नइ, जीबनक लेल होइ छइ। जे जीवनक लेल होइ हइ, ओकर वर्गीकरणक प्रक्रिया चलइत रहइए। एहि मे प्रभावी होइ छइ विश्वक घटना आ दृष्टिकोण। एक प्रक्रिया मे पहिने कलाक चाइर टा मुख्य प्रकार स्थिर भेल अइ...

1. प्रदर्श कला : गायन, वादन, नर्तन, नाट्य...

2. दृश्य कला : मुर्ति रचना, भित्ति चित्र, भूमि चित्र।

3. ललित कला : चित्रकारी

4. लोक कला : लोक द्वारा प्रयुक्त प्रदर्श कला, दृश्यकला आ ललित कला... लोक माने, अभिजन सं फराक श्रमजीवी-सर्वजन। ई प्रक्रिया चलि रहल छइ। कला-रूपमे निम्न बिस्तर यैह छइ। ई बिस्तर सब अइ;

5. स्थापत्य कला : भवन निर्माण।

6. पाक कला : भोजन निर्माण।

7. मीडिया कला : प्रिंट इलेक्ट्रोनिक मीडियाक काज।

8. फैशन कला : ड्रेस आ एसेसरीज...

देखबाक बात ई छइ, जे प्रदर्श, ललित आ दृश्य कला होइतो, लोक-कला फराक किए? ओ लोक सं नि:सृत अइ तैं। अभिजन सं फराक अइ, तैं! त' हम एइ निष्कर्ष पर पहुंचइत छी जे मूख्यत: कलाक दूइए टा व्यापक भेद छइ:

1. अभिजन कला।

2. लोक कला।

अभिजन कला के आधुनिक कला कहल-मानल जाइए। आधुनिक माने की? इसकूल-कॉलेज मे पढ़ाओल जाइए, संभ्रांत लोक सब द्वारा देखल-गूनल-कीनल जाइए, शहरक गैलरी, आडिटोरियम बगैरह मे शोभायमान होइए...

लोक-कलाक लेल एइ सब चीजक कोनो मतलबे ने होइ छइ... ओत' पीढ़ी-दर-पीढ़ी गतिमान बहइए तैं ओ आधुनिक नइ भेल। पारंपरिक अइने! तखन आधुनिक माने छिन्नमूल? लोक कलाक कच्चा माल प्रकृति सं भेटइ छइ, फलत: अभिव्यक्ति प्राकृतिक होइ छइ। तैं ई आधुनिक नइ? लोक-कला कृत्रिम आ अति अलंकारिक नइ, तै ओ आधुनिक नइ! त की आधुनिकता बस ड्रेस-कोड अनुपालन टा अइ?

एत सं मिथिला-कलाक बारे मे बात आरंभ भ' सकइए... जत्ते कलाक बात ऊपर भेलए ओ सबटा आरो बहुत कला भेल छइ मिथिला मे, बहुतो आइयो बांचल छइ। एकटा त' संसार मे झंडा फहरा नेने छइ आ आब अपना स्थान पर शरयंत्री होबाक प्रक्रिया मे छइ।

कला के अहां कोनो अंखिए देखी, शास्त्री आंखिए, पछिमी आंखिए कि अपना आंखिए। हमरा अपना कला के गंभीरता सं देखक चाही। ओकर रूप-रंग, छइब-छटा, चकमकी-रमरम्मी... सबटा के देखक चाही... एखन तक जे देखलहु से कनडेरिया सं बेसी नइ।

हम जत्ते देखब-बाजब, हमरा ततेक पता चलत जे हमर कला-रूप सब की छल आ की अइछ? कहेन छल आ केहन अइछ...

कहबाक-लीखबाक ढंग, हमर प्रवृत्ति आ हमर प्रकृति... ई सबटा भाषा-क्षेत्रक सांस्कृतिक पहिचान होइए। एत ओकर शैली छइ, शिल्प छइ... सबहक अपन व्याकरण छइ... मिथिलाक कला रूप के ठीक सं देखबाक आवश्यकता छइ। उदाहरण के लेल परिचिते रूप के लइ छी-मिथिलाचित्र... नइ। ई किछु गोटे कहइ छी। सर्व प्रचारित नाम छइ मधुबनी पेंटिंग। लिखिआ केओ नइ कहइ छइ!

लिखिआ, स्त्रीगण-मात्रक लेखन। नइ जाइन कहिया सं अनवरत चलइत। अन्हारे मे धाई-धाई क बढ़इत... फेर ओ प्रकाश मे आएल, क्लोज्ड मिथिला भूमि सं ओपेन वर्ल्ड मे। केना आएल से सब जनइ छी। मुदा ओही समय मे दू टा परिघटना भेलइ, पहिल- स्त्रीगणक एकाधिकार समाप्त भ' गेल। पुरुष लोकनि प्रवेश कलइन आ दोसर, नामकरण भेलइ- मधुबनी पेंटिंग। आगां चइल क' किछु खटकइ त' समन्वयवादी नाम देलथिन मिथिला पेंटिंग। लिखिआ-अरिपन, दूनू एइ मे शामिल। एना मधुबनी पेंटिंग मे सेहो छल। आब, लिखिआ-आखिर नहिए जकां बांचल अइ।

त आब मिथिला-चित्रक लेल तीन टा नाम अइ-

1. लिखिआ।

2. मिथिला पेंटिंग।

3. मधुबनी पेंटिंग।

तीनू नाम तीन चरण, तीन अवस्था अइ। अतीत आ वर्तमान अइ। एकरा देखनाइ बेस मनोरंजक होब' बला अछि।

लिखिआ, उत्सवधर्मी अइ। काल-खंड मे बान्हल आइ। एक पीढ़ी सं दोसर मे सहज रूपांतरित होइत गेल... कोनो आन आदइत जकां... थीम छइ, मंगलकामना। रंगक प्रयोग बस सहयोगी भाव टा रहइए। लिखिआ मे ई बात साफ छइ। ओत कत्तहु सं प्रदर्श-विचार नइ छइ। देखेबाक सूर-सार नइ छइ। प्रतीक छइ, जे स्व-निर्मित छइ। कला छइ जे ओकरे कथा छइ। आर, कथाक कोनो मतलब है। उद्देश्य छै।

लिखिआ हमरा थीमेटिक चित्र लेखन बुझाइए। एत रूप-कलाकारी रुझान न्यूनतम छइ। तैं लिखिआ जनवादी कला छल।

मधुबनी पेंटिंग तुरंत प्रदर्श-वस्तु भ' गेल। रूप तेजी सं प्रभावित भेलइ। लिखिआ स संपर्क कमतर भेल आ फेर समाप्त भ' गेलइ। नामकरण के ल' क' बौद्धिक असंतोष के चलते नव नाम एलइ मिथिला पेंटिंग। एत थोड़े गंभीरता छै। लिखिआ स काम चलाउ संपर्क छइ। मुइल लिखिआ कोनो काजक त' छइ नइ! त' रंग-रेखा पर बेसी ध्यान रहलइ। माने रूपवाद प्रभावी भाव बनइत गेल। तइयो मिथिके सही, मिथिला नाम सं एकटा थीम त' बनइ छइ। तैं हम एकर थीमो-डेकोरेटिव कहइ छी... ई तेजी सं ललित कला बनक लेल बढ़ि रहलाए... मधुबनी पेंटिंग बस बनिज आइ। धंधा... एत डिमांड के अनुसार सप्लाइ छइ। वैह, एकर लाइफ लाइन छइ। ई पूरे रूपनायी आइ। निरपेक्ष, शोभा हेतु आइ। ओनली डेकोरेटिव।

त' आब मिथिला पेंटिंग अइ आ मधुबनी पेंटिंग अइ। बस...! खाली लिखिइया टा मइर गेल।

छांह महक पादप, बाजारक रौद मे मउला गेल। मरि गेल। ■

अरविन्द अक्कूक नाट्य-शिल्प

✍ प्रमोद कुमार सिंह

लेखक तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालयक मैथिली विभाग सं 'अरविन्द अक्कूक नाट्य शिल्पक समालोचनात्मक अध्ययन' विषयमे पीएचडी कए रहल छथि। ओ मैथिली विषय मे नेट आ जे आर एफ सेहो उत्तीर्ण छथि।

युग परिवर्तनशील अछि आ तें एहि परिवर्तनशीलताक कारणें तत्कालीन साहित्य सेहो परिवर्तित भ' जाइत अछि। कारण नाटककार लोकनि यैह सोचैत छलाह जे कि मैथिली नाटकक रचना वैह पुरान परिपाटी पर कयल जाए अथवा मानव जीवनक यथार्थ क्रिया-कलाप आ सहज-स्वाभाविक बोधगम्य भाषामे? ई देखि कहल जा सकैछ जे मैथिली नाटकमे परिवर्तनक स्वर मुखरित कयलक। नाट्यकार लोकनि वर्तमान जीवनक शिक्षा-दीक्षा, राजनैतिक, धार्मिक एवं आर्थिक समस्या पर आधारित कथासूत्रकें अपन नाट्य-रचनाक उपजीव्य बेनौलनि जकर स्वर्णिम परिणाम थिक मैथिलीक नाट्य-शिल्पक उपलब्धि।

आदि कालहिसं नाटककें एक विशिष्ट कलाक रूपमे जानल जाइछ। किन्तु प्राचीन एवं आधुनिक नाटकमे आकाश-पातालक अन्तर आबि गेल अछि। भारतीय भाषा ओ साहित्य पर पाश्चात्य साहित्यक यथार्थवादक प्रभाव पड़ल। एहि क्रममे मैथिली भाषा ओ साहित्य ओहि प्रभावसं अपनाकें असम्पृक्त नहि राखि सकल। एहि संबंध मे मैथिलीक प्रयोग धर्मी नाटककार सुधांशु 'शेखर' चौधरीक मन्तव्य छनि- 'नाटककें जीवनसं जोड़बाक प्रयत्नस्वरूप जे वस्तु जन्म ग्रहण कयलक अछि सैह थिक आधुनिक नाटक। आधुनिक नाटकक प्रदर्शन-स्थलमे आब लोक एहि हेतु नहि जुटैत अछि जे ओ जीवनसं बाहरक वस्तु देखत, अतिशय नाटकीयता ओ चमत्कारपूर्ण घटनासं अपनाकें विभोर करत। वस्तुत: लोक आब नाटक देखैत नहि अछि, नाटकमे अपनाकें ताकल जाइत अछि। एहि स्थितिकें दोसर ढंगसं कहल जा सकैत अछि जे प्रेक्षक आब नाटक भोगैत अछि, आब ओ नाटकक क्षण जीबैत अछि। आधुनिक नाटकक परिभाषा एहिसं भिन्न आर की भ' सकैत अछि।''[1]

वस्तुत: आधुनिक मैथिली नाटक आब मनुष्यक कथा कहैत अछि, ओहि मनुष्यक जे ओहि नाटकमे अपन भोगल यथार्थक दर्शन क' स्वयं दर्शक रूपें उपस्थित रहैत अछि।

मैथिली नाट्य-शिल्प मे सेहो परिवर्तन भए गेल अछि आ से कोन तरहक परिवर्तन भेल अछि ताहि प्रसंगमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक विचार अछि- 'नाट्य-शिल्पक दृष्टिसं सेहो महान परिवर्तन भ' गेल अछि। आधुनिक नाटकमे प्राचीन नाटक जकां पांच सं ल' क' अंक होयब अनिवार्य नहि अछि। वस्तुत: आधुनिक नाटकमे कम-सं-कम अंक होइत अछि आ दृश्य परिवर्तनक सेहो पूर्ण ह्रास भेल अछि। जे नाटक जतेक तीव्र होयत, जाहि नाटकक कथ्य जतेक जटिल होयतैक, ततबे ओकर कथाक परिवेश छोट होयतैक, ततबे कम ओकर दृश्य बदलतैक। इहो भ' सकैत अछि जे एके अंक मे नाटकक पूर्ण निर्वाह भ' जाए किन्तु तें तहन नाटककें एकांकीक संज्ञा नहि देल जा सकैत अछि। जें कि नाटक आ एकांकी पृथक-पृथक विधाक रूपमे ग्राह्य भ' चुकल अछि तें ओकर नाट्य-तत्व परिवेशादिमे भिन्नता होयबे करतैक। आधुनिक नाटकक विशेषता ई अछि जे एहिमे कम-सं-कम पात्रक प्रयोजन होइत अछि। असलमे पात्रक चरित्र चित्रण, मानसिक स्थितिक निदर्शन आधुनिक नाटकक प्राण बनि गेल अछि आ तें घटनोक संयोजन एहन कयल जाइत अछि जाहिमे क्षिप्रता ओ गतिशीलता अधिक होइछ।''[2]

संपर्क : ग्राम-शिवनगर, पोस्ट-संस्कृत निर्मली, थाना बलुआ बाजार, जिला-सुपौल (बिहार), पिन-854339, मो. 8405021398, ईमेल : pramodkrsinghsk@gmail.com

मैथिली नाट्य-शिल्पमे विविध परिवर्तन भ' गेल अछि। पहिने प्रख्यात कथानक आ प्रख्यात नायकक चरित्र पर बल देल जाइत छल, मुदा आब से बात नहि। आधुनिक नाटकक नायक क्यो भ' सकैछ अछि, कोनो वर्गक भ' सकैत अछि, कोनो वर्ण आ कोनो जातिक भ' सकैत अछि, केहनो चरित्रक लोक भ' सकैत अछि। यैह कारण अछि जे परंपराशील आलंकारिक भाषाक प्रयोग नहि भ' कए आधुनिक नाट्य मंचकें दृष्टिमे राखि लिखल जाइछ।

भारतीय साहित्यमे अनेक एहन महान विभूति लोकनि छथि जे अपना कृतित्वसं अपन युग आ समकालीन परिदृश्यकें समृद्ध कयलनि अछि आ ओकरा एक नव दृष्टि संग आधुनिक नाट्य-शिल्पकें दृष्टिमे राखि नाटक लिखैत छथि। एहने एक महान व्यक्तित्व मैथिलीक सुप्रसिद्ध नाटककार डॉ. अरविन्द अक्कू छथि।

मैथिलीमे एखन धरि प्रकाशित आ अप्रकाशित सभ मिलाक' 23 गोट नाटकक रचना क' चुकल छथि, जाहिसं हिनक बहुमुखी प्रतिभा सद्यः उजागर होइत अछि। अक्कू जीक आजुक तिथि (24 जनवरी, 2020) धरि अठारह गोट नाटक प्रकाशित अछि, जाहिमे आगि धधकि रहल छै (1981) तालमुट्ठी (1982) पातक मनुक्ख (1984), एनाकते दिन (1985), अन्हार जंगल (1986), आतंक (1988), रक्त (1990), के ककर (1996), बाह रे हम बाह रे हमर नाटक (1997), पढुआ कक्का अएला गाम (1997), गुलाबछड़ी (1998), राज्याभिषेक (2003), अलख निरंजन (2008), तेसर घर (2010), झिझिर कोना (2011), फुटानी चौक (2017), बटुआवाली मैयां (2019) एहि वर्ण्य विषय सभमे अपन नवीन दृष्टिकोण कें ध्यानमे रखैत अपन नाटक मध्य समाजमे उपेक्षित, शोषित, दलितक संग-संग बेरोजगारी, घूसखोरी, भ्रष्टाचारी एवं साम्प्रदायिकताक कारणें व्याप्त कुरीतिकें केंद्र बनाय नाटकक कथावस्तुक निर्माण कयल गेल अछि।

आलोच्य लेखक अरविन्द अक्कू जाहि मैथिली समाजक अपन खास लोक थिकाह, ओहि समाजकें अपन सामाजिक ओ सांस्कृतिक-संरक्षणक ई प्रतिबद्धता यदि एक दिस ओहि समाजक प्रतिष्ठाकें बढ़ौलक तें दोसर दिस अवैज्ञानिक मानसिकताक निर्माणमे सेहो योगदान कयलक। एहि अवैज्ञानिक मानसिकताक निर्माण मात्र एक खास समाजमे नहि, मिथिलाक सभ जाति ओ समाज मे भेल छैक। थोड़ की बहुत, एखनहुं गाम-घरमे ई परम्परागत विचार क्रमशः अव्यावहारिक होइतहु जीवित अछि।

अक्कूजीक नाटकमे सेहो नव-नव कथ्य एवं शिल्पक प्रयोग भेटैत अछि। प्रायः हिनक नाटक व्यक्ति, परिवार, समाज आ देशक परिप्रेक्ष्य मे लिखल गेल अछि। मैथिलीक अन्य नाटककार सं हटिकए ई अपन नाटककें नव स्वरूप आ

फुटानी चौककें मानव जीवनक रूपमे प्रणीत कयल गेल अछि। एहि नाटकमे नाटककार मानवीय संवेदनाक घटित-घटनाकें अनुभवक आधार पर मनुष्यक लेल एक एहन कथानकक निर्माण कएलनि अछि, जाहिसं समाजमे घटित-घटनाकें बहुत लगसं देखल गेल अछि। स्वच्छ भारत अभियान, नोटबंदी आ नशामुक्त अभियानसं उत्पन्न भ्रष्ट लोकक मनोदशाक उठाओल गेल अछि। ई पहिल नाटककार छथि जे एखैन धरि एहि नवीन सरकारी योजनाक नाटकक कथानक बनौलाह

नवरंग-शिल्प पर उतारलनि अछि। हम हिनक किछु प्रमुख नाटकक नाट्य-शिल्प प्रस्तुत करैत छी जे निम्न अछि- हम अक्कूक नाटक सभमे सं सभसं पहिने 'फुटानी चौक' नाटकक नाट्य-शिल्पसं अवलोकन करबय चाहे छी जाहिमे फुटानी चौककें मानव जीवनक रूपमे प्रणीत कयल गेल अछि। एहि नाटकमे नाटककार मानवीय संवेदनाक घटित-घटनाकें अनुभवक आधार पर मनुष्यक लेल एक एहन कथानकक निर्माण कएलनि अछि, जाहिसं समाजमे घटित-घटनाकें बहुत लगसं देखल गेल अछि। स्वच्छ भारत अभियान, नोटबंदी आ नशामुक्त अभियानसं उत्पन्न भ्रष्ट लोकक मनोदशाक उठाओल गेल अछि। ई पहिल नाटककार छथि जे एखैन धरि एहि नवीन सरकारी योजनाक नाटकक कथानक बनौलाह आओर नाटकक माध्यम सं जनसामान्य धरि पहुचेबाक प्रयास कयलन्हि छथि। वस्तुतः एहि नाटकमे फुटानी चौकक मानवीकरण कयल गेल अछि। एहि चौक पर सभ प्रकारक क्रिया-कलाप प्रभावित करैत अछि। चाहे ओ नीक हो वा अधलाह हो देखल जाय नाटकक पहिल दृश्यक संवाद जे एहि प्रकारें अछि- ''नमस्कार, हम छी फुटानी चौक। हमर इतिहास बेसी पुरान नहि अछि। मुदा हमर ख्याति जग जाहिर अछि। (क्षणिक विराम) हमर स्थापनाक कथा, हमर छाती पर घटैत घटना- दुर्घटनाक कथा सदिखन प्रचारित ओ प्रसारित होइत रहैए आ हम बौक बनल सबटा सुनैत ओ देखैत रहै छी।

नशाबन्दी हो वा नोटबंदी, चोरी हो वा छिनरपनी, घरदेखी हो वा वरदेखी सबटा सूचना हमरा भेटि जाइत अछि। मुदा हम लाचार छी, किछु क' नै सकै छी, बस मर्माहत होइत देशक तथाकथित प्रबुद्ध नागरिक जकां टुकुर-टुकुर मुंह तकैत रहै छी। हम सदिखन गुलजार रहै छी। भिनसर हो वो सांझ राति हो वा दिन, हरदम एत' लोक भेटत। कामकाजी हो वा बेरोजगार, काबिल हो वा बुरबक, सज्जन हो वा दुर्जन सब क्यो फुटानी कर' एत' अबैत छथि। (क्षणिक विराम) हमर हाजरी देने बिना किनकहु अन्न नहि पचै छनि। (क्षणिक विराम) हमही थाना छी, हमही कचहरी छी। हमही सरकार छी, हमही दरबार छी। राजनीतिक अखारा छी। भानुमतीक पिटारा छी। हमही पूंजीपति हमही सर्वहारा छी।

मुदा ताहिसं हमरा? हम त' बस बौक छी, बहीर छी, अकान छी, आन्हर छी। पढ़ल-लिखल बुद्धिजीवी जकां देखियो क' नै देखै छी, सुनियो क' नहि सुनै छी। बस बजरंगबलीक पाथरक मुस्त जकां स्थिर भेल रहै छी, निष्प्राण भेल रहै छी। आ भरिसक तें अखन धरि टिकल छी।''[3]

एहिसं स्पष्ट होइत अछि जे 'फुटानी चौक' आधुनिक रंगमंचक उपयुक्त नव शैलीक प्रयोगात्मक नाटक छी।

तहिना 'अन्हार जंगल' नाटक थिक। एहि नाटकक नामकरण 'अन्हार जंगल'क प्रतीक रूपमे कएल गेल अछि। ई प्रतीक अंधविश्वासक नाम पर होइत शोषण, उत्पीड़नक अछि। नाटकक पहिल दृश्यक संवाद एहि प्रकारें अछि– ''नमस्कार! हम अपनेक आंखिक समक्ष पसरल अन्हार छी। ताबत तबक हमर अस्तित्व अछि जावत तक कि प्रकाशक कोनो किरण हमर छातीकें बेधि नै दैए। किन्तु हमरा खेद अछि जे अपने हमरा देखि नै सकै छी। मुदा एकटा गप मान' पड़त। हमर अस्तित्व कें सब क्यो स्वीकारै छी। चाहे नव विवाहित युगल जोड़ी होइ वा रोग सं खिन्न कोनो वृद्ध वा दिन भरि खेला धुपाक' थाकल नेना, सभकें हमर आवश्यकता होइत अछि। किए? विश्रामक लेल। किन्तु अपने सभक बीच मे कतेको एहन लोक उपस्थित छथि जिनक काज हमरा बिनु नै चलि सकैए। भ्रष्ट अफसर होथि वा भ्रष्ट नेता, कुख्यात अपराधी वा अपराधकर्म मे आएल नवागन्तुक सब हमर आदर करै छथि सम्मान करै छथि। किन्तु हमर आत्मा कनैत रहैए, हम चीत्कार करैत रहै छी। किन्तु अनसोहांत घटना देखि क', बम ओ बारूदक धूंआ सूंघि क'। मुदा तैयो हम चुप रहै छी, अपने मे औनाइत, बौआइत, ठेहुन पर मूड़ी राखि सिसकैत। किएक त' हम अन्हार छी।''[4]

एहि नाटकक प्रकाशकीयमे जटाशंकर दास लिखैत छथि– ''प्रस्तुत नाटकमे गाम-गाम मे पसरल अंधविश्वास आ शोषण ाक विरुद्ध आवाज उठाओल गेल अछि। वर्तमान समाजक दुख-दर्द, आ विचार, क्रूरता आदिक चित्रण नाटककार बहुत मार्मिक ढंगसं कएने छथि।''[5]

डॉ. अक्कूक नाट्य-लेखनक पहिल नव शैलीक प्रयोगात्मक नाटक 'आगि धधकि रहल छै' 1981 ई. मे आयल आ आजुक तिथि (फरवरी, 2020) मे हिनक नाटकक संख्या दू दर्जनकें टपि गेल अछि। हिनक नाटकक प्रकाशनसं पहिनहि रंगकर्मसं जुड़ल निर्देशकक निर्देशनमे सफल मंचन होइत रहल अछि। एहि नाटक सभमे वर्तमान संदर्भक तादात्म्य कथा-वस्तुक कलात्मक उपस्थापन, कथा-वस्तुक अनुरूप दृश्यक संयोजन, उपयुक्त पात्र ओ चरित्रक चयन, पात्रोचित संवाद, अभिनययोग्य भाषिक ध्वनि तथा उत्सुकता उत्पन्न करबाक आ ओकरा बना क' रखने रहबाक लेल प्रमुख पात्रक बीच मनोवैज्ञानिक चरित्रात्मक द्वंद्वकें चरमपर ल' जा क' परिणामक संग पटाक्षेप भेल अछि।

संगहि, हिनक अनेको नाटकमे एहनो अतिरिक्त पात्र उपस्थित अछि जकर मुक्ख प्रसंगसं कोनो संबंध नहि छैक, ने ओहि कथानकक गतिशीलतामे कतहु सहायक होइत अछि, मुदा अपन हास्य-व्यंग्योचित अभिनय क्षमता सं दर्शकक मनकें किंचित् हल्लुक अर्थात् मनोरंजन करबामे, नाटकक प्रति आकर्षण बढ़यबामे तथा विशेष दृश्य-सज्जाक समयमे मंच खाली नहि राखि किछुए क्षणमे अपन उपस्थितिक सार्थकता सिद्ध क' लैत अछि।

विकसित ओ विकासशील राष्ट्रक संगहि व्यक्ति ओ व्यक्ति समूहक समस्याक अन्त नहि छैक। दिन-प्रतिदिन एक पर एक समस्या ठाढ़ भ' रहल अछि। तें नाटककार अक्कू बेशी नाटक समस्यामूलक लिखलनि अछि आ ओहिमे अपन अभिनय प्रतिभाक छापे टा नहि छोड़लनि अछि नाट्य-लेखनक विशेषता सेहो देखौलनि अछि।

विकसित ओ विकासशील राष्ट्रक संगहि व्यक्ति ओ व्यक्ति समूहक समस्याक अन्त नहि छैक। दिन-प्रतिदिन एक पर एक समस्या ठाढ़ भ' रहल अछि। तें नाटककार अक्कू बेशी नाटक समस्यामूलक लिखलनि अछि आ ओहिमे अपन अभिनय प्रतिभाक छापे टा नहि छोड़लनि अछि नाट्य-लेखनक विशेषता सेहो देखौलनि अछि। संवाद-शैली एतेक सटीक, सहज आ गसल अछि जे पात्रक भूमिका प्रस्तुत कयनिहार जे कतहु चुकियो जायत तं ई संवाद-शैली दर्शककें अनुभव नहि होअ देतैक। नाटकक भाषा हिनक रहितहु चरित्रक उपस्थितिक समयमे हिनकर नहि, ओ पात्रक भाषा बनल रहैत छैक। ओ पात्र गामक हो कि शहरक, साक्षर हो कि निरक्षर, ओ जाहि वर्गक प्रतिनिधित्व करैत अछि तकरहि बोलचालक भाषाक रहैत छैक। मुदा ओ नाटकीय भाषा बनल रहैत अछि। कथ्यक टोन विशुद्ध मैथिली भाषीवला छैक। जतय-ततय लोकोक्ति मुहावराक सुंदर प्रयोगसं संवाद पियरगर बनल रहैत अछि।

संवादक जहांधरि प्रश्न अछि, ओ हिनक नाटकक जीवनाधार थिक। संप्रेषणीयता तं संवाद मे छैके जे चरित्रक सहज प्रकाशन ओ नाटकीय प्रभावक उत्पादन-क्षमता सेहो छैक।

डॉ. अरविन्द अक्कू अपन देश ओ समाजक वर्तमान स्थिति, यथार्थ घटना आ ज्वलन्त समस्या सभकें अपन नाटकक विषय-वस्तु बनबैत छथि। एहि लेल कखनहुं धधकल राजनीतिक अगिसं जरैत समाजकें विनाशक नहि, निर्माणक दिशा देखयबाक प्रयास करैत छथि तं ताल-मुट्ठी अर्थात् द्वंद्वमे ओझरायल आजुक शिक्षित बेरोजगार युवावर्गक दिशाहीन स्थितिक परिदृश्य देखबैत छथि। एहि सभके परिणाम थिक जे पिता पं. गोविन्द झाक कथापर आधारित हिनक नाट्य-रूपांतरण 'पातक मनुक्ख' मे पूर्व दीप्ति शैलीक कुशल प्रयोग कय एक अभिनव नाट्य-शिल्पक प्रतिमान प्रस्तुत कयलनि अछि। जे द्वितीय अंतरराष्ट्रीय नाट्य-समारोहमे पुरस्कृत भेल आ छठम अंतरराष्ट्रीय मैथिली-समारोहमे सर्वोत्तम मौलिक आलेखसं हिनक 'रक्त' नाटकक पांडुलिपि पुरस्कृत भेल अछि। नाटक दृश्य काव्य थिक तें पढ़ि क' एकरापर विमर्श करब युक्तिसंगत नहि होइछ। ई देखले पर सटीक प्रतिक्रिया व्यक्त कयल जाइत अछि। हिनक सभ नाटक मैथिली-क्षेत्रमे मंचित भेल अछि आ प्रशंसित भेल अछि। नाटककारक यैह थिकै उपलब्धि आ वस्तुतः नाटकक उचित समीक्षक दर्शके होइत अछि। ■

संदर्भ

1. पहिल सांझः सुधांशु शेखर चौधरी पृ. 8
2. वएह, सुधांशु शेखर चौधरी, पृ. 8
3. फुटानी चौक, डॉ. अरविन्द अक्कू, पृ. 13-14
4. अन्हार जंगल, डॉ. अरविन्द अक्कू, पृ. 1
5. अन्हार जंगल, डॉ. अरविन्द अक्कू, प्रकाशकीय।

मैथिली नाटकमे चित्रित नारीक सामाजिक स्थिति

✍ संतोषी कुमार

लेखक दिल्ली स्थित एक पॉलीटेक्नीक कॉलेज मे कार्यरत छथि। शिक्षा: एमएससी, एलएलबी, पत्रिका आदि में आलेख, कथा आदिक नियमित प्रकाशन। संस्कृति मंत्रालय सीसीआरटी केर अंतर्गत 'मैथिली नाटकक सामाजिक ओ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि' विषय पर कनिष्ठ शोधवृत्ति (जेआरएफ) प्राप्त छथि।

जय जय मधुकैटभ-अर्दिनि।
जय जय महिषासुर-मर्दिनि।।
धूमर-नयन भसम-मण्डिनी।
चण्ड मुण्ड दुहु शिर खंडिनी।।
रक्त बिजासुर संहारिणि।
शुम्भ-निशुम्भ हृदय दारिणि।।
सभ सुर शक्ति रूपधारिणि।
सेवक सबहक उपकारिणि।।[1]

शक्ति उपासक मिथिलामे नारी सदा-सर्वदा सं पूजनीया-वंदनीया रहलीह अछि। प्रकृतिक पूर्ण प्रतिनिधित्व करैत नारीक रूप सौंदर्यक संग-संग सिंहवाहनीक प्रतिमान मानल गेल अछि। ओ मिथिले अछि जतय आदि शक्ति स्वयं भूमिजा बनि नारी आदर्शक शिखर स्थपित कएलन्हि। देवाधिदेव महादेवक संग पूरक लेल पार्वती अवतरित भेलीह। नारी सभ युगमे साहित्य-सृजनक प्रेरणा बनलीह अछि। नारी मात्र कोमल कायाक नाम नहि अपितु कोमल कल्पनाक नाम सेहो अछि। सौंदर्य वर्णनक बात अबैत अछि तऽ निश्शंक ओ नारीक सौंदर्य रूपमे अभिव्यक्त होइत अछि। तन आ मनक अद्वितीय सुन्दरताक कारणे नारी सौंदर्य कखनहुं चित्रकारक कुच्चीमे, कखनहुं कवि-कथाकारक लेखनीमे, कखनहुं मूर्तिकारक शिल्पमे तऽ कखनहुं नाटकीय चरित्रमे देखाइत अछि। नाट्य सम्पादनमे स्त्री पात्रक भूमिका सेहो ओतबेक महत्वपूर्ण अछि जतेक कि पुरुष पात्रक। नाट्याचार्य भरत मुनि नारीकें सभक सुख-दुःख निर्वहन करय वाली, काम-भावक आलंबन ओ काम कें समस्त भावक उत्पतिक स्रोत मानैत लिखैत छथि-

"सर्वस्यैव हि लोकस्य सुखदुः खनिर्बहणः। भूयिष्ठं दृश्यते कामः स सुखं व्यसनेस्वपि।।"[2]

नारी चरित्रकें प्राचीन काल सं आइ धरि विभिन्न पात्रमे देखाएल गेल अछि। युग बदलल, परिवेश बदलल एकर। संग नारी व्यक्तित्वक विविध चित्र मे सेहो अंतर अबैत गेल। नारी पात्र भले सीता, सावित्री, राधा वा अन्यान्य कोनो चरित्र, ओकर चित्रणमे नाट्यकारक दृष्टिकोण काल सापेक्ष रहल अछि - कखनो आदर्श तऽ कखनो यथार्थ। प्राचीन काल, मध्य काल आ आधुनिक काल मे नारी कखनो देवी तऽ कखनो कामिनीक रूपमे चित्रित होइत रहल अछि। ओकर रूप सभ कालमे एक समान नहि रहल, कारण नाटककारक दृष्टिकोणमे आएल अंतर अछि। जिनगीक रंगमंच पर नारी सभ प्रकारक चरित्रकें नीकसं अभिनीत कऽ अपन प्रतिभाक लोहा मनबैत अछि। सभक हृदय जितबाक लूड़ि तऽ ओकरा मे जन्मजाते रहैछ। प्रेम, धैर्य, त्याग, समर्पण आ लाजक प्रतिमूर्ति नारी कखनो अपन कोमलताक कारण तऽ कखनो शक्ति स्वरूपा रूपक कारण नाट्यकारक कल्पनामे प्रतिष्ठित होइछ। माता, बहिन, पुत्री, प्रिया, पत्नी आदि आदर्श चरित्र नाट्यकारक कल्पनाकें अनुप्राणित करैत अछि तऽ ओकर दृष्टि गणिका-वेश्या धरि सेहो पहुंचैत अछि।

प्राचीन मैथिली नाटकमे नारीक सामाजिक स्थिति :

कविशेखर ज्योतिरीश्वर कृत "धूर्तसमागम" प्रहसनमे दू टा नारी पात्र वेश्याक रूपमे सृजित भेल अछि। सुरतप्रिया आ अनङ्गसेना, समाजक तिरस्कृत पात्र (वेश्या) रूपमे चित्रित भेल अछि। सुरतप्रिया मासोपवासिनी

संपर्क *: C/o सुनील कुमार झा, ओ-381, सौरभ विहार, जैतपुर, बदरपुर, दिल्ली-40, मो. : 7562878005, ईमेल : kumarsantoshi.ks@gmail.com*

अछि तथापि ओकरा लग कियो नहि जाइत अछि, मात्र धूर्त सन्यासी, जाहिमे वासनाक स्वार्थ निहित अछि, भिक्षा हेतु जाइछ। एहि नाटकक माध्यमसं तत्कालीन समाजक महिला प्रतिनिधित्व तऽ नहि भेटैत अछि मुदा एतबा तऽ तय जे नारीकें भोग्या रूपमे प्रयुक्त कएल जाइत छल।व्यभिचारक उत्पत्ति, वेश्यावृत्तिक अस्तित्व छल जाहि मे समाजक सामान्य जनक अतिरिक्त सन्यासियो अपन धर्मसं च्युत भऽ सम्मिलित भेल छल। एतबहि नहि, ओहि भोग्या हेतु गुरु-शिष्य दुनूक मध्य झगड़ा सेहो भऽ जाइछ।[3]

मध्यकालीन मैथिली नाटकमे नारीक सामाजिक स्थिति :

मध्यकालीन मैथिली नाटक भक्तिभावसं सम्पृक्त भऽ पौराणिक कथा आधृत अछि ताहि हेतु नारी चरित्र पौराणिाक स्वरूपकें धारण कऽ सृष्टिक कारण बनैत अछि। शक्तिस्वरूपा भगवतीक ध्यान करैत उमापति मंगलाचरण करैत छथि-

''सभ सुर शक्ति रूपधारिणि।
सेवक सबहुक उपकारिणि।
अनुपम रूप सिंहवाहिनि।
सबहि समय रहिहह दाहिनि।''[4]

आदि शक्ति शिवा रूप मे ध्यान करैत भानुनाथ दैवज्ञक पांति -

''हरविहारिणि मुक्तिकारिणि,
भगत-तारिणि सुरशुभङ्करि हे।''[5]

आदिशक्ति कें विन्ध्यवासिनिक रूप मे ध्यान करैत शिवदत्त लिखैत छथि -

''आए आदि कुमारी माता,
सबहि कारज सिद्धिदाता,
बिन्ध्य जाए निवास-कारिणि,
अरिसंहारिणि हे।''[6]

जगतक तारिणि देवी रूप मे त्रिनेत्राक ध्यान करैत छथि रमापति -

''जय जय त्रिभुवन-तारिणि देवि।
सभे अभिमत पुर तुअ पदसेवि।
जूटक बाँधि जटा धरु एक।
तीनि नयन लोहित अतिरेक।''[7]

नन्दीपति महालक्ष्मी रूपमे सम्बोधित करैत ''नन्दीपति-सुता दारिद्य दैत्यार्दिनी''[8] सम्बोधन लिखैत छथि। कुमति विनाशिनी देवी, सरस्वतीक पद सेवन सं समस्त ज्ञानक प्राप्तिक कामना करैत हुनक स्वरूप ध्यान करैत छथि हर्षनाथ -

''आसन धवल कमल, शशि भाल,
श्वेत वसन लस नयन विशाल।
वीणादण्ड कलश धरु हाथ,
जपमाला वर पुस्तक साथ।''[9]

मंगलाचरणक अतिरिक्त नाटकक संवाद प्रवाह देखल जाए आदिशक्तिक त्रिगुणात्म स्वरूप (महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती) रूप मे सिंहवाहिणीक आराधना कएल गेल अछि। आदिशक्तिक आराधनासं कल्याणक कामना अछि। विभिन्न रूप-स्वरूप मे अवतरित भेनिहारि आदिशक्तिक समक्ष अपन अज्ञानता प्रकट करैत जगज्ज्योतिर्मल्ल कहैत छथि-

''गिरिवर नन्दिनी हर हिअ हारिणी
मधुमय रूप अनूपे।
तिनिहु विलोचन सब दुःख मोचन
के जानथ तोहर सरूपे।''[10]

पारलौकिक पराशक्तिक प्रणाम निवेदित करैत हुनका सं अपराधक क्षमा याचना कएल गेल अछि -

''प्रणमओ भगवति पद अरविन्द।
मानस हमर करिअ सानन्द।
जइअओ सतत तुअ भगति-विहीन।
तइअओ न उचित रहिअ हमे दीन
जं कर जननि परिपालन-बाध।''[11]

लौकिक स्थितिमे मध्यकालीन नाटकक नारी पात्रकें देखैत छी तऽ नारीक स्थान सबल नहि दुर्बल बुझाइत अछि। बहुविवाह प्रथाजन्य दोषक कारण सत्यभामा आ रुक्मिणिक पद-प्रतिष्ठा मे अंतर (रानी-पटरानी) अछि। श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणीकें पारिजात पुष्प देला सं सत्यभामाक मानक अवघात होइछ, फलतः अपन महत्ताकें साबित करबाक हेतु पारिजात वृक्षक मांग करैत छथि जे सत्यभामाक नारी-ईर्ष्या गुणकें प्रतिपादित करैत अछि -

''सहस्त्र पूर्ण-शशि, रहओ गगन बसि,
देअओ दशओ दिस दन्दा।
भरि बरिसओ बिस, बहओ
दशओ दिश, मलय समीरण मन्दा।
सजनि! अब जीवन कोण काजे।
पहु मोहि हिन् करू, अपयश जग भरु,
सहय न पाबिअ लाजे।''[12]

मध्यकालीन मैथिली नाटकमे नारी भोग्य-वस्तुक रूपमे सेहो प्रतिचित्रित भेल छथि। कोनो वीर पुरुष द्वारा वाञ्छित नारीक हरण कएल जाइत अछि (रुक्मिणी हरण, प्रभावती हरण, उषा हरण आदि)। श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणीक हरण -

"रुकुमिनी करे गहि रथहि चढ़ाय।
लय गेल गोविन्द गरुड़ बढ़ाय।''[13]

एहन स्थिति नारीक स्थान पुरुषक बरोबरि नहि अपितु हीन प्रदर्शित करैत अछि। महादेवक विवाहक प्रस्ताव लऽ मैना लग गेल ऋषिक उक्ति सं नारी हेतु पुरुष मानसिकता स्पष्ट होइत अछि -

"स्त्री जाति। विविध भांती। नीच गति। चपल मति। पाप पूर। धर्म्म दूर। बहुत बाज। किछु न लाज। रह न थीर। जनि समीर। अधिक ग्रास। न मानय त्रास। नासिक बुद्धि। मन अशुद्धि। परम मूढ़। हृदय गूढ़। काक चेष्ट। काम पुष्ट। बोल सुहर। कर्म जहर। वामा नाम। कपट धाम। काम कोह। लोभ मोह।''[14]

एहि तरहें देखैत छी जे मध्यकालीन मैथिली नाटक मे नारी पारलौकिक रूप मे आदर्श आ पूजनीय छथि मुदा लौकिक स्थिति मे माएक अतिरिक्त प्रेमिका, पत्नी आ विजित वस्तु छथि।

आधुनिक मैथिली नाटकमे नारीक सामाजिक स्थिति :

आधुनिक मैथिली नाटकमे नारीक सामाजिक स्थिति समाज सापेक्ष अछि। आधुनिक मैथिली नाटकक प्रारम्भिक काल मे समाज परम्परा आ परिवर्तनक अंतर्द्वंद सं आंदोलित भऽ रहल छल। कतौ परम्परा आ आदर्श सं सामंजस्य स्थापित करबाक बाध्यता तऽ कतौ पाश्चात्यक प्रभाव मे आधुनिकता दिस अग्रसर होइत समाज। एहनामे अलौकिक पात्र आ कथाक अपेक्षा लौकिक पात्र आ कथा अंतर्निहित भेल। वास्तविक समाजक विषय पर नाट्य रचना भेल, जाहिमे पात्र समाजक वास्तविक प्रतिनिधि आ एकाइ रूपमे प्रतिचित्रित भेल अछि। आधुनिक नाट्य सापेक्ष गुण नारी पात्र मे आएल जे मानवीय चेतना, सामाजिक जागृति आ वैश्विक संवाद प्रस्तुत करय लेल तैयार भेल। नारी चरित्रमे यथार्थ आ अथाह दुःखक प्रतिचित्रण भेल। मात्र शास्त्रीय लक्षणक नायिका नहि अपितु नारीक विविध रंग-रूप आ आयामक निदर्शन भेल।

'कन्यादानी' शब्द मिथिला मे ओहि

अबला लेल प्रयुक्त आ प्रचलित भेल जे परिणीता तऽ छलीह मुदा विवाहोपरांत पति आ सासुरक मुंह नहि देख पबैत छलीह आ परित्यक्त सन स्थिति मे विरहाग्निक अथाह कुंड मे यातना भोगैत छलीह। एकर पाछां कुलीन आ बिकौआ प्रथा आधारित बहुविवाह-व्यवस्था छल। एहने सन सामाजिक पृष्ठभूमि मे जीवन झा द्वारा ''सुंदर-संयोग''क रचना भेल। सरलाक माय सरस्वतीक वेदना एहि संवाद मे स्पष्ट अछि -

''सरस्वती - ऐ बाबू! हमरा पुण्य रहैत तं एकर ई वयस भेलैक, जमाय चतुर्थिअहिक दिन एकरा दुखित छोड़ि कें जे गेलाह से आइ धरि उदेशो ने पबै छिऐन्ह।''[15]

सरलाक विरह यातना कोनो प्रेमिकाक विरह नहि अपितु सामाजिक कुप्रथा सं उत्पन्न विरहाग्नि अछि जाहि मे कतेको कन्या जरैत छलीह -

''सरला - छओ मासक प्रात जखन लोक बाजै जे आब नहि औथिन तखन सं कादंबरी बहिनक संग इएह गीत सभ गबैत छलहुं

तृषित चातक एक स्वातिक बून्द पातक आस रे।

पहु विदेश कलेश काटल भरि वरष निशिवास रे।''[16]

नारीक व्यथा देखाय कोनो नैराश्यवादक प्रारम्भ कएल गेल हो, एहन नहि। पं. आनंद झा 'सीता-स्वयंवर' लिखि पुत्रीक विवाहक सौंदर्य, महत्ता, आनंद आ उत्साहक प्रतिस्थापना कएलाह। अम्बिका कुमार दासक 'सती सुलोचना' मे मेघनादक पत्नी सुलोचनाक चरित्र कें आदर्श रूप मे प्रस्तुत कएल गेल अछि। लाल दास 'सावित्री-सत्यवान' मे सावित्रीकें आदर्श नारी रूप मे समाजक समक्ष प्रस्तुत करैत छथि, जकर अनुकरण समस्त नारी सं वांछित अछि -

''धन्य अश्वपति पिता,
मालती माता धन्या,
धन्य धरणि ई जतय
जनमि सावित्री कन्या
धर्मक पथ धय पातिव्रत-बल
यमकें जीतल
रहल हुनक शुचि कथा
सुरभि वासित जगती तल।''[17]

उमाकांत, 'सीता' मे सीता कें आदर्श पत्नी आ माय रूप मे देखैत छथि। सीताक संवाद मैथिलानीक प्रतिनिधित्व करैत अछि -

''सीता- (लक्ष्मण कें उठबैत आत्मविश्वासक संग) हम मिथिलाक बेटी छी से कखनो नहि बिसरी। मिथिला माटिक ई धर्म छैक बाउ जे ओ दैहिक सुख कें तुच्छ मानैत आयल अछि। की हिमवानक पुत्री आदि शक्ति गौरीक जीवन सं अहां अपरिचित छी? एतुका गरीबी ओकर संस्कार कें दीप्तिमान बनबैत अछि।

लक्ष्मण - किन्तु मां...?

सीता - किन्तु की? जे त्याग आ तपस्याकें जीवनक कवच बना लेने होए ओकरा आगू महाकालो नतमस्तक भऽ जाइत छैक। सुख तऽ हाथक मैल छी लक्ष्मण। अहां चिंता नहि करी। जे सीता अशोकवाटिकाक यातना सहि, अग्निकुंड मे देहकें जरा प्राणनाथक दर्शन लेल जीवैत रहलीह ओ अपन भावी संतानकें जन्म दऽ पालन-पोषण करबाक लेल जीविते रहतीह। जतऽ मोह छैक, दुःख तऽ ओतहि छैक। नारीक हृदयकें, ने मोम बनैत देरी आने पाथरे होइत देरी।''[18]

पौराणिक कथा आश्रित नायिका प्रधान किछु मैथिली नाटकमे नारी चरित्रकें आदर्श रूपमे प्रतिचित्रित करैत समाजमे नारी सम्मानक यथेष्ट प्रयास कएल गेल अछि। यद्यपि आदर्श नारी कें आदर्श बनक लेल कतेक यातना सहय पड़ल अछि से कोना बिसरा सकैत अछि। मणिपद्मक ''मिथिलाक बेटी'' मे ऐतिहासिक आदर्श नारी अरण्य रोदन करैत देखाइत अछि। निर्दोष अहल्या प्रलाप करैत पाथर बनैत छथि -

''अहल्या : बेस भए गेल नाथ! आब कहिओ आह! अच्छा!! आबह हे ग्लानि, हमरा जीह कें जड़ बना दैह, जे कहिओ ककरो हमर पापमय ध्वनि नहि सुनि पड़ैक। आबह हे लाज, हमरा आंखि कें पाथर कए दैह, जाहि सं ककरो पर हमर कलुष दृष्टि नहि पड़ैक आ आबह हे बिन जानि सुमानि कऽ कएल अपराधक वेदनामय पश्चाताप आ हमरा समस्त शरीर कें पाषाणवत् बना दैह जाहि सं हम पाषाणी बनलि धरती माताक कोरा मे...''[19]

धैर्यक प्रतिमूर्ति सीताक छाती फाटि जाइछ, ओ धरतीक कोरा मे समा जाइत छथि -

''सीता - माए, माए! माए वसुंधरा! फाटू अहां जे हम ओहि मे समा कए आइ भीषण ग्लानि सं मुक्ति पाबी। हमरा लेल जाज्वल्यमान आगि मे ठाढ़ होएब सुखद, मुदा अपमानक एहि ज्वाला कें हमर नारीत्व सहै लेल प्रस्तुत नहि अछि...''[20]

वीरांगना मांजरि सतीत्वक रक्षाक लेल खंडा उठबैत छथि, मुदा ताहि सं पहिने नोर सं भगवतीक पीड़ी निपैत छथि -

''मांजरि - हमर सतीत्वक रक्षा लेल निश्चिंत रहु साबर! ...हम कने अपना नोर सं भगवती दुर्गाक पीड़ी पहिने नीपि ली।''[21]

शैलेषक प्रेममे प्रतीक्षारत कुसुमाक अंतर्वेदना कें पहाड़क कण-कण बुझैत अछि -

''कुसुमा - बुझल, बुझल शैलेष! मुदा अहां कहां छी!... जाहि ठाम जाति-भेद, वर्ग-भेद आ वर्ण-भेद ओकरा अनंत मिलन मे बाधा नहि दए सकतैक।''[22]

कतेको कुव्यवस्था सं मैथिलानी त्राहि-त्राहि कऽ रहल छलीह। बेमेल विवाहक जांत मे कतेको नवयौवना पिसाय रहल छलीह। रामचंद्र चौधरीक, 'पिया मोर बालक' मे बच्चा वर कें तरुणी सं विवाह (वर-कनियांक वयस भिन्नता)क कुफलाफल प्रकाशित करैत छथि।''[23] विवाहक तातपर्य सं अनभिज्ञ 'गुलाब छड़ी'क गोपिया आ मंगलीक 'बाल-विवाह'क कारण एक दोसरा कें पति-पत्नी नहि बुझि खेलाय लेल झगड़ा करैत अछि।''[24] विदुषी विद्योत्तमाक विवाह मूर्ख कालिदास सं होइत अछि। विद्योत्तमाक संवाद समस्त बेमेल विवाह पर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि -

''विद्योत्तमा - हाय रे पुरुषत्व! नारी कें धोखा देबा मे पुरुषक मर्यादा थिक की? मुदा छलनाक संज्ञा तऽ सभ दिन सं नारी कें देल जा रहल छैक, तैयो पुरुषक एहन प्रपंच किएक? जं नारी आंखि मे धूरा झोंकि पुरुषत्वक मर्यादा बढ़ैक आ नारीक जीवन चिरसंतप्त बनि जाय तं ई ओकर अपमान अछि।''[25]

भाग्यहीन मिथिलाक बेटीक जीवन कें चित्रित करैत विभूति आनंदक 'तित्तिर दाइ' मे तित्तिर दाइ सं सभ कियो मुंह फेर लैत अछि कियैक तऽ महामारीक चपेट मे आबि पतिक मृत्यु सं ओ वैधव्य कें प्राप्त करैत अछि। तित्तिर दाइक संवाद नारी पीड़ाक सागर अछि -

''तित्तिर : (पूर्ववत) मुदा ओइ पुरुखक परोक्ष भेने एना सभक नजरि बदलि जेतै से नै सोचने रही! दिन-राति बडद जेकां ऐ घर मे जोतने रहै छी अपना कें, मुदा तकर परिणाम की भेटैए? वएह गारि, वएह मारि। कुकुर जेकां दुरदुराइत, छुतहर जेकां गुड़कैत ...''[26]

महेंद्र मलंगियाक ,'छुतहा घैल' नारीक सामाजिक स्थिति आ हुनका प्रति पितृसत्तात्मक नजरि कें देखबैत अछि। नटी द्वारा नाटक मे नारी पात्र आ ओकर अभिनेत्रीक संदर्भ मे कहल जाइत अछि -

''नटी : आइ मजा सं नाटक देखताह आ काल्हि हमरा सभक आलोचना कर' लगताह। कहथिन जे फल्लांक बेटी आ चिल्लांक पुतोहु तं नाटक कऽ कऽ दोसर कें मानसिक सुख देबऽ जाइ छै। ई नीक बात नई भेलै।''[27]

पुनः नटी कहैत छथि -

''नटी : स्त्री तऽ टमाटर भऽ गेलि जे कोनो तरकारी मे फिट भऽ जाएत। ...कखनहुं रावण बना दिअ, भोगीक वास्ते मासुक लोथरा बना दिअ, जोगीक वास्ते पापक खान बना दिअ, कूल सं बाहर करबाक हेतु सनेस जेकां सासुर सांठि दिअ, कखनो सौतिन बना दिअ, कखनहुं कष्ट भोगक हेतु सौतिन माथ पर धऽ दिअ।''[28]

अपन प्रयोजन सिद्धिक बाद लोक स्त्री कें महत्वहीन बना दैत छै। स्त्रीक संवाद स्पष्ट करैत अछि -

''स्त्री : हमरा छुतहा घैल बुझि लेलक? ... गोरहा पाथल भऽ जाइ हइ तऽ लोक ओकरा ओंघरा दै हइ।''[29]

नारी जीवनक समस्या मात्र विवाह वा पति-पत्नी सम्बन्ध धरि नहि रहि जाइछ, अपितु ओहि सं आगू संततिक बोझ वा संतानहीनताक लेल ओकरे दोषी मानल जाइत छै। महेंद्र मलंगियाक 'एक कमल नोर मे' संतानहीन स्त्रीक तिरस्कारक पूर्ण कथा कहि जाइत अछि।[30]

जागृत समाज मे विधवाक जीवन आ पुनर्विवाह, एकटा विचारणीय मुद्दा रहल अछि। आधुनिक सोचक लोक एकर पक्ष मे तऽ शास्त्र पुराण कें अपना पांज मे लऽ कऽ चलनिहार लेल कुकृत्य अछि। जखन पूरा देस विधवा विवाहकें स्वीकारलक तखनो मिथिलाक बाट झट दऽ नहि खूजल। कुमार गंगानंद सिंह 'जीवन संघर्ष' मे विधवा विवाह करा विधवाक अंतर्वेदन व्यथाक समीचीन मार्ग दैत छथि[31] तथापि एकटा रेखाक एहिपार-ओहिपारक स्थिति बनल रहल, जकरा महेंद्र मलंगिया अपन 'लक्ष्मण रेखा खण्डित' मे मिटबैत छथि।[32] विधवा विवाह स्वीकार करबैत छथि। आनंद कुमार झा 'बदलैत समाज' मे एकर पक्ष मे समाजकें देखैत छथि।[33]

एकटा संयोग कहि सकैत छी जे प्रथम मैथिली नाटक मे नारी पात्र मे वेश्याक रूप लेल गेल। सम्भवतः ओ प्रहसन द्वारा कुव्यवस्था पर कएल गेल प्रहारक कारण सृजित पात्र अछि। मध्यकालीन नाटक मे नारी-पात्र आदर्श चरित्रकें प्रदर्शित करैत अछि जे एखनो धरि आदर्श पथ-प्रदर्शक अछि। आधुनिक कालक नारी पात्र हार-मांउसक जीव थिक आ जीवनक यथार्थ सं सम्मुख अछि। ■

संदर्भ

1. पारिजात हरण-नाटकम्
2. नाट्य शास्त्रः श्लोक 97, अध्याय 22
3. धूर्तसमागम, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989,
4. पारिजात हरणम, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ. 238
5. प्रभावतीहरण, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ. 945
6. पारिजात-नाटकम, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ. 781
7. रुक्मिणी परिणय, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ.496
8. कृष्णकेलि माला, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ. 360
9. उषाहरण नाटकम, मिथिला परम्परागत-नाटक- संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ. 999
10. हर गौरी विवाहः जगज्ज्योतिर्मल्ल, (सं.) डॉ. रामदेव झा,पृ. 80
11. रुक्मिणी परिणय, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ. 497
12. पारिजात हरण, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ. 259
13. रुक्मिणी परिणय, मिथिला परम्परागत-नाटक-संग्रहः (सं.) डॉ. शशिनाथ झा, प्र. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, प्र. व. 1989, पृ. 604
14. हर गौरी विवाहः जगज्ज्योतिर्मल्ल, (सं.) डॉ. रामदेव झा, पृ. 55
15. सुन्दर संयोग, कविवर जीवन झा रचनावलीः मैथिली अकादमी, तृ. सं. 1989, पृ. 112 तत्रैव, पृ. 129
16. सावित्री-सत्यवानः लाल दास, मैथिली अकादमी, पटना, तृ. सं. 1992 पृ. 112
17. सीताः उमाकांत, मैथिली अकादमी, पटना, प्र. व. 1998, पृ. 24
18. मिथिलाक बेटीः एकांकी-संग्रह, बी.स्टे.टी. प.कॉर.ली., प्र.व. 1993, पृ. 30 तत्रैव, पृ. 32 तत्रैव, पृ. 33 तत्रैव, पृ. 34-35
19. पिया मोर बालकः रामचंद्र चौधरी
20. गुलाब छड़ीः डॉ. अरविन्द अक्कू
21. वरदानः गौरीकान्त चौधरी 'कान्त', मैथिली अकादमी, प्र.सं. 1982, पृ. 26-27
22. तित्तिर दाईः चेतना समिति प्रकाशन, पृ.35
23. छुतहा घैलः महेंद्र मलंगियाक सात नाटक, मैलोरंग प्रकाशन, पृ. 506 तत्रैव, पृ. 580 तत्रैव, पृ. 582
24. एक कमल नोर मेः महेंद्र मलंगिया
25. जीवन-संघर्षः कुमार गंगानन्द सिंह
26. लक्ष्मण रेखा खण्डितः महेंद्र मलंगिया
27. बदलैत समाजः आनंद कुमार झा।

मैथिली रंगमंच आ महिला रंगकर्मीक सहभागिता

✍ सोनी नीलू झा

लेखिका दिल्ली स्थित युवा रंगकर्मी छथि। रंगमंच पर अभिनय संगहि ओ नाटक आ नृत्य पर नेन्ना भुटका सबहक लेल कार्यशाला सेहो संचालित करैत छथि।
आब मानि जाउ, विलाप, डोमकच्छ, घाट पर जाति, चंपारन के सौ साल, ललका पाग, बेटी बेचवा, परदेशिया, छुतहा घैल, काश्मीर की कहानी, पावन प्रयाण, धूर्तसमागम, जानकी परिणय, ओरिजनल काम, लाछी, बारहमासा, जानकी परिणय, एकादशी, ननदि भौजाई, दहेज, सादचार की ताबीज़, भ्रष्टाचार, हमर मैथिली, आकृति बोल उठी, आदि आदि नाटक आ कहानीक मंचन संग किछु लघु फिल्म आ वेबसीरीज मे अभिनय कयने छथि।

एखनहुं हमरा लोकनि कतबो मॉडर्न किएक नहि भ' गेलहुं अछि मुदा एकटा स्त्री आ खास कय मिथिलानीक लेल घरसं बहरायब बड्ड कठिन रहैत अछि, चाहे ओ कतबो पढ़लि-लिखलि ओ प्रबुद्ध किएक नहि होथि। सृजनात्मक-कलात्मक ओ सामूहिक विधा नाटक मे तं हिनकलोकनिक उपस्थिति बहुत कम देखना जाइछ।

'दू-चारि गोटे भेटतीह सेहो शहरमे, गाम-घरमे एखनहुं नाटकमे स्त्री पात्रक भूमिका करैबाली नहि भेटतीह। हं, मधुबनी, दरभंगा, पटना, दिल्ली, कोलकाता, जनकपुर,विराटनगर आदि शहर मे विभिन्न नाट्य-संस्थासं जुड़लि महिला भेटि जेतीह सएह!

दिल्लीमे हम देखलहुं अछि, नाटकमे महिला पात्रकें। (एखन हम दिल्ली प्रवास मे छी) गामघर मे एखनो घोघसं अलग नहि देखलियनि अछि महिला सभकें, जखन कि महिला शिक्षाक स्तर मे पहिने सं सुधार भेल अछि। मुदा सोच मे एखन धरि नवीनता नहि आयल अछि।

पहिने तं नाटक देखबोक हेतु अनुमति नहि देल जाइत छलनि हुनका सभकें, नाटक खेलएबाक तं बड्ड दूरक गप्प। कहियो काल कोनो बरख चोरा-नुका क' घोघ तानि क' चलि जाइत छलीह, नहि तं नाम सुनिए कए टा संतोष करय पड़ैत छलनि जे नाटक भए रहल अछि गाममे।

हं! हम इसकूल मे शनि दिन कें संगी सभ संगे छोट-छिन नाटक खेला लैत छलहुं ओहि कारणें नाटक देखबाक आ नाटक खेलेबाक उमंग बांचल रहल। ई सम्भवो तखने भेल जखन गामसं बाहर भेलहुं। ओना दिल्लीक रंगमंचमे वर्तमान स्थिति कोनो बेजाए नहि अछि। पटनाक गप्प करी तं ओतय तं सत्तरि केर दशक सं महिला कलाकार रंगमंच सं जुड़ल छथि।

भंगिमाक वर्तमान अध्यक्ष कुमार गगन भाइजी सं नाटक-(रंगमंच) मे महिला रंगकर्मीक केहन सक्रियता छनि, एहि मादे जखन गप्प भेल तं बुझबा मे आएल जे एखन तक भंगिमा नाट्य संस्था सं 71-72 गोट महिला रंगकर्मी सं जुडि चुकल छथि, आ बहुत अखनो सक्रिय छथि। हिनका लोकनि क नाम हम राखए चाहब एतय, किएक तं जे कियो महिला एहि विधा मे अपन सहभागिता देने छथि हुनक योगदान कें कम नहि आंकल जेबाक चाही।

बहुत गोटे एहि रंगमंच विधा मे अपन-अपन क्षेत्र मे अपन योग्यतासं निधोक आगु बढि चुकलि छथि आ राष्ट्रीय स्तर तक अपन पहिचान बना चुकल छथि। अखनो बहुतो गोटेक सक्रियता बनल छनि।

ओहि नामक लिस्ट देखि लागल जे नाटको विधामे भविष्य नीक छैक। पटना मे डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'सं कड़ी जुटैत गेल आ एकटा पैघ सूचीक निर्माण भेल आ मैथिली रंगजगत मे महिला लोकनिक उल्लेखनीय सहभागिताक प्रमाण भेटल। से सूची अछि-

डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', पूनम श्री, मंजू झा, आभा रानी झा, तनुजा शंकर, कनुप्रिया शंकर, सुनयना सिंह, प्रमिला झा,

संपर्क : *द्वारा- श्री विपिन कुमार झा, डॉ. सुनील ढींगरा के क्लिनिक के पास, मेन रोड, मंडावली, नई दिल्ली-110092*
मो. 8920445915, ईमेल: sonipiku29@gmail.com

मधुलिका आनंद, कल्पना सिंह, सुनीता, सुमन, ज्योति झा, प्राची दुबे, सुप्रीता दास, सुजाता, नीलम सिंह, अलका मिश्र, अनामिका, शारदा सिंह, प्रतिमा कुमारी, स्नेहा पल्लवी, रश्मि सिन्हा,रश्मि चौधरी, राखी नियोगी, नीलम चौधरी, मीनाक्षी, निरुपमा भारद्वाज, मधुमालिनी, स्वीटी, माधुरी आनंद, संगीता, रश्मि मिश्र, सोमा आनंद, प्रीति झा (तिवारी) दीपा आंनद, कुंदन झा, स्वाति सिंह, नमिता झा, शैलजा, अर्चना मिश्र, अनिता मन्नू, गुड़िया (राय) पिंकी, मेनका झा, अर्चना सोनी, पारुल प्रिया, समीक्षा, प्रिया, पूनम ठाकुर, सुरूचि वर्मा, ज्योति प्रभा, चंद्र प्रभा, प्रियंका झा, आशा चौधरी, प्रीति झा, रीतू कर्ण, कुमकुमलता, प्रीति कुमारी, रूपा कुमारी, ईशा वैदेही, रेखा सिंह, सुनीता भारती, सलोनी मल्लिक, स्नेहा ठाकुर, नेहा मंडल, संजना सिंह... ई तं भेल भंगिमाक महिला रंगयात्रीक नाम। सुधा दास, मंजू चौधरी, नीलम मण्डल, रंजू झा, ममता दत्त, हिनकालोकनिक योगदान सेहो मैथिली रंगमंचक विकास मे बहुत अछि।

किछु गोटे आगु बढ़ैत नाटकमे निर्देशन सेहो करय लगलीह। आ किछु गोटे फिल्म दिस सेहो अग्रसर भ' अपन नाम स्थपित क' रहलीह अछि। जे आब नहि रहलीह ओ नाम सब अछि आदरणीया ज्योत्स्ना चन्द्रम, नेपालक रंजु झा आ रेखा कर्ण। खैर!

वर्तमान मे, पटनाक प्रेमलता मिश्र जे आरंभे सं छथि, पुनम श्री जे एक दशक बाद पुनः रंगमंच मे सक्रिय भेलीह अछि, आशा चौधरी, कुंदन झा, कुमकुमलता, एखनो सक्रिय छथि, ई सुखद संयोग अछि भंगिमाक लेल, ओतय माए- पितिआइनक पात्र लेल ई लोकनि अपन योगदान द' रहल छथि। पटनाक सलोनी मल्लिक, स्नेहा ठाकुर, नेहा मंडल, अनामिका, रुचि रानी कीर्ति मंजरी, कृति कुमारी, ईशा, रेखा सिंह, रिया मंजरी, कोलकाताक पूजा पाठक, शाशिता राय, मधुबनीक मंजू कुमारी चौधरी, पूजा कुमारी, खुशबू झा, निभा झा, दरभंगाक पल्लवी कुमारी, शिवानी झा। नेपाल सं प्रियंका झा, आ अनिता रानी मंडल, दिल्लीमे ज्योति झा, नीरा झा, सोनिया झा, सत्या झा, पूजा शर्मा, सोनी नीलू झा, सुपिता झा, पुष्पा झा प्रिया, बबीता झा, सुनिता झा, शैल झा, प्रग्या झा, मनिषा झा।

हिनका लोकनिक सक्रियता वर्तमान समय मे निश्चित रुपे छनि। हं एकटा आर महत्वपूर्ण नाम जे समृद्ध महिला रंगकर्मी छथि बिभा रानी जे मुम्बई मे रहै छथि। कहानीक मंचन आ नाट्य अभिनय करैत राष्ट्रीय स्तर पर अपन नाम स्थपित कयने छथि।

ई सभ एखन मैथिली रंगमंच मे अपन योगदान द' रहल छथि। निश्चिते रुपसं मैथिली रंगमंचक सौभाग्यक गप्प अछि।

डॉ प्रेमलता मिश्र'क मैथिली रंगमंच विधामे निरन्तर सक्रियता रहलनि अछि एखनि धरि छनि। ओ मैथिलानी सभहक लेल प्रेरणा छथि। मुदा ईहो एकटा प्रश्न अछि जे दोसर प्रेमलता जी किएक नहि भेलीह अछि एखन धरि-? बीच-बीच मे किएक हेराएल रहैत छथि मैथिलानी लोकनि रंगमंच सं? - हिनकलोकनिक अनुपस्थिति भ' जाइत अछि, तकर की कारण? की, नेतृत्वक अभाव अछि, आ कि समाजक ताना बाना छल,आ कि कुदृष्टि (हीन)भावना सं देखनिहार लोकक सोच कारण छल, एहनि परिस्थिति किएक अबैत अछि? ओना, तहियो किछु गोटे उच्च विचारक छलाह ओहि समय तें ओहनोपरिस्थिति मे पटनाक रंगमंचक टेक (लाज) रखने रहलीह प्रेमलता मिश्र। जं अहां सभ नाटकमे स्त्रीकें नाटक खेलाइत मात्र मनोरंजन हेतु बुझबै, सुनबैक आ देखबैक तं रंगमंचक लेल नीक नहि होयत। स्थिति आर खराप होयत।

ओना समाज मे एहनो परिवार बहुत छथि जतय लड़की रंगकर्मी छथिन से बुझि क' अपन पुतहु बनओलनि अछि। आ एहि मैथिली समाज मे एकटा रंगकर्मीक इहो वक्तव्य सुनलहुं जे ओ नाटक करैत छथि तं हुनक बेटीक विवाह नीक गाम ठाम नहि होएतनि, हुनका केओ कहि देने छलनि तकर चिंता ओ व्यक्त कएने छलीह।

मैथिल समाज मे एहन सोच रखनिहार पुरुषक ई अज्ञानते ने अछि। किएक अपने मोने (गुर चाउर फाकि लेब) अपनाकें पुरुष प्रधान समाजक पुरुख छी हम तें जे हम कहबैक सएह हेतैक।

हम जाहि देश, ठाम मे रहैत छी ओ आरम्भहि सं पुरुषक ओकालति करैत आबि रहल अछि। स्त्रीकें मात्र घर-आंगन धरि सीमित राखल गेल, हुनका बाहरी दुनिया सं दूर राखल जाइत छलनि आ एखनहुं भितरे रखबाक प्रयत्न कएल जाइत अछि, तें दर्शक दीर्घा मे सेहो पुरुषक भीड़मे महिलाकें हेराएल देखलहुं सदाए सं।

पचास गोट पुरुष दर्शक बीच पांचटा महिला भेंटि जेतीह सएह बहुत। एहि सोचक व्यक्ति दर्शकगण मे छथि सएह नहि, अपितु (से तं किछु उदार दर्शक लोकनि छथि जे पूरा परिवार संगे उपस्थित भेटैत छथि) वरिष्ठ साहित्यकार, वरिष्ठ कलाकार आ गीतकार, संगीतकार सभ सेहो छथि, अपन लोकवेदकें देखब-सुनब आ मंच पर चढ़ब सं वंचित कएने छथि।

सेहो इच्छा नै छनि आ कि नाटक देखब पसिन नहि छनि, तें नहि अबैत छथि से नहि! से तं जे एकबेर नाटक देखि क' जाइत छथि ओ दोसर दिनुक नाटक लेल बाट अबस्से जोहैत छथि।

ओतबा तक नहि नाटकक मंचनमे भाग लेबाक इच्छा सेहो जाहिर करैत छथि बहुत गोटे। मुदा वैह गप्प! (जे गति तोरा सएह गति मोरा) हमर ससुर तं, हमर भैंसुर तं, हमर दुलहा तं, हमर घरक लोक हमर नैहर तं, हमर सासुर, हमर बच्चाक पढ़ाई तं, हमर पतिक नोकरी आदि। एहि सभ समस्याक मध्य ओझरा जाइत अछि एकटा स्त्रीण्ण ई स्त्रीक अपना लेल उपजाओल अपन समस्या कहि सकैत छियैक।

तखन एहनो स्थिति मे एहि लोकनिक मैथिली नाटककें दिल्ली,पटना कोलकाता वा नेपालमे मैथिली रंगमंच बचा कय राखै मे बेस योगदान छनि से प्रशंसनीय अछि। ■

नचनियाक नालीबेली/रंगमंच यात्रा

✍ प्रियंका झा

लेखिका काठमाण्डू (नेपाल) स्थित प्रसिद्ध रंगकर्मी आ निर्देशक छथि। मैथिली आ नेपाली रंगमंच पर समान रूप सं सक्रिय छथि। अभिनय केर संग नाटक लेखन सेहो करैत छथि। कथा-कविता इत्यादि नियमित लिखि रहल छथि।

ई बात तहियाक अछि जहिया हमर बाबुजी रमेश रञ्जन झा मिनापमे रहथि। घरमे मिथिला नाटक परिषदक कलाकार लोकनिक कसगर जमघट होइत रहय। हुनका सबहक बात विचार सुनैत रही, अभिनय देखैत रही। हम धीरे-धीरे हुनका सबसं प्रभावित होइत गेलहुं। बाबुजी सेहो नाटक निर्देशन करैत रहथिन। गाम घरमे पावनि-तिहारमे नाटक मञ्चन होइक, हम सबसं आगां बैसिक' नाटक देखी। बच्चेसं नाटकक प्रति हम आकर्षित भ' गेल रही।

हम पढ़ाइ करबा लेल जनकपुर अयलहुं। नेनपन्नसं हमरा नृत्यमे खूब रुचि छल। नृत्यक लाथे हम मिनापमे प्रवेश कयलहुं आ ओहि ठाम दू बर्ख धरि नृत्य कयलहुं। हमरा सब जनैत छी जे आदरणीय महेन्द्र मलंगिया जी मैथिली रंगमञ्चक सेक्सपियर छथि, ओ हमरा घर पर अबैत छलथि। बेर-बेर कहैत रहथिन- "आब अहांकें नाटक करैए पड़त" तहन हम कहियै जे "ओतेक बेसी डायलॉग हम कोना यादि क' सकब?" तहन ओ सान्त्वना दैत कहथिन- "अहां क' सकैत छी, चिन्ता जुनि करु। बस हिम्मतसं काज करैत रहू।"

नाट्ययात्रा

हम 2005 सालसं बाबुजीक प्रेरणा आ सहयोगसं नाट्ययात्रा शुरु कयलहुं। हमर पहिल नाटक जाहिमे हम अभिनय कयने छलहुं ओ अछि 'ओ खाली मुह देखैछै' जे महेन्द्र मलंगिया जीक लेखन आ निर्देशन मे भेल छल। एहिमे दहेजक कारणे स्त्रीक जे जान गमाब' पड़ैत छैक से विषय उठाओल गेल अछि। हम एहिमे बेटी (सीता) क' भूमिकामे छी। सीता पढ़ल रहैत छथि मुदा दहेजक कारणे विवाह नहि होइत छैक आ अन्तमे हुनक मृत्यु भ' जाइत छनि।

ओहि समयमे नाट्य क्षेत्रकें नीक नजरिसं नहि देखय छलय लोक, मंच पर 15 गोट पुरुषक बीचमे नाचब नीक नहि मानैत छलय लोक। जाहि कारणे स्त्रीक मजाक उड़ाओल जाइत छल। अनेकानेक लाञ्छना सेहो लगबैत छलय लोक। तें नाटक खेलब, नृत्य करब बहुत पैघ चुनौती छलैक। विद्यालयमे सेहो मित्र बनाएब बहुत कठिन होइत छल। एकरा संग नहि बाज, नहि खेल, नहि तं पढ़ाइ बिगड़ि जेतौक से कहैत छलथि टोल-पड़ोसक लोक सब। मुदा एहनो अकलबेरामे एकाध गोट महिला सब सहभागी होइत छलीह। ओहि समयमे महिलाक नामपर नाट्य क्षेत्रमे रेखा कर्ण सेहो सक्रिय रहथि। तकरा बाद हम आ रञ्जु झा (जे मधेस आन्दोलनक बेर बमकाण्डमे शहिद भ' गेलीह) एहि क्षेत्रमे अयलहुं।

ओना तं एखनहुं लोक महिला नाट्यकर्मीकें 'नचनिया' कहिते छैक। गाम-घर मे कोनो सांस्कृतिक कार्यक्रममे जं सहभागी भेल तं 'कतेक गोटे नचनिया छैक? से प्रश्न पुछल जाइत अछि, मुदा नाटकमे कतेक मेहेनति करय पड़ैत छै, एकर महत्व कतेक छै, हुनका सबकें के बुझौतनि?

हमरा लेल परिवारमे नाटकक नीक माहौल रहय तें सहज भेल, ई कहि सकैत छी नहि तं बहुत दिक्कत भ' सकैत छल।

संपर्क : द्वारा, नमिता झा, नेपाल संगीत तथा नाट्य प्रज्ञा प्रतिष्ठा, काठमाण्डू, नेपाल, मो. 0097-9800880423, ईमेल: jhap2050@gmail.com

नाटक आ नृत्यक तैयारीमे कहियो-काल रातिक 9 बाजि जाइत छल। लोक सब नाना तरहक ताना मारैत छल। कोन-कोन लड़का सबहक संग मोटर-साइकिल पर घुमैत छैक, नीक घरमे बियाह-दान नहि हेतैक से कहिक' लोक खूब बुराइ करैत छल। मोन दुखाइत छल। निराश होइत छलहुं, माएक समझायब तं कठीने छल मुदा बाबूजीक आश्वासन मनोबल बढ़बैत छल। बाबूजी खूब सहयोग कयलनि फलत: ई यात्रा सहज बनैत गेल।

मुदा आब समाजमे धीरे-धीरे नाट्यकर्मीकें देखबाक दृष्टिकोणमे किछु परिवर्तन आएल अछि। हमर सफलतासं लोक सबहक सोच आ व्यवहार सेहो बदललैए। पड़ोसी सब, हमरो बेटा-बेटीकें सीखा दियौक न बौआ से कहैत छथिन। हम एखन धरि 25 टा सं बेसी नुक्कड़ नाटक खेलने छी, जाहिमे एक्कहि टा नाटक बहुत बेर मञ्चन सेहो केने छी। लगभग 20-22 टा सं बेसी मंचीय नाटक केने छी। एहि नाटमध्ये सखी नाटक जे बाबुजी रमेश रंजन झा जीक लिखल आ घिमिरे युवराजक निर्देशन कएल अछि से सय सं बेसी बेर मंचन केने छी। तहिना चारि टा नाटकक हम निर्देशन केने छी। तहिना महेन्द्र मलंगिया जीक 'छुतहा घैल', हमर बाबुजीक लिखल आ निर्देशन कएल 'बगिया' आ आओर बहुत रास नाटकमे अभिनय केने छी। हमरा सामाजिक विषय-वस्तु बेसी रूचैत अछि।

जं सांच कहल जाए तं 'बगिया' हमरा नाट्य यात्राकें शिखर पर पहुंचा देलक। ई एकटा लोक-कथा पर अधारित एकदम नीक नाटक अछि। एहि नाटकमे अभिनय कएलाक बाद हमरा दू टा चलचित्रमे काज करबाक अवसर भेटल। मैथिली नाटक प्राय: 'इस्यु' आ तराइ क्षेत्रक सामाजिक संरचना पर आधारित होइत छैक। मैथिली समाज संस्कार, संस्कृति आ कलामे धनीक छै। एहि ठाम विभिन्न पावनि-तिहार सब मनाओल जाइत अछि। चलचित्र जकां लभ स्टोरी आ कमेडी सेहो नाटकमे राखल जाइत छैक। कथावस्तु आ निर्देशन शैली नाटकक मुख्य पक्ष होइत छैक। सब पक्षक सम्मिश्रण आ सन्तुलने सं कोनो नाटक सफल ओ सार्थक होइत अछि।

पहिने मैथिली नाटकमे रञ्जु आ रेखा दीदी मात्र रहथिन। तकर बाद हम अयलहुं। पछिला किछु समयसं अनिता रानी मण्डल आ सरिता शाह सक्रिय देखल जा रहल अछि। जनकपुरमे मैथिली नाटक बहुत ठाम मञ्चन कएल जाइत अछि। सबगोटेकें ज्ञात होयत जे चौदहम शताब्दी सं मैथिली रंगमंचक शुरुआत भेल तकर इतिहास अछि। महिला सबहक लेल सेहो रंगमञ्चमे काज केनाय बहुत सहज भेल अछि यद्यपि एहिमे मधेसी महिला सब एखनहुं मात्र दू-तीन गोटे छथि।

सामाजिक परिवेशक कारण रंगमञ्चमे महिला सहभागिता एतेक कम भेल अछि। एकटा मिनाप संस्था छैक जकर एखन तक हल नहि बनि सकल अछि। एकटा नीक थिएटर नहि अछि। एखनहुं नाटक करय लेल बहुत दिक्कत होइत छैक। कलाकारक गुजर करबाक लेल सेहो अन्य पेशा अपनाब' पड़ैत छैक। इहो कारण सं एहि क्षेत्रमे सहभागिता घटल अछि।

नेपालक विराटनगरमे नाट्य क्षेत्र नीक अछि मुदा वएह नाटकक खानी जनकपुरमे कलाकार सबहक टिकय लेल दिक्कत छैक। वर्षमे पावनि-तिहारक बखत मात्रे नाटक, बांकी समयमे की करत? यधपि नाटकक व्यवसायीकरणक लेल जनकपुरे उपयुक्त अछि। एहि ठाम एकटा आर चीज देखल गेलैए जे पहाडी मूलक महिला सब नृत्यमे अपन उल्लेखनीय सहभागिता देने छथि मुदा मैथिली भाषी महिलाक सहभागिता बहुत न्यून छैक। कम पारिश्रमिकसं दैनिकी चलाएब बहुत कठिन छैक। सओख सं प्रवेश कएल व्यक्ति सब एहि क्षेत्रमे बेसी समय तक नहि रहि सकैए। हं, रंगमञ्चकें जीवन बुझनिहार बेसी समय धरि रहियो सकैए आ सफलो भ' सकैए।

विवाहपश्चात:

हमर विवाह 2066 वैशाखमे भेल। विवाह सं ठीक 15 दिन पहिने नाटक केलहुं। विवाहक बाद 10 दिन सासुरमे रहलहुं फेर नाटकेमे लागि गेलहुं। श्रीमान (रविन्द्र झा) कलाक क्षेत्रमे छथि, एहि कारण सं सेहो हमरा लेल अपन कलाकें निरन्तरता देब सहज रहल।परिवारक भरपूर साथ-सहयोग भेटल। मुदा यद्यपि समाजक बहुत लोक बहुत किछु कहय सं नहि चूकल, की करब? समाज एहने छैक...

हम तं बच्चाके गर्भमे ल' क' कतर आ दुबई जा क' नाटक खेलने छी। ओहि समयमे टीवी सिरियलमे सेहो काज केने छी। हं बौआक जनम भेलाक बाद कनी दिन धरि नाटकमे समय देबय मे दिक्कत भेल। तें एक-दू बर्ख धरि नाटक नहि खेललहुं। तकर बाद फेर सं निरन्तर छी। हम कथा आर कविता सेहो लिखैत छी। मुदा सब सं बेसी रंगमञ्चेमे आनन्द अबैए। एहि सं जिनगीक सबटा आनन्द पबैत छी। नाटक लेखन आर निर्देशन सं मैथिली नाटकक मुड़ी आओर ठाढ़ करबाक लिलसा अछि। धन्यवाद! ■

लेखक / प्रकाशकगण केर ध्यानार्थ

'तीरभुक्ति' मे समीक्षा प्रकाशनार्थ अपन नव पुस्तक अथवा पत्रिका केर कम सं कम दू प्रति समीक्षा अनुरोधक संग संपादकीय कार्यालय पठाओल जा सकैछ। विशेष जानकारी वास्ते 9911364316 अथवा 9213152822 पर संपर्क कएल जा सकैत अछि।

– संपादक

मिथिलाक प्रदर्श-कला परम्परा पमरिया: एक विश्लेषण

✍ डॉ. शंकरदेव झा

शिक्षा: एम.ए., पी.एचडी. (इतिहास), एल.एलबी., बी.जे. एम-सी। वृत्ति: पत्रकारिता, शोध एवं स्वतंत्र लेखन। प्रकाशित कृति: संधि-समास (कथा-संग्रह); अमरजीव परिचय-संसार ओ पत्राचार (पत्र साहित्य); व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहन झा (जीवनी); स जीवति गुणा यस्य (जीवन-रेखांकन); प्ररोचना, मैथिली नाटक ओ रंगमंचक विश्लेषणात्मक अध्ययन (समालोचना); अठारहवीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास (इतिहास); छाहक डड़ीर, नव-नीता (अनुवाद); कवीरश्वर-स्मरणि ाका, संत लक्ष्मनाथ गोसाई मैथिली पद-संचय, धर्मधकेलानन्दजीक जल-धिङरो, 'अमर' कविता-पुंज, हरिमोहनझा: व्यक्ति ओ रचनाकार (संपादन); सुरेन्द्र झा 'सुमन' रचना संचयन, तर्पण, मां श्यामा संदेश (संग-संपादन)। सम्मान : जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान-2004 एवं कवीश्वर चन्दाझा राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान 2013, आदि।

उपोद्‌घात

अपन समृद्ध संस्कृतिक हेतु प्रसिद्ध मिथिलाक लोक एवं शास्त्रीय परम्परामे बहुत रास प्रदर्शनीय कला सब रहल अछि। समयक प्रवाहमे एहि प्रदर्शनीय कला मे सं बहुतोक अस्तित्व विलुप्त भ' गेल, बहतोक स्वरूपमे परिवर्तन भ' गेल, तथापि बहुतो एहनो प्रकार सब अछि जकर संज्ञा ओ स्वरूप दुनू आइ धरि अक्षुण्ण अछि।

मिथिलाक प्रदर्शनीय कला परम्पराक सन्दर्भमे एकटा वस्तु विशेष रूपसं ध्यान रखबाक थिक जे एहि ठाम कोनो जाति विशेष किंवा घराना द्वारा वृत्ति अथवा जीवनयापनक साधनक रूपमे प्रदर्शकलाक जाहि रूपक प्रदर्शन कयल जाइत रहल अछि से 'नाच' क्रियापदक संग सम्बोधित होइत रहल अछि। मुदा प्रदर्शकलाक ओ रूप जे सर्वथा अव्यावसायिक होइत अछि आ अवसर विशेष पर मनोरंजन किंवा अनुष्ठानक रूपमे समाजक स्त्री-पुरुष द्वारा ओकरा प्रस्तुत कयल जाइछ से 'खेल' क्रियापदक संग संबोधित होइत रहल अछि।

मिथिलामे सम्प्रति 'नाच'क नामसं जानल जाइत व्यावसायिक प्रदर्श-कलाक जे किछु रूप शेष अछि, तहिमेसं एकटा विशिष्ट नाम अछि पमरिया नाच।

पमरिया कला ओ कलावन्त

मिथिलामे कीर्तनियां, विदापत, चौपहरा, छोकड़बाजी, चौकीतोड़, कथक प्रभृति जेना नाच संज्ञासं जानल जाइत कतिपय प्रदर्शन-कला रूप सब रहल अछि, ताही श्रेणीमे अबैत अछि 'पमरिया' सन वृत्तिमूलक नाच परम्परा। पमरिया नाचक प्रस्तोता कलावन्त वर्ग 'पमरिये' नामक एकटा विशेष जातिक रूपमे जानल जाइत अछि। सम्प्रति पमरिया कलावन्त इस्लाम मजहबमे आस्था रखैत अछि अवश्य, मुदा एकरा सबकें अपन कलासं जे किछु उपार्जन होइत रहलैक अछि से मिथिलाक हिन्दू समुदायसं। हिन्दू परिवारमे पुत्रक जन्म होयबाक उपलक्ष्यमे पमरिया मण्डली आबि नाच प्रस्तुत क' क' निछाओर-बख्शीश आदि प्राप्त करैत रहल अछि। परम्परासं नाच-गानकें अपन आजीविकाक साधन बनौनिहार पमरिया सभक हिन्दू परिवारसं वैह संबंध रहल अछि जे संबंध मिथिलाक बरह बरना समाज व्यवस्थामे डोम, धोबी, माली, चमार, कमार, कुम्हार, नौआ प्रभृत जातिक रहल अछि। मिथिलाक जजमानी व्यवस्थामे पोसिन्दाक संग जे वैधानिक संबंध पौनी-पसारीक रूपमे परिगणित विभिन्न जातिक रहल अछि, ताही व्यवस्थामे पमरिया सब सेहो स्वयंकें संबद्ध मानैत आबि रहल अछि। विभिन्न पौनी-पसारी जकां एकरा सबकें अपनामे जजमानिकाक रूपमे गाम सब बांटल रहैत छैक। एकक जजमनिकामे दोसरकें जा क' कमयबाक अनुमति नहि रहैत छैक। जं केओ एहि नियमक उल्लंघन करैत अछि से सामाजिक दण्डक भागी होइत अछि। पुत्र जन्मक अवसरपर पोसिन्दाकें आवश्यक रूपसं पमरिया नचयबाक कोनो बाध्यता नहि रहैत छैक आ ने अन्यान्य पेशेवर कलावन्त जकां साइ द' क' एकरा सबकें बजाओल जाइत छैक। अपितु पमरिया सब स्वयं अपन जजमनिकामे

***संपर्क** : कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-846001, मो. : 8210912761, 9430639249, ईमेल : dr.shankerdeojha@gmail.com*

पुत्र-जन्मक सूचनाक टोह लैत पहुंचैत अछि आ घरबैयाक इच्छा नहि रहलाक उपरान्तो अधिकारक संग नाच-गानक प्रदर्शन क' इनाम-बख्शीश प्राप्त करैत अछि। एकटा रोचक तथ्य इहो जे पमरिया जातिक जे अपन आन्तरिक व्यवस्था रहल अछि ताहिमे ओ सब अपन अधिकारवला गाम सबकें दोसराक हाथें बेचि सकैत अछि, बन्हक लगा सकैत अछि, दान क' सकैत अछि आ बेटीकें दहेजक रूपमे सेहो द' सकैत अछि।

पमरिया कलाक वस्तु-विधान

नृत्य, गीत ओ वाद्य; एहि तीनूक अन्वितिसं युक्त प्रदर्श-कला पमरियाकें तौर्यत्रिक कलाक श्रेणीमे राखल जा सकैत अछि। संगीत-रत्नाकरक रचयिता शारंगदेव वाद्य, नृत्य ओ गीतक समेकित प्रयोग युक्त एहने आयोजनकें संगीतक कहलनि अछि-

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते।[1]

यद्यपि पमरिया कलामे कोनो शास्त्रीय रूढ़िबद्धता दृष्टिगोचर नहि होइत अछि। सम्भव थिक जे कालक प्रवाहमे पमरिया कला शास्त्रीय अनुशासनसं दूर होइत वर्तमानमे निर्बंध लोक-कलाक रूप धारण क' लेने हो, मुदा एकर जे आभ्यन्तरिक संरचना अछि से आभास दैत अछि जे अतीतमे एकर एकटा अनुशासन रहल होयत।

मिथिलामे प्रेक्षणीय कलाक आयोजन कें एकटा धार्मिक कृत्यक मान्यता प्राप्त रहल अछि से प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि अष्टरत्नाकरकार चण्डेश्वर रचित ग्रंथ कृत्यरत्नाकरक नानादाने प्रकरण।[2] ध्यातव्य थिक जे मिथिलामे पमरिया नाचक आयोजन मात्र पुत्र जन्मक अवसरहि पर होइत रहल अछि। मिथिलाक लोकजीवनमे पुत्र जन्मक अवसरपर आयोजित भेनिहार उत्सवक स्वरूप कोन प्रकारक भेल करैत छल तकर प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि अठारहम शताब्दी मे मनबोधक प्रबंधकाव्य 'कृष्ण जन्म'; नन्दीपति ओ श्रीकान्तगणक रचित कीर्तनियां नाटक क्रमशः 'कृष्णकेलिमाला' एवं 'कृष्ण ाजन्म रहस्य'; साहेबरामदास, मंगनीराम प्रभृति कवि लोकनि द्वारा रचित कृष्णजन्म वर्णन मूलक कथाकाव्य इत्यादि। एहि सब कृतिमे सामान्य रूपसं 'सोहर' ओ 'बधैया' प्रभृति गीत-प्रभेदक गायनक वर्णन भेल अछि एवं कलोपजीवी जातिक रूप मे परम्परासं रूढ़ चल अबैत रहल 'तट' एवं 'भट' प्रभृति कलावन्त लोकनि द्वारा अपन-अपन कलाक प्रदर्शनक उल्लेख भेल अछि। आश्चर्यक विषय थिक जे एहि कलावन्तक श्रेणीमे पमरिया जातिक कतहु उल्लेख नहि भेटैत अछि। यद्यपि ई बात सत्य जे साहित्यिक प्रमाण सब मे जेना पुत्र जन्मक अवसरपर विभिन्न कलावन्त सभक द्वारा सोहर, बधैया आदि गीत प्रस्तुत कयल जयबाक वर्णन भेटैत अछि तदनुरूपे पमरिया कलावन्त एही गीत सबकें अपन विशिष्ट शैलीक भावनृत्यक संग प्रस्तुत करैत अछि। मुदा एहि अवसर विशेषसं सन्दर्भित वस्तुसं भिन्न पमरिया सभक द्वारा जे आख्यानमूलक दीर्घ गाथा सभक गायन कयल जाइत रहल अछि से एहि कलावन्त जातिपर गम्भीरताक संग शोध करबाक हेतु प्रेरित करैत अछि। पमाराक नामसं ख्यात एहि प्रकारक किछु गाथा सभक जे सूचना भेटैत अछि से सब थिक-राम रणपाल, बख्तौर सिंह विजयमल्ल, अल्हा-रूदल, किल्लाघाट सगराम अथवा रानीविलाप इत्यादि। मुदा एकटा सामान्य बुद्धिक जं आश्रयण लेल जायतं दूटा बिन्दु विशेष रूपसं परिलक्षित होइत अछि। ई जे पमारा एवं पमरिया जे मिथिलाक प्राचीन परमार किंवा पम्मार क्षत्रिय वंशक आभास भेटैत अछि तकर कोनहुं स्तरपर संबद्धता पमरिया कलावन्तक पमारा नामधारी आख्यान सं स्थापित नहि होइत अछि। द्वितीय ई, जे तथाकथित पमारा सब अछि से वीर, श्रृंगार ओ शोकमूलक आख्यान अछि जकर प्रस्तुतिक केलोटा औचित्य पुत्र जन्म सन उल्लासमय अवसर पर नहि बुझना जाइत अछि। वस्तुतः एहि कलावन्त जातिक पमरिया सन संज्ञा, ओकर वस्तु-विधान ओ प्रस्तुति-अवसरमे परस्पर विरोधाभास कें देखैत पमरिया सन प्रदर्श कला विधाक इतिहासक यथासाध्य अन्वेषण करबाक प्रयोजन बुझाइत अछि।

पमरियाक ऐतिहासिकता

मिथिलाक संग एकटा बड़ पैघ समस्या रहल अछि जे एहि ठामक सामाजिक इतिहासक लेखन एवं जाति आधारित समाज व्यवस्थाक समाजशास्त्रीय अध्ययन एखनहुं धरि प्रतीक्षिते अछि। जखन मिथिलाक संख्या बलसं युक्त सामर्थ्यवान जाति सभक एखन धरि कोनो प्रामाणिक अध्ययन नहि भ' सकल अछि तेहनामे पमरिया सब जातिक संबंध मे किछु अपेक्षा करबाक कोनो औचित्य नहि प्रतीत होइत अछि। आस्थासं इस्लाम होइतो पमरिया जाति जेना आचरण ओ वृत्तिक द्वारा हिन्दू सामाजिक व्यवस्थासं जुड़ल रहल अछि से एकटा पहेलिका जकां बुझाइत अछि। यद्यपि एमहर हालक किछु वर्षमे भारतक मुसलमान सबकें सोझे कोनो अरबी कबीलाक संग जोड़ि स्वयंकें सुच्चा मुसलमान प्रमाणित करबाक एकटा हास्यास्पद किन्तु खतरनाक प्रवृत्ति जोर पकड़लक अछि ताहि क्रममे पमरिया जाति कें मदीनाक सकीब कबीलाक संग जोड़ल जाय लागल अछि।[3] मुदा सत्य तं ई थिक जे एखनहुं उच्चवर्गीय मुसलमान द्वारा पमरिया सबकें निकृष्ट मानि ओकरा घृणाक दृष्टिसं देखल जाइत अछि। हाल-साल धरि पमरिया सभक वेश-भूषा, जीवन पद्धति ओ नाम हिन्दू परम्पराक अनुरूप जीबछ, मंगल, लड्डू, सुट्टू, गोनौरा आदि भेल करैत छल। मुदा जहियासं कट्टरपंथी मुसलमान सभक द्वारा मिथिला क्षेत्रमे एहि ठामक मुसलमान सबकें हिन्दू प्रभावसं मुक्त दीनी मुसलमान बनयबाक अभियान प्रारंभ कयल गेल अछि तहियासं पमरिया जातिमे सेहो किछु परिवर्तन देखल जाय लागल अछि। तथापि कट्टरपंथी सभक द्वारा एखन धरि पमरिया आ पमारा संज्ञाक गीरह नहि सोझराओल जा सकल अछि आ ने अरबी शब्दकोश मे एहि संज्ञाक एखन धरि अन्वेषणे भ' सकल अछि।

वस्तुतः पमरिया जातिक उत्पत्तिक इतिहासपर जखन विचार कयल जायत तं एहि जाति द्वारा 'पमारा' नामसं गाओल जायवला गाथाकें आधार बनाय

एकर व्युत्पत्ति कर' पड़त। सामान्यत: पमारा गओनिहार एहि पमरिया कलावन्त जातिक एकटा सूत्र पम्मार वंशीय क्षत्रियक संग स्थापित होइत अछि। एहि अवधारणाक समर्थनमे किछु संकेत दैत डॉ. बालगोविन्दझा व्यथित जे लिखैत छथि तदनुसार जगदेवसिंह नामक कोनो पमार क्षत्रिय अपन वंशक विरुदावली गयबाक हेतु एकटा जाति विशेषक लोककें नियुक्त कयने रहथि। आइयो एहन अनेक वृद्ध पमरिया सब भेटैत अछि जकरा पमारा अबैत छैक। पमारा गयबाक कारणहि एहि जातिक नाम पमरिया पड़ल होयत।[4]

डॉ. व्यथित जाहि कोनो स्रोतक आधार पर उपर्युक्त संकेत देने होथि से भिन्न विषय थिक, मुदा 1097 ई. मे मिथिला जाहि कर्णाट वंशक नेतृत्वमे अंधकारसं प्रकाश युगमे पहुंचल से कर्णाट वंशी लोकनि पमार क्षत्रिय छलाह।[5] मिथिलामे 1326 ईस्वी धरि एहि पमार वंशक शासन रहल, किन्तु एहि राजवंशसं सम्बद्ध कोनो पमारा आइ धरि कतहु कोनो पमरियाक मुंहसं सुनल गेल हो तकर कोनो प्रमाण नहि अछि। पमरिया सब द्वारा गाओल जायवला गाथामे पमारा कहि क' जाहि गाथाक सर्वाधिक प्रसिद्धि अछि से थिक रैया रणपाल। एत' रोचक तथ्य ई थिक जे विद्वान लोकनि रैया रणपाल गाथाकें पाल वंशसं संबद्ध करैत छथि। एहि पाल वंशक कालखण्ड कर्णाट वंशक स्थापनासं पूर्वहि छल। ओहि अंधकार युगीन मिथिलामे एकर एक अंश पर पाल वंशहुक अधिकार छल। कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेव अपन बाहुबलसं मिथिलाकें पालक अधिकारसं मुक्त करौने छलाह।[6] रैया रणपालक गाथा वस्तुत: मिथिलामे अवशिष्ट पाल शक्तिक बीचक आन्तरिक मतभेद, पारिवारिक षड्यंत्रक इतिवृत्त अछि। जं पमरियाक कण्ठमे कर्णाटवंशी पमार लोकनिक अभ्युदयसं पहिलक कालखण्डक कोनो गाथा अद्यावधि सुरक्षित रहल अछि तं एहि आधार पर पमरिया कलावन्तक उत्पत्ति कर्णाट राजवंशसं पूर्वहि होयबाक अनुमानकें बल भेटैत अछि। तथापि ई प्रश्न रहिये जाइत अछि जे पमारवंशी कर्णाट राजवंशक स्थापना सं पूर्वक कोनो गैरपमार गाथा पमारा ओ ओकर गायक पमरिया कोना कहा सकैत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर हेतु एकटा प्रसिद्ध ऐतिह्यक परीक्षण-विश्लेषण करब आवश्यक प्रतीत होइत अछि। एहि ऐतिह्यक उल्लेख म.म. परमेश्वर झा अपन ग्रंथ मिथिला-तत्व-विमर्श मे कयने छथि।

म.म.प. झा द्वारा प्रस्तुत ऐतिह्यक अनुसार ईसा पूर्व 57 वर्षमे जखन मिथिला बौद्ध मतावलम्बी शक सबसं पीड़ित छल ताहि समयमे मैथिल पंडित लोकनिक आग्रहपर उज्जैनक प्रसिद्ध पम्मार वंशी राजा विक्रमादित्य भोज सैन्य अभियान द्वारा शक सबकें भगाय मिथिलाकें अपन अधिकारमे लेलनि।[7] पं. शशिनाथ झाक अनुसार विक्रमादित्यक सैन्य अभियानक नेतृत्वकर्ता परमारवंशी दू भाय बलाह ओ दुलाह (बल्लभ ओ दुर्लभ) छलाह जे पश्चात मिथिलाक शासन सूत्र सम्हारलनि।[8]

रैया रणपालक गाथा वस्तुत: मिथिलामे अवशिष्ट पाल शक्तिक बीचक आन्तरिक मतभेद, पारिवारिक षड्यंत्रक इतिवृत्त अछि। जं पमरियाक कण्ठमे कर्णाटवंशी पमार लोकनिक अभ्युदयसं पहिलक कालखण्डक कोनो गाथा अद्यावधि सुरक्षित रहल अछि तं एहि आधार पर पमरिया कलावन्तक उत्पत्ति कर्णाट राजवंशसं पूर्वहि होयबाक अनुमानकें बल भेटैत अछि।

ऐहि ऐतिह्य सबसं एहि निष्कर्षपर पहुंचल जायब सम्भव होइत अछि जे कर्णाट वंशक स्थापनासं बहुत पूर्वहि मिथिलामे परमार लोकनिक आगमन भ' चुकल छलनि। यद्यपि ओहि सुदूर अतीतक इतिहास अस्पष्ट अछि, तथापि ई सिद्धान्त कयल जा सकैत अछि जे मिथिलामे पमार लोकनिक ओहि नवोद्भूत सत्ताक संग एहि वंशक विरुदावली गायनक परम्परा प्रारम्भ भेल जे 'पमारा' नामसं ख्यात भेल। ध्यातव्य थिक जे राजाक विरुदावली ओ गाथाक गायन कयनिहार राज्याश्रय प्राप्त कविक एकटा विशिष्ट कोटिए रहल अछि जे बन्दी चारण, भाट, दसौन्ही आदि नामे जानल जाइत रहल अछि। तेरहम-चौदहम शताब्दीक संधिकालमे रचित वर्णरत्नाकरमे एहि राजविनोदक कलावन्त सभक उल्लेख भेटैत अछि।[9]

मिथिलामे कर्णाट वंशसं ल' क' ओकर अवशिष्टक रूपमे यत्र-तत्र अवस्थित गन्धवरिया लोकनिक रूपमे परमार वंशक एकटा क्रमबद्ध इतिहास तं भेटैत अछि, मुदा हिनका लोकनिसं सम्बद्ध कोनो पमाराक अन्वेषण एखन धरि नहि भ' सकल अछि। जत' धरि कर्णाट वंशक स्थापनासं पूर्व इतिहासक ओहि अस्पष्ट अंधकारमय कालखण्डक प्रश्न अछि जाहिमे पमारा अस्तित्वमे आयल होयत ताहू कालक कोनो पमार वीरक गाथाक बानगी नहि भेटल अछि। तखन एतेक धरि अवश्य जे पूर्वी मिथिला (पूर्णियां परिक्षेत्र)क धानुक, कैवर्त ओ अमात प्रभृति किछु जाति जे स्वयंकें पमार वीर बलाढ़-दुलाढ़ (बल्लभ-दुर्ल्लभ)क संग आयल सैनिकक वंशज मानैत अछि तकरा सभक द्वारा बलाढ़-दुलाढ़ ओ हुनक दूटा भाय कर्णदेव ओ त्रिभुवनदेवक पूजा करबाक परम्परा अछि। पूजाक अवसरपर ओहि चारू पमार वीरक स्तुतिसं सम्बद्ध कतोक गीतक गायन कयल जाइत छल। एहि तथ्यक उल्लेख बुकननक पूर्णियां-रिपोर्टमे भेल अछि।[10] तेहनामे ई अनुमान कयल जा सकैछ जे ओ स्तुति आद्यकालीन पमाराक अवशिष्ट छल होयत।

मिथिलाक आद्य विजेता पमार लोकनि द्वारा भने पमारा नामसं अपन वंशक प्रशस्ति गायनक परम्परा आरम्भ कयल गेल होयत, किन्तु पश्चात् अनेक शक्ति द्वारा पमारक वर्चस्विताकें चुनौती देल जाइत रहल तकर प्रमाण ओहि काल खण्डमे 'महर' (महर-महराय-महाराज) संज्ञासं संबोधित एकटा गोपवंशी वीर लोरिकक गाथा दैत अछि। लोरिक गाथामे

लोरिकक एकटा प्रतिद्वंद्वी नायकक रूपमे उघरा पमार नामक वीरक उल्लेख भेटैत अछि। लोरिक जकां उघराक स्थानक रूपमे दरभंगा जिलाक हायाघाट प्रखंडक उघरा ग्राम ओ परमारि डीह आदि प्रशस्त अछि।[11] लोरिक गाथाक अनुसार लोरिक युद्धमे उघराकें पराजित कयने छल। आब एहि प्रसंगसं एकटा विशिष्ट रोचक तथ्य उपस्थित होइत अछि जे जहिना आद्य पमार लोकनि अपन वंशक प्रशस्ति गायन हेतु कलावन्त सबकें नियुक्त कयलनि आ ओ गाथा पमारा नामसं प्रसिद्ध भेल तद्वते नवविजेता, महर विशेषणसं युक्त यदुवंशी लोकनि द्वारा सेहो विरुद्ध गायनक समानान्तर परम्परा ठाढ़ कयल गेल जकरा 'महराइ' संज्ञा प्रदान कयल गेल। महराइक रूपमे सर्वाधिक प्रसिद्ध लोरिकक गाथा अछि। लोरिकक महराइ अपना समयमे बेस प्रसिद्ध भेल छल आ कर्णाट वंशक शासनकाल (1097-1326) धरि अबैत-अबैत एहि गाथा आधारित नृत्य आ अभिनय सेहो होअ' लागल छल, जकर प्रमाण वर्णरत्नाकरक नगरवर्णना 'लोरिक नाचो' कहि क' दैत अछि।[12]

मिथिलाक ओहि अस्पष्ट इतिहासक कालखण्डमे पमाराक समानान्तर महराइक परम्परा तं ठाढ़ कयल गेल अवश्य मुदा ई अपन व्यापक परिचिति नहि बना सकल। 'सरबनियां गोप' प्रभृति किछु छोट गाथाकें जं छोड़ि देल जाय तं मिथिलामे महराइक रूढ़ अर्थ होइत अछि लोरिकक गाथा। मुदा पमार वंशक प्रशस्ति गायन हेतु आरम्भ कयल गेल पमारा गायनक परम्परा अपन अर्थक विस्तार करैत पमारेतर राजवंशक गाथाक हेतु सेहो प्रयुक्त भेल।

एहि तथ्यकें संक्षेपमे एना बूझल जा सकैत अछि जे बीचमे लोरिक सदृश महरकें जं छोड़ि देल जाय तं आद्य पमार लोकनि द्वारा निज वंशक गाथा गायन हेतु जाहि कलावन्त समुदायकें अधिकृत कयल गेल पश्चात ओ समुदाय जाहि कोनो राजवंशक आश्रयमे रहल आ अपन आश्रयदाताक वीरगाथाक सर्जन ओ गायन कयलक ओ सबटा 'पमारा' नामसं अभिहित भेल। जेना पालवंशी गाथा रैया रणपाल पमारेतर होइतहु पमारा कहबैत अछि, किंवा सत्रहम शताब्दीमे खण्डवला राजवंशक राजा पुरुषोत्तम ठाकुर (1617-1623) क किलाघाट युद्धमे छलपूर्वक हुनक हत्याक कथापर आधारित जे शोकगाथा किल्लाघाट सगराम अथवा रानी विलापक नामसं जानल जाइछ सेहो पमारा कहि क' लोकप्रसिद्ध अछि।[13] एहिना अठारहम शताब्दीमे भेलू सामा-चकक बेणोंचय वंशी वीर भूपति बख्तौरसिंहक गाथा सेहो पमारा थिक। एहिसं भिन्न 'आल्हा-रूदल', 'विजयमल्ल' सदृश कतिपय अन्यदेशीय गाथा सेहो पमारा नामसं ख्यात अछि वस्तुतः प्रशस्ति गाथा भने कोनहुं वंशक रहल हो किन्तु ओकरा हेतु एकटा रूढ़ संज्ञा 'पमारा' बनि गेल आ एकर प्रस्तोता कलावन्त 'पमरिया' नामसं समाजमे जानल जाय लागल।

वस्तुतः सुदूर अतीत कालमे नृपति प्रशस्ति, विरुदावली किंवा वीरगाथाक पाठसं लोकनर्तक बनबा धरिक; राज्याश्रय सं उपेक्षा भरल लोकाश्रय धरिक एवं कलावन्त घरानासं एकटा धर्मच्युत जाति विशेष धरिक पमरिया समुदायक यात्राक विश्वलेषण-विवेचन एकटा रोचक किन्तु गम्भीर विषय भ' सकैत अछि।

पमारा गायनसं लोकनृत्य धरिक यात्रा

जेना कि पूर्वहि उल्लेख कयल गेल अछि जे राजाक प्रशस्ति, विरुद ओ कीर्तिक गायनक एकटा प्राचीन परम्परा रहल अछि जकर सम्पादन भाट, बन्दी, दसौन्ही ओ चारण संज्ञासं अभिहित भेनिहार एकटा विशिष्ट कलाबन्त समुदाय द्वारा कयल जाइत छल। राजपुताना मे चारण काव्यक एकटा सुदीर्घ परम्परा रहल अछि। बुन्देलखण्डमे ई चारण सब 'हरबोला' नामसं प्रसिद्ध छल। मिथिलामे सेहो आशुकवित्व, वाकपटुता ओ तत्काल अपन भंगिमासं हास्य उत्पन्न क' क' लोककें प्रमुदित कयनिहार व्यक्तिकें 'हरिबोलबा' कहल जाइत छैक। वर्ण रत्नाकरमे भाट, बन्दी, दसौन्ही आदि कें राजविनोदक कलावन्तक श्रेणी मे राखल गेल अछि।

मिथिलामे राजाक कीर्तिक गायन कयनिहार राजविनोदक कलावन्त जे पमरिया नामसं जानल जाइत छल से सब कालान्तरमे अपन कलाकें लोकविनोदक सेहो बनयबाक हेतु कोना ओकरा भावनृत्यक संग प्रस्तुत करबाक एकटा नव परिपाटी प्रारम्भ कयने होयत तकर संकेत वर्णरत्नाकरक 'लोरिक नाचो' दैत अछि। महराइ नामसं जानल जाइत लोरिकक गाथा गायनसं भिन्न भावनृत्यक माध्यमसं प्रस्तुत कयल जयबाक कारणे अपना समयक एकटा प्रसिद्ध प्रदर्श-कलाक रूपमे कोना मान्य भ' गेल छल से फराकसं कहबाक प्रयोजन नहि।

पाठ किंवा गायनक विधा पमारा जं नाचक रूप ग्रहण कयलक तं तकर उत्स पमरिया कलावन्तकें कथक सन प्रदर्श-कलासं प्राप्त भेल होयत, से संभव अछि। वर्णरत्नाकर मे राजविनोदक कलावन्तक रूपमे कथकक नामक उल्लेख भेल अछि।[14] एहि कथक कलाक स्वरूप कोन प्रकारक भेल करैत छल तकर वर्णन लोचन अपन रागतरंगिणीमे ओइनिवारवंशी राजा शिवसिंहक आश्रित कलावन्त जयतक संदर्भमे कयने छथि। कथक नामसं प्रसिद्ध जयतक घराना भवभूति सदृश महाकवि लोकनि द्वारा रचित पुराणोपम काव्य अर्थात् दिव्यचरित आधारित प्रसिद्ध काव्य सबकें नृपति लोकनिक समक्ष प्रस्तुत करैत छल।[15]

पमारा गौनिहार कलावन्त सब एही कथक शैलीसं गायनक संग भाव नृत्यक तत्वकें ग्रहण करैत अपन कलाकें एकटा विस्तारे नहि देलक अपितु समाजक समक्ष एकटा नव प्रयोग सेटो उपस्थित कयलक। कथकमे संस्कृतमे दिव्य चरित आधारित प्रसिद्ध काव्य के भाव नृत्यक संग प्रस्तुत कयल जाइत छल तं पमारामे 'देसिल बयना'मे रचित लौकिक चरित आधारित गाथा सबकें प्रस्तुत कयल जाय लागल छल। एहनामे एहि अनुमानकें बल भेटैत अछि जे विद्यापति अवहट्ठमे जे कीर्तिलता ओ कीर्तिपताका सन वीर काव्यक, रचना कयलनि तकर प्रेरणा हुनका एही पमाराक परम्परासं भेटल होयतनि एवं एकर रचनाक उद्देश्य कथक सन प्रदर्श-

कलामे संस्कृतसं इतर अवहट्ठ सन ओजपूर्ण काव्य-भाषाकें प्रवेश दिआयब छल होयतनि। पमाराकें भाव नृत्यमे अनलाक बाद कालान्तरमे एकर कलावन्त सब कथकसं वस्तु-विन्यास सेहो ग्रहण कयलक। अर्थात् पमारा नर्तक सब दिव्य ओ पौराणिक चरित आधारित कतिपय गाथा सब यथा सीता स्वयंवर, सीताहरण, सीता वनवास, हरिचन्दर दानी, सरवन पूत आदिकें सेहो भावनृत्यक माध्यमसं प्रस्तुत कर' लागल।

पमाराक गायन ओ पश्चात ओकरा भावनृत्यक संग प्रस्तुत कयनिहार ई कलावन्त समुदाय अपन एहि मुख्य प्रस्तुति सं भिन्न पुत्र जन्मक अवसरपर नाच कयनिहार एकटा नचनियां-बजनियां जातिक रूपमे कोना परिवर्तित भ' गेल तं तकर उत्तर अछि मध्यकालक ओहि राजनीतिक संक्रमण, व्यापक स्तरपर पलायन, धार्मिक आक्रमण, वृत्तिगत परिवर्तन आदिक त्रासदपूर्ण इतिहासमे।

मिथिलामे कर्णाट वंशक शासनकाल धरि एहि ठामक गायन-वादन, नृत्य-नाट्य आदि कला कतेक व्यापक एवं समुन्नत स्थितिमे छल तकर प्रमाण दैत अछि वर्णरत्नाकर। किन्तु 1324 ई. मे कर्णाट नरेश हरसिंहदेव जखन ग्यासुद्दीन तुगलकक बारम्बार आक्रमण सं आजिज भ' अपन राजधानी काठमाण्डूमे स्थानान्तरित क' लेलनि, तकर बादसं ल' क' अठारहम शताब्दी धरि मिथिला निरन्तर मुसलमानी आक्रमणसं सीदित होइत रहल। ई राजनीतिक अस्थिरता मिथिलाक यावन्तो कला रूप कें छिन्न-विच्छिन्न क' क' राखि देलक। सामाजिक परिवर्तनक दृष्टिसं मिथिलाक ई मध्यकाल महत्वपूर्ण कालखण्ड अछि। विभिन्न संज्ञासं जानल जाइत कलावन्त वर्ग सभक आबादीमे वृद्धि होइत गेल आ अन्ततः नट, भट प्रभृति अनेक कलावन्त समुदाय जातिक रूपमे परिवर्तित होअ' लागल। एहने परिस्थितिमे पमारा प्रस्तुत कयनिहार कलावन्तक एकटा नवीन जाति बनल जे पमरिया नामसं जानल गेल।

विभिन्न संज्ञासं जानल जायवला कलावन्त वर्गक आबादीमे जेना वृद्धि होइत गेल तेनामे प्रत्येक कलावन्तकें राज्याश्रय भेटल असम्भव छल। एहनामे ई कलावन्त लोकाश्रय तकबाक लेल विवश भेल। कलावन्तक बहुतो समूह घूमि-घूमि जीवन यापन हेतु अपन कलाक प्रदर्शन कर' लागल। गदहा पर वस्तु-जात लादि गामे-गाम घूमि क' नाच-गान कयनिहार समूह 'गदहिया' नामक घूमन्तू जातिक रूप धारण कयलक तं एहने सन जत'-तत' बौखनिहार समूह 'बखो' कहौलक। 'भण्डुआ' आ 'पात्र' संज्ञासं प्रसिद्ध कलावन्त उदरपूर्ति हेतु

> **मिथिलामे कर्णाट वंशक शासनकाल धरि एहि ठामक गायन-वादन, नृत्य-नाट्य आदि कला कतेक व्यापक एवं समुन्नत स्थितिमे छल तकर प्रमाण दैत अछि वर्णरत्नाकर। किन्तु 1324 ई. मे कर्णाट नरेश हरसिंहदेव जखन ग्यासुद्दीन तुगलकक बारम्बार आक्रमणसंआजिज भ'अपनराजधानी काठमाण्डूमे स्थानान्तरित क' लेलनि, तकर बादसं ल' क' अठारहम शताब्दी धरि मिथिला निरन्तर मुसलमानी आक्रमणसं सीदित होइत रहल।**

अपन कलाक अडढ़मे देह व्यापार कर' लागल आ समाजमे 'भड़ुआ-पतुरिया' रूपमे घृणाक पात्र बनल। बहुतो कलावन्त अपन वृत्ति परिवर्तित क' लेलक तं बहुतो रोजी-रोटीक खोज मे मिथिलासं सदा-सर्वदाक हेतु पलायन क' गेल। ओहि त्रासद कालखण्डक जे एकटा औरो दुखद परिवर्तन रहल से थिक मिथिलाक अधिकांश कलावन्त जाति बहुलांश द्वारा भय, विवशता किंवा प्रलोभन वश अपन सनातन धर्म त्यागि इस्लाम स्वीकार करब। पमरिया जाति सेहो एहि दुर्घटनासं अप्रभावित नहि रहि सकल। किन्तु पमरिया कलावन्त भयसं इस्लाम स्वीकार करितो अपन नाम ओ वेशभूषाक स्तरपर हिन्दुए जकां रहल। जत' आन-आन कलावन्त जातिमे गतिशीलता ओ घुमन्तू प्रवृति रहल तत' पमरिया कलावन्त स्थिरताक परिचय देलक। पुत्र जन्मक अवसरपर जे नट-भट पहिने आबि क' अपन कलाक प्रदर्शन करैत छल से नटबा ओ भांटक रूपमे मुसलमानक एकटा जाति बनलाक बाद हिन्दू द्वारा वर्ज्य भ' गेल। कलाक क्षेत्रमे उत्पन्न एहि शून्यक लाभ क्रमशः पमरिया जाति उठाब' लागल आ पमारा आधारित गायन ओ नृत्यसं भिन्न पुत्र जन्मोत्सवक अवसर पर गाओल जायवला सोहर, बधैया, खेलौना, झुमरि आदि प्रभेदक गीतक गायन आ ओहि पर नृत्य करब प्रारम्भ कयलक। पमरिया सब अपन एहि नवीन वृत्तिकें स्थायित्व देबाक हेतु स्वयंकें जजमानी व्यवस्थाक अंगक रूपमे प्रचारित करैत तद्वत आचरण सेहो कर' लागल। एहि प्रकारें पमरिया अपन परम्परागत प्रस्तुतिसं विचलित होइत अपना हेतु लोकाश्रयक एकटा सशक्त आधार तैयार कयलक।

मुदा प्रचलित सामाजिक परम्परासं भिन्न कोनो नव प्रयोग करब आ समाज द्वारा ओकरा आंखि मूनि क' स्वीकार क' लेब एतेक सहज नहि रहल अछि। पमरिया सभक द्वारा इस्लाम स्वीकार कयलाक बादो जाहि प्रकारें स्वयंकें जजमानी व्यवस्थामे अयनिहार एकटा जातिक रूपमे प्रवेश करबाक जे प्रयास कयल गेल आ समाज द्वारा ओहिपर संदेह व्यक्त कयल गेल से निराधार नहि छल। पुत्र जन्मक उपलक्ष्यमे नाच-गान कयनिहार पमरिया समुदायक प्रवेश अन्दर-हवेलीमे महिला वर्ग ल'ग होअ' लगलैक। ओहि क्रममे मध्यकालीन प्रवृत्तिक अनुरूप कतोक ठाम दबंग ओ धर्मान्ध मुसलमान जमिन्दार फौजदार सिपाही आदिक द्वारा हिन्दू परिवारक महिला लोकनिकें बलात् उठा लेबाक घटना घट' लागल। तेहनामे संदेहक ई सूइ पमरिया सभक दिस गेलैक जे वैह सब नाच-गानक बहाने हिन्दू सभक गाम-घर मे पैसि गुप्तचरक काज करैत अछि। सुन्दर हिन्दू स्त्री सबकें चिन्हित क' क' तकर

सूचना मुसलमान धरि पहुंचबैत अछि। ओहि घटनाक बाद हिन्दू समुदाय सहचेत भ' उठल आ बहुतो सम्भ्रांत हिन्दू सभक ग्राम ओ परिवारमे पमरिया सभक प्रवेश वर्जित क' देल गेल। बहुत ठाम आइयो ई वर्जना अछिहे जत' पमरियाक पहुंचला पर दलाने परसं घुरबैत कहि देल जाइत छैक जे हमरा लोकनिक ओत' पमरिया नहि नचाओल जाइत अछि किंवा पमरिया नाच नहि धारैत अछि।

पमरिया कलाक वर्तमान ओ भविष्य

आजुक पमरिया कहियो अतीत कालमे चारण-भाट आदिक रूपमे प्रशस्ति एवं वीर गाथाक रचनाकारक रूपमे जानल जाइत छल। मुदा राजा-रजबाड़ा ओ राज्याश्रयक समाप्तिक संगहि एहि कलावन्त समुदायक काव्य-रचनाक ओ नैसर्गिक क्षमता बिलुप्त भ' गेलैक। संगहि पमाराक प्रति लोकरूचि सेहो नहि रहि गेलैक। तेहनामे पमरिया समुदायक छवि पुत्र जन्मक अवसर पर आबि क' नाच-गान कयनिहार एकटा नृत्योपजीवी जातिक रूपमे रूढ़ भ' गेल अछि। तथापि एहि तथ्यकें नकारल नहि जा सकैत अछि जे भने केओ पमरिया कलाक प्रति हेय दृष्टि रखैत होथि मुदा ई मिथिलाक एकटा विशिष्ट कला-परम्परा अछि जे इतिहासक अनेक उतार-चढ़ावक साक्षी रहल अछि। मिथिलाक सामाजिक व्यवस्थाक अंग बनल पमरिया कला गायन; वादन ओ नर्तनक एकटा विशिष्ट शैलीक कारणे अपन फराक परिचिति रखैत आयल अछि।

वर्तमान कालक जे परिदृश्य अछि आ ताहिमे वैश्वीकरण, बाजारवाद, पलायन, संचार क्रांतिक संग जे मनोरंजन क्रांति भेल अछि ताहिसं बहुतो रास पारम्परिक कला प्रभावित भेल अछि। पमरिया नाच सन लोक कला जे एतेक दिन कोनहुना लटैत-बुड़ैत अपन अस्तित्व बचौने रहल से आब एहि परिवर्तित युगमे क्रमश: विलुप्त होयबाक स्थितिमे आबि गेल अछि। पहिल तं, समाजमे पमरिया सन कलाक संरक्षणक प्रति कोनो चिन्ता आ ने एकरा प्रति आकर्षण रहि गेल अछि। दोसर, जे पमरिया कलावन्त सबकें एहि कलासं जीवन निर्वाह कठिन भ' गेल छैक, तें ओ सब आन-आन वृत्ति दिस जा रहल अछि। बहुतो पमरिया आब कौव्वाल सेहो भ' गेल अछि। तेसर, पमरिया समुदायमे शिक्षाक प्रचार-प्रसार एवं आधुनिक रहन-सहनक बसात लगबाक कारणे अपन एहि कौलिक वृत्तिक प्रति एकटा उदासीनता उत्पन्न भेल अछि। पमरिया परिवारक नव पीढ़ी नाच-गानकें लज्जा-संकोचक विषय मानि एहि कलासं विरत भेल जा रहल अछि। चारिम जे सबसं गंभीर कारण अछि से थिक इस्लामीकरणक अन्हड़मे पमरिया जातिक मूल परिचितिक क्रमश: विलोपीकरण। आस्थासं मुसलमान होइतो पमरिया जाति अपन वेश-भूषा, नाम-गान, बोली-वाणी ओ वृत्तिक स्तर पर अपन पूर्वजक संस्कारक अनुपालन करैत आबि रहल छल तकरा सबकें आब पकिया दीनी मुसलमान बनबाक ततेक प्रशिक्षण द' देल गेलैक अछि जे आब बहुतो पमरिया स्वयंकें अरबी कबीलासं जोड़ि कठिन अरबी नाम ओ दाढ़ी राख' लागल अछि, लुंगी किंवा ठेंठी पैजामा पहिर' लागल अछि, मैथिलीक स्थानपर तथाकथित उर्दू बाज' लागल अछि आ नाच-गानकें इस्लामी रवायतक विरुद्ध कह' लागल अछि। मुदा एतेक विपरीत स्थितिक बादो किछु पमरिया सब एहनो अछि जे अपन एहि कौलिक कलाकें खानापुरीक स्तरहिपर सही, टेक रखने अछि, किन्तु ई कतेक दिन धरि चलि सकत से कहब कठिन अछि।

निष्कर्ष

पारम्परिक कलाक अस्तित्वपर संकटक एहि कालखण्डमे पमरिया सन प्रदर्श-कलाक संरक्षण हेतु संस्कृति प्रेमी लोकनिकें चाहियनि जे ओ आगू आबथि। जे कलावन्त पमरिया एखन धरि एहि कलाक टेक रखने छथि तनिका प्रोत्साहित-सम्मानित कयल जाइनि। पमरिया नाचकें मंचीय प्रदर्शनक योग्य बनाओल जाय। नृत्य विशेषज्ञ लोकनि पमरिया नाचक एकटा व्याकरण ओ परिधान नियत करथि। नृत्य, वाद्य ओ गायनसं समन्वित एहि प्रदर्श कलाक शैलीक सूक्ष्म ढंग सं अध्ययन क' ओकरा एकटा शास्त्रक रूप दैत नव लोककें एकर प्रशिक्षण द' प्रस्तुतिक हेतु मंच पर उतारल जाय तं निश्चित रूपसं लोक एकरा प्रति आकर्षित होयत आ एक दिन ई कला तहिना ख्याति प्राप्त करत जेना पाण्डवानी सन लोककला राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तरपर चर्चित-अर्चित भेल अछि। ■

संदर्भ

1. संगीत-रत्नाकर, शारंगदेव, आधार लाइब्रेरी, 1953, 1/121
2. कृत्य-रत्नाकर, चण्डेश्वर ठाकुर, कमलकृष्ण स्मृतितीर्थ (स.), एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, 1925, पृ. 568, 584
3. जर्नल ऑफ सोशल रियलिटी, वो.-1, नं. -3, अक्टूबर-दिसंबर 2010, पृ. 30-31
4. मैथिली ग्राम गीत, बालगोविन्द झा व्यथित (स.), मिथिलांचल प्रकाशन, दरभंगा, 1989, पृ.-196
5. मिथिला तत्व विमर्श, परमेश्वर झा, तरौनी, दरभंगा, 1949, पृ.-97 (पूर्वार्द्ध)
6. श्वेतपुर की खोज और उसका इतिहास, योगेन्द्र मिश्र, वैशाली भवन, टिकिया टोली, पटना, 1979, पृ.-31
7. मिथिला तत्व विमर्श (पूर्वोक्त-5) पृ. 95-96
8. आर्यावर्त (हिन्दी दैनिक), पटना, 12 सितम्बर 1971 (बलिगढ़ और बली विक्रमपुर-शशिनाथ झा), पृ.-9
9. वर्णरत्नाकर, ज्योतिरीश्वर, सुनीतिकुमार चटर्जी एवं बबुआ मिश्र (स.), रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, 1940, पृ.-8-11 (स्थानवर्णना-तृतीय कल्लोल)
10. एन एकाउन्ट ऑफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णियां इन 1809-10, फ्रांसिस बुकनन बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना-1928, पृ.-53-54, 264-265
11. पूर्वोत्तर मैथिल गौहाटी, जुलाई-सितम्बर 2004 (लोकगाथामे नुकायल मिथिलाक इतिहास-शंकरदेव झा), पृ.-32-34
12. वर्णरत्नाकर (पूर्वोक्त-9), पृ.-2 (नगरवण ना-प्रथम कल्लोल)
13. मिथिला तत्व विमर्श (पूर्वोक्त-5), पृ. -26-27 (उत्तरार्द्ध)
14. वर्णरत्नाकर (पूर्वोक्त-9), पृ.-10 (स्थानवर्णना-तृतीय कल्लोल)
15. रागतरंगिणी, लोचन, शशिनाथझा (स.), मैथिली अकादमी, पटना 1981, पृ.-65 (तृतीय तरंग, श्लोक सं.-12-14

मैथिली नाटक आ कोलकाता

✍ लक्ष्मण झा 'सागर'

लेखक वरिष्ठ मैथिल अभियानी छथि। मिथिला-मैथिली अभियानक अगुआ बाबू साहेब चौधरीक अनन्य संगी रहलाह। हुनक संगे 1964 सं 1983 धरि काज करैत रहलाह। कोलकाता आ गुवाहाटी दुनू ठाम हिनक सक्रियता चर्चित अछि। मैथिलीमे हिनक अनेकानेक कथा, कविता, निबंध आ रिपोर्ताज प्रमुख पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित छनि। अ.भा.मि.सं. द्वारा बाबू साहेब चौधरी सम्मान 2018 सं सम्मानित।

हमरा जनैत नाटक साहित्यक ओ विद्या थीक जकर पाठक नहि दर्शक होइत अछि। जहिना भोज करवा लेल चुल्हा, बासन आ खाद्य सामग्रीक सरंजाम करय पड़ैत अछि आ विभिन्न तरहक भोज्य सामग्री रान्हल जाइत अछि। तहिना नाटक खेलबा लेल नाटक पोथी, कलाकार, रिहर्सल, निर्देशक, स्टेज आ प्रकाशक इंतजाम करय पड़ैत अछि। जहिना भोज खेलाक उपरान्त भोजनक स्वादक पता चलैत अछि। तहिना नाटक देखलाक बाद मंचनक आनंद प्राप्त होइत अछि। जेना भोज के चहटगर बनेबाक काज चटनी करैत अछि तहिना नाटक कें मनोरम बनेबाक काज प्रहसन (कॉमिक) करैत अछि।

नाटक कें दृश्य काव्य आ पंचम देह कहल गेल अछि। एहि मे रूप, रस, साज-गुज, छटा आ अदाक समावेश रहैत अछि। नेना कें भूत आ प्रेत कहिकें डरबियो ओ नहि डरत मुक्त मंच पर भूत आ प्रेतक रूप मे कोनो कलाकार कें आनि देखेयौक ओ डरि के कानय लागत।

मैथिली मे नाटकक प्रादुर्भाव ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'धूर्त समागम' सं भेल अछि जाहि मे तत्कालीन समागम सांगोपांग चरित्र देखार भेल अछि। नाटक आ नांच मे फर्क अछि। नेनपन मे हमरा लोकनि चौकीक स्टेज आ नुआक पर्दा टंगलाहा 'सलहेस'क नाच देखल करी। पमरियाक नांच होइ, किर्तनियां नाच होइ से देखल करी। मैथिली मे नाटकक अभावक कारणे दुर्गापूजा, कोजागरा, फगुआ आ सरस्वती पूजा मे 'राजा भरथरी', 'महाराणा प्रताप' आ 'मां का कलेजा' नाटक खेलायल जाय। ई स्थिति तहन जाए कें बदलल जहन मैथिली मे दनादन पांच टा नाटक समाज के भेटलैक - स्व. ईशनाथ झाक 'उगना' आ 'चीनीक लड्डू', पं. गोविंद झाक 'बसात', स्व. सीताराम चौधरीक 'सुखायल डारि नव पल्लव' आ स्व. बाबू साहेब चौधरीक 'कुहेस'। ई पांचो नाटक सिनेमाक बॉक्स आफिस जेकां खूब हिट भेल।

तकरा बाद तं मैथिली नाटककारक एकटा बड़का दल तैयार भ' गेल आ मैथिली नाटक खूब लिखाय लगल। मुदा, दुर्योग ई भेल जे एहि मे सं अधिकांश नाटक गामक मुंह नहि देखलक। असल मे गाम सं नाटक उठि जेकां गेल। ई नाटक सब जेना शहरे मे लिखायल तहिना शहरे मे मंचित हुअ लागल। कलकत्ता एहि नाटक सभक मंचनक केंद्र बिन्दु भ' गेल। मुख्यत: ई नाटक सभ नगर आ महानगरक विषय-वस्तु भ' गेल। कलकत्ताक अतिरिक्त नाटक सभ जे आन शहर मे पसरल से भेल - पटना, बोकारो, रांची, दिल्ली, बम्बई। ओना नाम गिनेबाक लेल ई नाटक सभ मिथिलांचलक किछु गाम जेना - दामोदरपुर, मकरंदा, मांउबेहट, चनौर, बेलौंचाक अतिरिक्त भागलपुर आ नेपाल मे सेहो मंचित भेल अछि।

ओना मैथिली साहित्यक आन विधाक अपेक्षा नाटक थोड़ लिखायल अछि। एकरा पाछां आर जे कारण रहल होइक मुदा असली कारण भेल जे मैथिलीक नाटक विधा कें साहित्य अकादमीक पुरस्कार सामान्यत: नहि देल जाइत छैक।

***संपर्क** : 3बी, तिस्ता अपार्टमेंट, 94 एवेन्यू साउथ, संतोषपुर, कोलकाता-29,*
मो. : 99038-79117

डॉ. रामदेव झा कें अपवाद बुझि सकैत छी। तें जं देल जाइतैक तं महेन्द्र मलंगिया एहन नाटककार शब्दक मंगल मे अर्थक खोज किएक करय लगितथि? मुदा जतबे नाटक लिखायल अछि वा लिखल जाए रहल अछि तकर चर्च तं अपेक्षित अछि।

पं. गोविन्द झाक बसावलक अतिरिक्त 'अंतिम प्रणाम' आ लोढ़ानाथ। स्व. सीताराम चौधरीक 'सुखायल डारि नव पल्लव'क अतिरिक्त बेगातर'। स्व. गुणनाथ झाक मधुयामिनी, शेष नहि, आजुक लोक कनियां-पुतरा, पाथेय आ लाल बुझक्कर। बाबू साहेब चौधरीक 'कुहेस'। स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुरक 'लौंगिया मेरचाइ'। स्व. सुधांशु शेखर चौधरीक मफाइत चाहक जिनगी, बेलक मारल, पहिल सांझ आ लेटाइत......। श्री महेन्द्र मलंगियाक 'ओकरा अंगनाक बारहमासा', नसबंदी, लेमरायल अन्हार मे एकटा इजोत, जुआयल कनकनी आ छुतहा भैल। प्रबोध नारायण सिंहक हाथीक दांत आ प्रेमक रोग। स्व. ईला रानी सिंहक 'प्रेम एक कविता'। डॉ. उदय नारायण सिंह 'नचिकेताक' एक छल राजा, नायकक नाम जीवन आ मा प्रविश'। श्री कृष्णचन्द्र झा 'रसिक' क हमर सपना, संबंध, विवाह एक धन्धा आ विवाह एक नाटक। श्री मंत्रेश्वर झाक 'प्रायश्चित'। डॉ. गंगेश गुंजनक 'आइ भोर'। श्री आनन्द कुमार झाक 'बदलैत समाज' आ 'हठात् परिवर्तन'। डॉ. शम्भु नाथ झा 'सांवरिया'क महाभियान। श्री कुणालक भग्न स्तूप, विद्यापत, 'अक्षत स्तंभ चेतनाक स्वर'। डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू'क रक्त आतंक, पातक मनुक्ख, अलख निरंजन आ फुटानी चौक। डॉ. कमल मोहन 'चुन्नू'क 'ऑब्जेक्शन मी लार्ड'। स्व. विन्देश्वर मंडलक 'क्षमादान'। स्व. उत्तमलाल 'फुटपाथ'। श्री राजनन्दन लाल दासक 'संतो'। स्व. जनार्दन झाक 'निष्कलंक'। श्री शम्भु नाथ मिश्रक 'बुड़बक बेटा टके काबिल', 'मिथिलाक अभिशाप', 'कुर्सी खाली अछि' आ 'सिसकैत संस्कार'। श्री अशोक झाक बिर्रो, द्वंद्व, जीवैत लाश आ कमौआ पूत। एकर अतिरिक्त सर्वश्री चन्द्रेश, राम भरोस कापड़ि भ्रमर, शैलेन्द्र आनंद आ श्री ऋषि वशिष्ठक एकांकी आ नाटक सेहो पत्र-पत्रिका मे दृष्टिगोचर भेल अछि।

कलकत्ता मे नाटकक इतिहास 67 वर्ख (2020 मे) पूरा करय जाए रहल अछि। एतय नाटकक शुभारंभ 1953 ई. सं भेल जकर श्रेय 'मिथिला कला केंद्र' कें जाइत अछि। ई सत्य जे कलकत्ताक तत्कालीन मैथिलीक पुरोधा लोकनि बंगला नाटक सं प्रभावित भ' मैथिली नाटक खेलायब शुरू केलन्हि। मैथिली मे नाटक मैथिली आन्दोलनक लेल हथियारक काज केलक। तहिया प्रवासी मैथिल समाज अपन अस्मिताक रक्षाक लेल संघर्षरत छलाह। दरभंगा महाराजक फरमान जारी भेल छल 'मैथिल महासभा' मे जे मैथिल माने 'मैथिल ब्राह्मण' आ कर्ण कायस्थ। एहि फरमानक तीव्र प्रतिक्रिया भेल से मिथिलांचल सं ल' क' प्रवास धरि। ब्राह्मण आ कायस्थ कें छोड़ि मिथिलाक आन जातिक लोक अपना कें मैथिल नहि बुझैत छलाह। कलकत्ता सं नारा देल गेल जे- ''मिथिला मे बसनिहार सब जातिक लोक मैथिल छथि आ सबहक भाषा मैथिली छी।''

कलकत्ता मे नाटकक इतिहास 67 वर्ख (2020 मे) पूरा करय जाए रहल अछि। एतय नाटकक शुभारंभ 1953 ई. सं भेल जकर श्रेय 'मिथिला कला केंद्र' कें जाइत अछि। ई सत्य जे कलकत्ताक तत्कालीन मैथिलीक पुरोधा लोकनि बंगला नाटक सं प्रभावित भ' मैथिली नाटक खेलायब शुरू केलन्हि।

एहि नारा कें सुदृढ़ करबाक लेल कलकत्ता मे जुलूस निकालल गेल। पर्चा, पोस्टर, लीफलेट, पम्पलेट बांटल गेल। मिथिलागामी ट्रेनक डिब्बाक बाहर पोस्टर सब साटल गेल। मैथिलीक कल्याण क लेल मैथिली सेवी संस्था के जन्म भेल। प्राय: सब संस्था विद्यापति के मैथिलीक 'आइकान' मानि हुनक स्मृति मे हुनका नाम पर पर्व मनायब शुरू केलक। ओहि पर्वक अवसर पर भीड़ जुटेबाक लेल नाटकक मंचन शुरू केल गेल। महानगरक महाजातिक सदन, रंजना थियेटर हॉल, सियालदह इंस्टीट्यूट हॉल, आंध्र एशोसिएशन हॉल, सेंट्रल जुट मिल, बजबजक प्रांगण, हावड़ा सिटी हॉल, रथीन्द्र मंच, कला मंदिर, विद्या मंदिर, शिक्षायतन हॉल इत्यादि मंच पर पहिने भाषण-भूषण होइत छल। मुदा रहैत छल बिहार सरकार आ केंद्र सरकार सं मैथिलीक उन्नयनक हेतु मैथिली आन्दोलनक रूपरेखा तैयार करब। तहिया लोक सभ टिकट कटाय कें नाटक देखय अबैत छल। नाटकक बहन्ने लोक सभ मे अपन भाषा आ साहित्यक प्रति चेतना जगलैक।

प्रवासी मैथिलक यैह चेतना कालान्तर मे मैथिली आन्दोलनक बृहत्त रूप लेलक। कएक टा नाट्य संस्थाक जन्म भेल। कलकत्ता मे 1953 ई. सं ल' कें 1975 ई. धरि मैथिली नाटकक लेल स्वर्णिम युग छल। कलकत्ता कें देशक सम्पूर्ण प्रवासी मैथिल सं ल' कें मिथिलांचल धरिक लोक मिथिला-मैथिलीक लीडर (अगुआ) मानि चुकल छल। एहि मान्यताक लेल एतुक्का आन्दोलन, रंगमंच, साहित्य, पत्र-पत्रिकाक अमूल्य योगदान अछि। एहि छोट-छीन आलेख मे हम ई चेष्टा कएल अछि जे कोलकाताक नाट्य संस्था नाटककारक नाम, नाट्य निर्देशकक नाम आ नाटक मे कलाकारक भूमिका मे काज केनिहारक नामक उल्लेख करी, जाहि सं हमर भावी पीढ़ीकें कोलकाता मे मैथिली नाटकक इतिहास (वृहद् रूपें) लिखबा मे ई आलेख परीक्षाक (चिट) जेकां काज करतनि।

(क) कोलकाताक नाट्य संस्था: 1. मिथिला कला केंद्र (1953), 2. मैथिली रंगमंच (1960), 3. मिथियात्री (1970), 4. झंकार, 5. अखिल भारतीय मिथिला संघ, 6. कोकिल मंच, 7. मिथिला विकास परिषद्, 8. मिथिला

कल्याण परिषद्, 9. कर्ण गोष्ठी, 10. मिथिला सेवा समिति, 11. मिथियात्रीक झंकार, 12. नव आयाम आदि।

(ख) कोलकाताक नाटककार: 1. प्रबोध नारायण सिंह, 2. बाबू साहेब चौधरी, 3. गुणनाथ झा, 4. महेन्द्र मलंगिया, 5. राजनन्दन लाल दास, 6. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता', 7. इला रानी सिंह, 8. अशोक झा, 9. कुणाल, 10. कृष्णचन्द्र झा 'रसिक', 11. शम्भु नाथ मिश्र, 12. आनन्द कुमार झा, 13. उत्तम लाल मंडल, 14. देवन मंडल, 15. योगेन्द्र पाठक वियोगी, 16. मिथिलेश कुमार झा, 17. रूपेश त्योंथ आदि।

(ग) कोलकाताक नाट्य निर्देशक: 1. त्रिलोचन झा, 2. कमल नारायण कर्ण, 3. श्रीकांत मंडल, 4. दयानाथ झा, 5. कुणाल, 6. गंगा झा, 7. भवनाथ झा, 8. अशोक झा, 9. शंभुनाथ मिश्र, 10. रंजीत कुमार झा 'पप्पू', 11. उत्तम चौधरी, 12. प्रमोद ठाकुर, 13. किरण झा आदि।

(घ) कोलकाताक पुरुष नाट्य कलाकार: 1. बाबू साहेब चौधरी, 2. शुकदेव ठाकुर, 3. दयानाथ झा, 4. विश्वम्भर ठाकुर, 5. रामलोचन ठाकुर, 6. श्रीकांत मंडल, 7. शिवनाथ झा, 8. अशोक झा, 9. भवनाथ झा, 10. आनंद किशोर ठाकुर, 11. उग्रकांत मिश्र, 12. रामशरण साहू, 13. शिवचन्द्र झा, 14. जोगीकान्त झा 'मुन्ना', 15. शम्भुनाथ मिश्र, 16. जीवछ शाहु, 17. ईश्वर चन्द्र झा, 18. राजकुमार झा, 19. अभयकान्त झा, 20. प्रभुलाल मंडल, 21. जीवेन्द्र मिश्र, 22. दिनेश झा, 23. संजय ठाकुर, 24. नवोनारायण मिश्र, 25. सुधाचन्द्र झा, 26. उत्तम चौधरी, 27. अर्जुन पाठक, 28. रघुनाथ चौधरी, 29. ब्रह्मदेव झा, 30. तारकेश्वर चौधरी, 31. रंजीत कुमार झा 'पप्पू', 32. विनय प्रतिहस्त, 33. प्रेमचन्द्र झा, 34. मिथिलेश मिश्र, 35. ललित पाठक, 36. देवेन्द्र झा, 37. ललित मिश्र, 38. अमरेश कुमार झा, 39. लोकेश झा, 40. सुमन कुमार झा, 41. रंजन झा, 42. संतोष कुमार झा, 43. रोशन कुमार झा, 44. प्रदीप कुमार झा, 45. गंगा झा, 46. अतुल मिश्र, 47. दिनेश मिश्र, 48. प्रकाश, 49. दीपक ठाकुर, 50. प्रकाश चन्द्र मिश्र, 51. विजय इस्सर आदि।

(ङ) कोलकाताक महिला नाट्य कलाकार: 1. माला राय (बंगालिन), 2. उमा शर्मा (बंगालिन), 3. शारदा चौधरी, 4. रेणुका दास, 5. अमोला झा, 6. वंदना झा, 7. पूजा पाठक, 8. किरन झा, 9. रूपा चौधरी, 10. भावना प्रतिहस्त, 11. अंजना इस्सर, 12. बेदी आदि।

कोलकाताक दु:खद पहलू ई अछि जे आब ओ चुहचुही नहि रहल। कोलकाता एखन सेरायल अछि, से प्राय: हर मामिला मे चाहे ओ आन्दोलन हो, साहित्य प्रणयन हो, पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन हो, पर्व समारोह हो या रंगमंचक गतिविधि हो। आपसी वैमनस्यता, अहं केर टकराहटि, समर्थनक अभाव आ किछु उच्छृंखल तलक विनाशकारी प्रवृत्ति एक पर एक कोलकाताक नाट्य संस्था के खाय गेल। मिथिला कला केंद्र आ मैथिली रंगमंच असमय काल कवलित भ' गेल। अखिल भारतीय मिथिला संघ आ कर्णगोष्ठी इतिहास बनि चुकल अछि। हेबनि धरि 'कोकिल मंच' क्रियाशील छल। अपन स्थापना काल सं प्रति वर्ख एकटा नाटकक मंचन, स्मारिका प्रकाशन आ फगुआ ठहक्का कोकिल मंचक सालाना गतिविधि छल से पछिला सदीक अंतिम दशक (1990 ई.) सं 2018 ई. धरि अनवरत चलैत रहल। आब सेहो निष्क्रिय भ' गेल अछि।

मुदा, एखनो मिथियात्री झंकार, मिथिला विकास परिषद्, मिथिला कल्याण परिषद रिसड़ा आ नव आयाम बेश सक्रिय अछि आ समय-समय पर अपन नाट्य प्रस्तुति सं कोलकाताक नाट्य परम्परा कें जिऔने अछि। एकटा समय छल जहन कोलकाता मे सप्ताहव्यापी नाट्य-महोत्सव होइत छल। कोलकाता सं बाहरोक नाट्य संस्था सब प्रतिभागी होइत छल। प्रतियोगिता होइत छल। ओहि समय मे नाट्य प्रेमीक लेल एकटा रमनगर वातावरण भ' जाइत छल। एहनो समय छल जहन कोलकाता मे प्रयोगधर्मी नाटक होइत छल। जेना कुणाल द्वारा प्रबोधनारायण सिंहक आवास पर चैंबर ड्रामा आ रामलोचन ठाकुर द्वारा लेक गार्डेसक सड़क पर स्ट्रीट स्टेजक प्रस्तुति बेस ख्याति अर्जन कैने रहय।

आब कोलकाता मे पहिलुका रंगकर्मी लोकनि सब जे बूढ़ छलाह से तं उपर चल गेलाह। जे जबान छलाह से बूढ़ भ' गेलाह। हुनका लोकनिक बशक बात नहि अछि जे नाटक लेल नव किछु करताह। कोलकाताक प्रवासी मैथिल समाज आब अपन युवा पीढ़ी पर आस लगौने छथि जे वैह सभ नाटक मे नव-नव प्रयोग करताह। कोलकाताक नाट्य परंपरा कें आर जगजियार करताह। ■

दयानाथ झा जीक स्वर्गवास

(2 जनवरी 1940-9 मार्च 2020)

कलकत्ताक रंगकर्मी, हिन्द मोटर्स केर पूर्व पदाधिकारी आ नागदह निवासी पंडित श्री दयानाथ झा जी दिनांक 9 मार्च 2020 हमरा सब के छोडि परलोक चलि गेलाह। हुनक देहांत हैदराबाद मे भेल। हिनका संग 1988 में चारि दिन रहबाक सौभाग्य भेटल छल मौका छल। अखिल भारतीय मिथिला संघ आ अरिपन द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोह'क। ओना मामा सेहो छलाह। अखिल भारतीय मिथिला संघक परिवार दिस स भावपूर्ण विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित अछि। प्रभु स प्रार्थना हिनका आत्मा के शांति प्रदान करथु।

– विजयचंद्र झा

ग्रामीण रंगमंचः भोर हेबाक आस

✍ मनीष झा 'बौआभाइ'

लेखक युवा कवि आ समीक्षक छथि। मैथिली मासिक पत्रिका 'मिथिला मिरर' केर संपादन विभाग सं जुड़ल छथि। हिनक काव्य संग्रह 'नीक बेजाय' सेहो प्रकाशित छनि। हाल हि मे मैथिली विषय सं यूजीसी-नेट परीक्षा उत्तीर्ण कयलन अछि। 'कथा मैथिली' नाम सं यू-ट्यूब कार्यक्रम केर माध्यम सं मैथिली कथा वाचन सेहो प्रस्तुत करैत छथि।

सम्पूर्णता मे देखल जाय तं ग्रामीण रंगमंच सं मैथिली नाटकक अनुपस्थिति पर चिंता वाजिब अछि तथापि एखनहु स्थिति नगण्य नहि भेल अछि अर्थात् कमोबेस उपस्थिति सं नाटक सन एक महत्त्वपूर्ण विधा भविष्यक आशा संग शेष अछि। गामे गाम वैकल्पिक स्तर पर आंकलन केलाक उत्तर जे वस्तुस्थिति अभरि क' सोझां अबैत अछि सेनहि मात्र आपत्तिजनक अछि अपितु निन्दनीय आ घोर निराशाजनक अछि तकर सभसं पैघ उदाहरण थिक दूषित परिवेशक निर्माण करैत ऑर्केस्ट्रा। भेड़चाल मे रमल रहबाक प्रवृत्ति नेने ठाढ़ अपरिपक्व समाजक बीच जं किओ मैथिली नाटकक मंचन हेतु कनिको टा प्रयास करैत देखना जाइ छथि तं' निःसंदेह साधुवादक पात्र छथि। वर्तमान समयक गप्प करी तं साहित्यक अन्यान्य विधा मध्य कला-संगीत सभसं पैघ लोकरंजनक साधनक रूपमे सर्वग्राह्य अछि।

नाटक समाजक वास्तविक स्थिति, परिस्थिति ओ चेतनाक केन्द्र थिक जे भाषा ओ संस्कृतिक आभियानिक स्तर पर सभदिने प्रासंगिक रहल अछि। पूर्वक समयमे ऐतिहासिक, सामाजिक ओ आध्यात्मिक नाटकक मंचन होइत रहल अछि से चाहे हिन्दी हो वा मैथिली। कोनो अवसर विशेष पर किछु गामक नाट्य मंच परम्परा एखनहु ऐतिहसिकता कें जीवन्त रखने अछि। गोट-आध बर्ख नागा गेल होअए तं सेसम्भव अछि, कारण रंगमंचक कलाकारकें जखन जीविकोपार्जन हेतु अन्य विकल्प चुनय पड़लनि तं ओ लोकनि पलायन कय यत्र-तत्र प्रवासी जीवन व्यतीत करय लगलाह आ ओएह अनुपस्थिति वा गैर-निरन्तरताक क्रममे ऑर्केस्ट्रा वा हिन्दी-मैथिली जागरण आदिकें दिनानुदिन बढ़ाबा भेटब शुरू भेल जे द्रुतगतिए पैर पसारबामे सक्षम होइत गेल। सामाजिक सन्जाल सं जुटाओल तथ्यक आधार पर विगत किछु बर्ख मे ग्रामीण रंगमंच पर मैथिली नाटकक स्थितिक अवलोकन हेतु द्रष्टव्य अछि विभिन्न गाममे मंचित नाटकक स्थिति।

ग्रामीण रंगमंचक गौरवशाली परम्पराक निर्वहन करैत विगत 66 बर्ख सं राष्ट्रीय नाट्य परिषद, बभनगामा (सुपौल) द्वारा पछिला 15 बर्ख सं कोजागरा महोत्सवक उपलक्ष्य मे तेसर राति मैथिली नाटकक मंचन हएब सुनिश्चित अछि। ताहि क्रममे मंचित किछु नाटक ईशनाथ झा लिखित 'विद्यापति', 'उगना', रोहिणी रमन झा लिखित 'सामा चकेवा', 'अंतिम गहना', 'राजा सलहेश' डॉ. अरविंद अक्कू लिखित 'ताल मुठ्ठी' 'अलख निरंजन' 'तेसर घर' महेन्द्र मलंगिया लिखित 'काठक लोक', 'गोनूक गवाह' काशीनाथ मिश्र लिखित 'कालीदास', 'वरदान' कुमार गगन लिखित 'ई तं कमाल भ'जाएत' आदि नाटकक मंचन भेल अछि। शारदा युवा नाट्यकला मंदिर बरदाही (मधुबनी) द्वारा देवेन्द्र प्रसाद सिंहक लेखन एवं निर्देशन मे 'टिकजरूवा मोबाइल', 'कनी जे हमहूं पढल रहितहुं', 'अप्पन हारल बहुअक मारल' आदि नाटकक मंचन भेल अछि। आदर्श नाट्य कला परिषद, आहपुर-दामोदरपुर (मधुबनी) नामक

संपर्क : ग्राम+पो.-बड़हारा, प्रखंड-बाबूबरही जिला-मधुबनी, मिथिला,
मो. : 9717347995, ईमेल : manishjhaonline@gmail.com

संस्था लगभग 1945 ई. सं 2016 ई. तक लगातार तीनटा नाटक दुर्गापूजाक अवसर पर खेलाइत आयल अछि। संगहि अन्य अवसर पर सेहो बहुत रास मैथिली नाटकक मंचन कएने अछि। गोट-आध बर्ख नहियो भेल अछि।

2019मे फेर सं एक बेर प्रारम्भ करबाक प्रयास मे डॉ. अरविंद अक्कू लिखित नाटकक मंचन भेल छल 'फुटानी चौक' जकर निर्देशन कएने रहथि कमलेश प्रेमेंद्र। परमेश्वरी नाट्य कला एवं सास्कृतिक परिषद, ठाढी (मधुबनी) द्वारा वर्ष 1925 सं प्राय: प्रत्येक बर्ख (किछु बर्ख नहियो भेल अछि) दुर्गापूजाक अवसर पर मैथिली नाटकक मंचन होइत आबि रहल अछि। विगत 4 बर्ख सं 2 राति मैथिली नाटक मंचनक क्रममे 2017मे महेन्द्र मलंगिया लिखित 'काठक लोक'क मंचन भेल जकर निर्देशन केने छलाह पंकज झा एवं ललितेश्वर झा। वर्ष 2018 मे महेन्द्र मलंगिया लिखित 'ओ खाली मुंह तकै छै' जकर निर्देशन केने छलाह पंकज झा एवं ललितेश्वर झा आ दोसर नाटक शैलेन्द्र झा लिखित एवं निर्देशित 'उसरल हाट'क मंचन। वर्ष 2019 मे डॉ. अरविन्द अक्कू लिखित नाटक 'गुलाबछड़ी' जकर निर्देशन केलनि पंकज झा, दोसर राति लल्लन प्रसादठाकुर लिखित नाटक 'लोंगिया मिरचाइ' केर निर्देशन केलनि शैलेन्द्र झा।

नीलमणि सांस्कृतिक परिषद आ दुर्गा नाट्यकला परिषद भटसिमरि (मधुबनी) ई दुन्नू संस्था सन् 1970 ई. सं प्रतिबर्ख मैथिली नाटकक आयोजन करैत आएल अछि। उक्त दुनू संस्था मे मुख्यत: गोविंद झा, महेन्द्र मलंगिया, डॉ. अरविंद अक्कू, गंगा झा, राजकमल चौधरी, लल्लन प्रसाद ठाकुर, कश्यप कमल, ऋषि वशिष्ठ आदि केर लिखल नाटक सब मंचित होइत आबि रहल अछि। किछु नाटक यथा : 'गाम नहि सुतैए', 'ओकरा आंगनक बारहमासा', 'जुआएल कनकनी', 'ललका पाग', 'लोंगिया मिरचाइ', 'सोलह संस्कार', 'उगना', 'बेलक मारल', 'हमरो हेतै विवाह', 'गोरखधंधा', 'बाबा दंडोत बच्चा जय सियाराम' आदि नाटक बेसी काल मंचित होइत अछि। श्यामा पूजा समिति, भगवतीपुर दड़िमा (दरभंगा) मे वर्ष 2019 मे काली पूजाक ऋषि बशिष्ठ लिखित नाटक 'बाबा दंडोत बच्चा जय सियाराम' केर मंचन भेल छल जकर निर्देशन केने रहथि प्रियरंजन झा। वर्ष 2017 एवं 2018 मे चित्रगुप्त पूजाक उपलक्ष्यमे चित्रगुप्त सेवा समिति, दड़िमा (दरभंगा) द्वारा क्रमश: महेंद्र मलंगिया आ डॉ. अरविंद अक्कू लिखित नाटक 'काठक लोक' आ 'फुटानी चौक' केर मंचन भेल जकर निर्देशन केलनि मिथिलेश कुमार दास।

कोनो अवसर विशेष पर किछु गामक नाट्य मंच परम्परा एखनहु ऐतिहसिकता कें जीवन्त रखने अछि। गोट-आध बर्ख नागा गेल होअए तं सेसम्भव अछि, कारण रंगमंचक कलाकारकें जखन जीविकोपार्जन हेतु अन्य विकल्प चुनय पड़लनि तं ओ लोकनि पलायन कय यत्र-तत्र प्रवासी जीवन व्यतीत करय लगलाह।

इसहपुर (मधुबनी)मे अरिपन संस्था द्वारा डॉ. अरविंद अक्कू लिखित नाटक 'मीनाक्षी' केर मंचन भेल छल। नवदुर्गा नाट्यकला परिषद्, राघोपुर बलाट (मधुबनी) द्वारा विगत 60 बर्ख सं नाट्य मंचनक परम्परा रहल अछि। यद्यपि बीच-बीचमे कएक बेर नहियो भेल अछि तथापि किछु युवा जागरूकताक कारणे पुन: वर्ष 2015 सं 2018 धरि दुर्गापूजाक अवसर पर कराओल गेल नाटकमे क्रमश: शिवेश झा, महेंद्र मलंगिया, आनंद कुमार झा लिखित 'दुलारक भूख', 'गामक बटबारा', 'ओरिजनल काम' आ 'हठात परिवर्तन' केर मंचन भेल जकर निर्देशन केने रहथि मनीष झा एवं शिवेश झा।

वर्ष 2018 मे विद्यापति नाट्य मंच, रामनगर (मधुबनी) द्वारा चारि राति लगातार मैथिली नाटकक मंचन भेल छल जकर पहिल राति (उद्घाटन) केर साक्ष्य केर रूपमे हम स्वयं उपस्थित रही। ऋषि वशिष्ठक चर्चित कथा 'सुभा' आधारित एकल नाटक केर प्रस्तुति देने छलीह प्रभाती कमलिनी आ तहिना राजकमल चौधरी रचित कविता 'मुक्ति प्रसंग' पर एकल अभिनय केने रहथि किसलय कृष्ण। दोसर राति गुणनाथ झा लिखित 'पाथेय' केर मंचन भेल जकर निर्देशन केलनि अन्नू ठाकुर आ प्रस्तुति छल तरुण नाट्यकला परिषद, पड़ौल केर। तेसर राति महेन्द्र मलंगिया लिखित 'गोनूक गवाह' केर मंचन जकर निर्देशन केलनि हरिकिशोर झा आ प्रस्तुति छल श्री कृष्णा नाट्य समिति, परजुआरि, डीहटोल केर। चारिम राति दू गोट नाटक क्रमश: डॉ. कमलमोहन चुन्नू लिखित एवं निर्देशित 'ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड' जकर प्रस्तुति छल विद्यापति नाट्य मंच, रामनगर केर एवं ऋषि वशिष्ठ लिखित 'बाबा दंडोत बच्चा जय सियाराम' जकर निर्देशन केलनि मनीष कुमार झा आ प्रस्तुति छल विद्यापति नाट्य मंच, रामनगर केर।

वर्ष 2019 मे किछु नाट्य मंचनक जानकारी भेटि रहल अछि जेनाकि, मैलोरंग रेपर्टरी, दिल्ली द्वारा उग्रतारा स्थान, महिषी (सहरसा)मे राजकमल चौधरी लिखित नाटक 'ललकापाग'क मंचन भेल छल। मां वैष्णवी दुर्गामंदिर, रामनगर (मधुबनी)मे विद्यापति नाट्य मंच, रामनगर द्वारा पहिल दिन प्रियंका झा (काठमांडू) लिखित एकल नाटक 'कथा नइ भेटल' मंचित भेल छल, प्रस्तुति छल कीर्ति मंजरी केर। वएह दिन मिथिलेश कुमार झा लिखित 'अन्हरजाली' केर मंचन भेल छल, प्रस्तुति छल श्रीकृष्ण नाट्यकला परिषद, परजुआरि, डीहटोल (मधुबनी) केर। दोसर दिनक मंचित दू गोट एकल नाटक क्रमश: ऋषि वशिष्ठ आ यात्री जी लिखित 'सुभा' आ 'विलाप' जकर प्रस्तुति देने छलीह प्रभाती कमलिनी आ संगहि रोहिणी रमण झा लिखित 'मृत्युंजया' केर प्रस्तुति छल विद्यापति नाट्य मंच, रामनगर केर।

आदर्श कलामंच, पोखरौनी (मधुबनी) द्वारा महेन्द्र मलंगिया लिखित 'काठक लोक' केर मंचन। लदारी (दरभंगा) मे आगि 'धधकि रहल छै' केर मंचन। नाहर-भगवतीपुर (मधुबनी) द्वारा ऋषि बशिष्ठ लिखित नाटक 'बाबा दंडोत बच्चा जय सियाराम' केर मंचन। भद्रकाली नाट्य परिषद, कोइलख (मधुबनी) द्वारा 'उनटल घैल' केर मंचन। ब्रम्ह बाल विकास नाट्यकला कुंज, लदौर मेचंदन कुमार राउत लिखित नाटक 'बदैल देब समाज के'।

किछु गाम जतय मैथिली नाट्यमंचनक अपन इतिहास रहल अछि। बहुतो ठाम एकरा निरन्तरता भेटि रहलैक अछि। एहेन गाम जाहि ठाम मंचन होइत रहबाक जानकारी तं भेटि रहल अछि मुदा नाटक, वर्ष, उपलक्ष्य आदिक विस्तृत जानकारी जुटेबा लेल समय चाही आ भविष्यमे शोधरत जानकारी ल' उपस्थित हेबाक उमेदक संग संक्षेपहुमे एहेन किछु गामक चर्च करब आवश्यक सन बुझना जाइत अछि। हनुमान नाट्य कला परिषद, भौर हनुमान नगर, प्रखंड पंडौल (मधुबनी) मे सन् 1942 ई. सं दीयाबातीक अवसर पर त्रिदिवसीय आयोजनमे एक राति निश्चित रूप सं मैथिली नाटकक आयोजन होइत आबि रहल अछि। ललित नारायण नाट्यकला परिषद, भगवतीपुर, मधुबनी, गौरीशंकर धाम जमुथरि मे प्रतिवर्ष

> **हनुमान नाट्य कला परिषद, भौर हनुमान नगर, प्रखंड पंडौल (मधुबनी) मे सन् 1942 ई. सं दीयाबातीक अवसर पर त्रिदिवसीय आयोजनमे एक राति निश्चित रूप सं मैथिली नाटकक आयोजन होइत आबि रहल अछि।**

शिवरात्रिक उपलक्ष्यमे, भद्रकाली नाट्य परिषद, कोइलख, मधुबनी, बजरंग नाट्य कला परिषद, सप्ता, मधुबनी, ललित नाट्यकला परिषद लोहना (पूर्व), मधुबनी, किशोर कला केंद्र, गजहरा (मधुबनी) द्वारा दुर्गापूजा, छठि, कृष्णाष्टमी, कोजगरा आदिक अवसर पर। सुसारी, बहेरी (दरभंगा)मे प्रतिवर्ष दुर्गापूजाक उपलक्ष्यमे। श्यामानन्द नाट्य कला परिषद, महिनाथपुर (मधुबनी)मे प्रतिवर्ष शिवरात्रिक उपलक्ष्यमे। आदित्य नाट्य सांस्कृतिक कला परिषद, भोजपंडौल (मधुबनी)मे प्रतिवर्ष दुर्गापूजाक उपलक्ष्यमे। दुर्गा नाट्य परिषद, ननौर (मधुबनी)मे दुर्गापूजाक उपलक्ष्यमे। धमियांपट्टी, जयनगर (मधुबनी)।

उपरोक्त जनतब जुटबय मे फेसबुक पर अनेकानेक महानुभावक सहयोग प्राप्त भेल अछि। हुनका लोकनिक आभार व्यक्त करयने बिना ई आलेख पूर्ण नहि अछि। एहि पुनीत काज लेल निम्नलिखित सब लोकनिक बहुत-बहुत आभार: संजीब झा, हितनाथ झा, अभि आनन्द, मुरारी वत्स, गुंजन श्री, रौशन राजा, सतीश ठाकुर, कमलेश मिश्र, सुजीत झा, सुमितजय झा, पंकज मिश्र, अभिलाष ठाकुर, आशीष झा, पं. अजित जी कलाकार, पं. कमलेश प्रेमेन्द्र, अनूप झा, अभिनीत शांडिल्य, बालबोध कुमार झा, दीपक कुमार मैथिल, प्रियरंजन झा, अनुराग मिश्र, राजीव झा एंकर, कृष्णकान्त मिश्र, डॉ. (पं.) दयानन्द झा, नवीन झा, राधे चन्दन झा, देवेन्द्र प्रसाद सिंह।

उपरोक्त नाट्य मंचनक जानकारी किछु सीमित क्षेत्र/मित्र आदिक सहयोगक आधार पर तैयार कएल गेल अछि। ओना एहि प्रकारक लेख हेतु विस्तृत शोध आ समय सेहो चाही तथापि समय सीमा देखैत जतबा संभव भ' सकल से करबाक प्रयास कएल अछि। सम्भव अछि मिथिलाक बहुतो क्षेत्र, बहुतो गाम, बहुतो नाटक, बहुतो जिला, बहुतो संस्थाक जानकारी नहि आएल हो तथापि अपन चेतनाक आधार पर आंशिक रूपे समाविष्ट करबाक प्रयास अछि। उक्त लेखक विषय आ उद्देश्य आंकड़ा सं बेसी मैथिली नाटकक वर्तमान स्थिति जागरूकता ओ मंचनक प्रति ध्यानाकर्षण कराएब अछि। ■

अखिल भारतीय मिथिला संघ कें अपन प्रयास सभमे अपने सभक सहयोगक अपेक्षा अछि। संस्था कें प्रदत्त वित्तीय सहयोग आयकर अधिनियमक धारा 80जी केर अधीन कर मे छूट योग्य रहत। संघक सहयोगक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	**अखिल भारतीय मिथिला संघ** (**Akhil Bhartiya Mithila Sangh**)
खाता संख्या	:	**11084229861**
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	**110002087**
बैंक	:	**स्टेट बैंक ऑफ इंडिया**
शाखा	:	**पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली**

वीरान पड़ल अछि गामक रंगमंच

✍ नीलेश दीपक

लेखक दिल्ली स्थित युवा रंगकर्मी छथि। हिन्दी आ मैथिली दुनु रंगमंच पर लगातार अभिनय आ निर्देशन क रहल छथि। 'हिंदी रंगभूमि' नामक नाट्य मंडली संचालित करैत छथि। अनेकानेक प्रतिष्ठित मंच सभ पर प्रस्तुति कए चुकल छथि।

किछु दिन पूर्व गामसं घुरैत रही तं बहुत रास बात मोनमे उचरल। जतेक बेर गाम जाइत छी एकटा ने एकटा प्रश्न स्वयंसं करय लगैत छी, मुदा हम अपनहुं प्रश्नक उत्तर नहि द' पबैत छी। गाममे कैकटा पुरान होइत चित्र देखैत छी, सब चित्र कें निहारैत छी, मुदा आब ओ चित्र जेना बसिया भेल जा रहल होइक, ओकर कोनो महत्व नहि रहल होइक। गामक लोकसं पुछैत छियनि मुदा जबाव सब अलबत्ते अबैत अछि, बे-सिर-पैरक। हम अपनाकें रोकि नहि पबैत छी। हमरा मोनमे एहने एकटा चित्रक प्रश्न हमर अपन क्षेत्र रंगमंच सं आयल। हम गामक रंगमंचसं अपनहि नाटक करैत दिल्ली धरि आयल छी। जखन गामसं घुरैत रही तं ग्राम-सौराठ (जिला मधुबनी) मे एकटा पुरान रंगमंचक मंच (स्टेज) देखल जे आब बन्द छल। ओहि पर घास फूस, जंगल-झाड़ उगि आयल छल। वीरान पड़ल मंचकें देखि मोन हठात भ' गेल।

मिथिलामे प्राय: प्रत्येक गाममे नाटक-रंगमंचक जीवंत परम्परा छल। साल मे कम-सं-कम एकबेर दूर्गा पूजा, काली पूजा, कृष्ण पूजा आ छठि आदि अवसर पर नाटक होइते टा छल। ई नाटकक आयोजन दू-तीन या चारि दिवसीय होइत छल। चारि दिनमे चारि टा नाटक। एहि चारि दिनक आयोजनक लेल 10 या 15 दिनक रिहर्सल सेहो होइत छल। रिहर्सलक समय प्राय: रातिमे भोजनक बाद लालटेनक इजोतमे होइत छल। रिहर्सलक स्थान गामक इसकूल वा ककरो नमहर दलान होइल छल। मिथिलामे लोक नाटक करैत नहि छैक, 'खेलाइत' छैक। जेना-धुरखेल, हूर्राहूरी आदि, एकर सांस्कृतिक आयाम बेसी नमहर अछि। मिथिलाक ई खेल जकर परम्परा सैकड़ों सालसं रहल अछि से आब अपन अन्तिम अवस्थामे आबि गेल अछि, तेहन बुझना जाइत अछि।

मिथिलाक नाटकक बात करी तं मंचनक कथ्य आ शिल्प भारतेन्दुकालीन नाट्य परम्परा सन लगैत अछि। नाटकक कथ्य आमतौर पर ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक आर पौराणिक पृष्ठभूमिसं होइत अछि। जेना चारि दिवसीय नाट्य आयोजनमे चारि भिन्न-भिन्न शैली-कथ्यक नाटक भेनाय निश्चित होइत छल। नाट्य अभिनय पारसी शैलीक समीप तथापि बदलैत समय अनुरूप बहुत किछु परिवर्तित होइत रहैत छल। नाटक मंचनमे प्राउन्टरक प्रमुख भूमिका रहैत छल। गामक रंगमंच पर मंचित होमय बला नाटकमे राजा मंधाता, रावण, सती नाग चम्पा, एक लोटा पानी, बन्द दरवाजा, दो गज कफन, चम्बल घाटी का लुटेरा, एक चादर मैली सी, महिषासुर, देवासुर संग्राम, जालियांवाला बाग, कंस आदि प्रमुख छल। आरो बहुत रास नाटक खेलाइत छलाह लोक सब। गामक मंचक प्रमुख नाटककारमे बी.पी. राजेश, बी.एन. जयसवाल, चतुर्भुज, मोतीलाल मंजुल आदि होइत छलाह। गाममे सबसं सुखद बात ई होइत छल जे दू-तीन-चारि दिनक जे आयोजन होइक ओहिमे एक दिन मैथिली नाटक सेहो होइत छल। कतेक गाममे मात्र मैथिलीए नाटक होइत छल।

मुदा दुर्भाग्य ई जे मिथिलाक गाम मे नाट्य-परम्परा आब लगभग खत्म भ' गेल

संपर्क *: हिंदी रंगभूमि, दिल्ली, मो.: 9871864984,*
ईमेल: hindirangbhoomi@gmail.com

अछि। गामक रंगमंच आब सुन्न आ वीरान पड़ल अछि। किछु उत्साही नौजवान आ नवतुरियाक अथक प्रयाससं साइते कोनो गाममे नाट्य-परम्परा बांचल होयत तं बांचल होयत नहि तं प्राय: बेसी गाममे समाप्ते बुझु। हमरा लगैत अछि विगत 15-20 बरखक अन्दरमे एक-एक टा गामसं नाटक खेलेनाइ समाप्त होइत गेल। नहि जानि, की कारण छल जे दुर्गा पूजा, काली पूजा, छठि आदि तं होयत अछि मुदा ओहिमे मंचित होमय बला नाटक नहि होइत अछि। आश्चर्यक बात ई जे गाममे जे नाटक होइत छल ताहिमे बाहरी ककरोसं सहयोग लेल नहि जाइत छल, गामहिमे आपसी-सामूहिक सहयोगसं सब वर्गक लोक चन्दा दैत छलाह। तकर बादो आब किएक नाटक नहि होयत अछि?

हमरा नहि बुझल अछि जे मिथिलासं नाट्य-परम्परा किएक खत्म भेल वा मरल जा रहल अछि। मुदा भान होइत अछि जे गामसं हेंजक-हेंज पलायन, आर्केस्ट्रा, टीवी, सोशल मीडियाक प्रभाव आ बदलैत राजनीतिक-सामाजिक समीकरण एकरा लेल जिम्मेवार अवश्य होयत। एहि लेख संगहि एकटा फोटो देख रहल होयब, ई बन्न पड़ल मंच ग्राम सौराठक अछि। हमर पीसी गाम अछि सौराठ। एहि गाम मे प्रति बर्ख होमय बला दूर्गा पूजामे चारि दिवसीय नाटक उत्सव आयोजित होइत छल। सौराठ एकटा विशाल रंगमंच परम्पराक वाहक छल। बहुत नीक-नीक नाटक होइत छल। सुन्दर अभिनय करय बला अभिनेता सभक मण्डली छल। बेस्ट अभिनेता कें सभ बरख पुरस्कार भेटैत रहैत छलैक। हम धियापुता मे किछु बर्ख एहि गाममे नाटक देखने छी। हमरो गाम (मौआही, बाबूबरही, मधुबनी) मे कमोबेस एहने रंग परम्परा छल। हमर पिता सेहो खूब नाटक खेलाइत छलाह। हमरे गाम की? मिथिलाक प्राय: सब गाममे नीक बेजाय बर्ख मे एकबेर नाटक होइते टा छल। कोनो-कोनो गाम मे धियापुताक अलग मंडली सेहो रहैत छलैक। हम सब अपना गाम मे अपन बच्चा संगतुरिया संग अलग मंडली बनेने रही। बादमे किशोर आ कनी वयस्क भेला पर पिताक संगहि नाटक खेलय लगलहुं। बादमे शहर आबि शहरी नाटकसं जुड़ि गेलहुं, मुदा बिडम्बना देखियौक जे आब सौराठ सं ल' गाम-गाम मे नाटक खेलेनाइ बन्द भ' गेल अछि वा बन्द भ' रहल अछि। कलाकार सभहक मोन तं निश्चिते कचोटैत हेतनि मुदा ओ सब विवश भ' किछु नहि क' पबैत छथि।

आखिर की कारण अछि जे मिथिला अपन सभटा कला, खेल आर साहित्य परम्पराकें बेरा-बेरी समाप्त क' रहल अछि। मिथिला समाज आ मैथिली संस्कृतिक निर्माणमे खेल आर 'कला' क' बहुत महत्वपूर्ण स्थान अछि। मुदा पहिले खेल (खो-खो, कबड्डी, दौड़धूप, हुर्रा हुर्री, आदि) तखन साहित्य, पठन-पाठन आदि केर समाप्ति भेल। हमरा मोन अछि जे प्राय: सब गाममे पुस्तकालय रहय, ओहि ठाम आबि लोक सब पठन-पाठन, वाचन आर विमर्श करथि। आब ई संस्कृति कतहुं ने देखा रहल अछि। धीरे-धीरे कला, संस्कृतिक बहुत रास परम्परा समाप्त भ' रहल अछि, जेना- ढ़ोल पीपही (लगभग समाप्ते बुझु, एहि स्थान पर बैंड बाजा वा डी.जे. टाइप किछु आरे आबि गेल), लोक कथागायन, सामयिक लोकगीत गायन (पराती, फागू, चैती, फसल गीत, जट्ट जट्टीन, डोमकच्छ नाच, नौटंकी आदि, समाप्तिएक कगार पर अछि) इमहर चित्रकलाक हाल आर खराब अछि। गामकमे लोकक अभावे बुझु मुश्किले सं अरिपन, देबार - भगवती लिखब आर अन्यान्य भित्ती चित्र सेहो नहिए क' बराबर बुझु होइत अछि। गाममे बचल बूढ़ निसहाय लोक सं उम्मीद कतेक करब ? ओ सब जैह क' दैत छथि सैह बचलो अछि।

एहि बातक बहुत आश्चर्य भ' रहल अछि जे मिथिला समाज आर संस्कृति जतए नीति, शास्त्र, खेल, कला, संस्कृति, साहित्य, रंगमंच व चित्रकला आदि सं समृद्ध छल अथवा अछि से आब अपनहि चीजकें विनष्ट क' रहल अछि। मिथिलामे एखनहुं कला माध्यममे कीर्तन-भजन आ संस्कार गीत बांचल अछि, नहि जानि कहिया धरि इहो परम्परा जीवित रहत। हमरा लगैत अछि एहि पीढ़ी धरि रहत बाकि आगां की होयत से नहि जानि। हमरा लागि रहल अछि जे एखनुका समय पारम्परिक कलाक विध्वंसक काल अछि। पुरान कला समाप्त भ' रहल अछि, ओकरा बदला नव तरहक कलारूप आबि रहल अछि। नव तरहक जे कला अछि तकर स्वरूप एक्कहि रंगक अछि, जेहने अमेरिका मे, तेहने पंजाबमे आर तेहने मिथिला मे। एकटा भयाओन सत्यक दिस हम सब जा रहल छी। की समूचा विश्व एक्कहि चाक पर लागल अछि? जेना बुझायत अछि जे डंडी सं एक आदमी सांचा पर राखि चाक कें घूमा रहल अछि। एतय कोनो विविधिता नहि, कोनो अपन अभिव्यक्ति नहि, देखा रहल अछि, जेना मिथिला कतहु हेरा रहल अछि। ■

कवि आ कविता

– अरुणदेव झा

मोनक भावना के कागतक तराइ पर,
कलम के लरना से सर्वत्र पसारू।
अन्न के पसारि लोक सुखबइत छथि धरती पर,
भावना पसारि जन मानस रस छीटू।।
मन: पटल केर जेबी मे, कल्पना नुकाएल अछि।
कल्पना उद्वेलित भए, भावना उकसायल अछि।।
छिनरि कें पसरंड लेल, मानव मोन समेटल अछि।
अन्तर केर भावना, मोन-मंदिर ओझरायल अछि।।
घर के बहाड़ि फेकू, कासत गनौरा पर।
भावना बहाड़ि फेकू, भारत के कोरा पर।।
जनमल एहि नेना केर मांथ, निपल पाटी सन।
खाली मांथ-खोपड़ी, चमकैये सोना बाटी सन।।
पाटी पर जेहेन मोन भारतक चित्र घींचू।
बारी मे खुडी ओ खोआक स्वप्न खींचू।।
बहाबै जाउ, कल्पना आ भावनाक सरिता।
भावना धिक कवि आ भाव बनल कविता।। ■

संपर्क : ग्राम+पोस्ट: आनंदपुरा, भाया: ग्वालपाड़ा
जिला: मधेपुरा, बिहार-852115
मोबाइल: 8864013801, 9431657637

इंटरनेट आ मिथिलाक्षर, मैथिली भाषाक फॉण्ट, मिथिलाक्षरमे पोथी आ पत्रिका

✍ आशीष अनचिन्हार

मैथिली गजल एवं शेरो-शाइरीपर केंद्रित इंटरनेट पत्रिका (ब्लाग रूपमे) 'अनचिन्हार आखर' http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ केर संस्थापक ओ संपादक।

प्रकाशित कृति : 1) अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ ओ कता संग्रह), 2) मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास (ई भर्सन प्रकाशित), 3) मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (ई भर्सन प्रकाशित), 4) जंघाजोड़ी (गजल संग्रह, ई भर्सन प्रकाशित)। श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक संगे सह-संपादित पोथी : 1) मैथिली गजलः आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा), ई-भर्सन प्रकाशित, 2) मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (1905सं 2016 धरि), ई-भर्सन प्रकाशित

सम्मान : बर्ख 2014 लेल विदेह भाषा सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)सं पोथी 'अनचिन्हार आखर' (गजल संग्रह) लेल सम्मानित।

भाषामे पहिने बजनाइ क्रिया भेलै आ तकर बाद लिखनाइ। लिखबाक लेल बहुत तरीका प्रयोग भेलै आ तकर बाद समयानुसार लिखबाक लेल सामग्री सेहो बदलैत गेलै। लेख प्रतीक सेहो समायानुसार बदलैत गेलै। उदाहरण लेल देवनागरीमे आइसं सत्तर-अस्सी बर्ख पहिने "अ" जेना लिखल जाइत छलै से आब नै लिखल जाइत छै। बहुत संभव जे सौ बर्ख बाद एखनुक लेख प्रतीक सेहो बदलि जाए। एकटा ईहो बात जे लेख प्रतीक सभ लेल एकै होइ छै मुदा हरेक लोकक लिखावट केर कारण हरेक लोकक अपन लेख प्रतीक बनि जाइ छै। देखैत हेबै जे लोक झटसं कोनो लिखल देखि कहत जे ई फल्लां हाथक लिखल छै। फेर कहब लेख प्रतीक सभ लेल एकै होइ छै मुदा ओकर लिखावट अलग लोक होइते अलग भ' जाइत छै। बहुत बेर अवस्था अथवा अन्य कारणसं एकै लोकक लिखावट अलग-अलग भ' जाइत छै। आधुनिक कालमे जखन कंप्यूटर एलै तखन लिखबाक झंझट एलै जे कंप्यूटर पर प्रचलित लेख प्रतीक कें कोना आनल जाए। आ तकर समाधान फॉण्ट केर रूपमे भेलै। मने फॉण्ट कंप्यूटर पर लिखबाक एकटा साधन भेल। मुदा जे लोकक लिखबाक तरीका एक नै छै तेनाहिते विभिन्न समयमे फॉण्टमे सेहो विविधता आएल मने एकै लेख प्रतीक लेल बहुत फॉण्ट। कुल मिला क' फॉण्ट लिखबाक स्टाइल भेल। अंग्रेजी लिखबाक लेल ई फॉण्ट सभ अथवा एही समूहक फॉण्ट सभ लोक रोजे देखैए- 1. Arial 2. Roboto 3. Times New Roman 4. Times 5. Courier New 6. Courier 7. Verdana 8. Georgia तहिना हरेक भाषा लेल अलग-अलग नाम छै। कोन बात लीखि रहल छी ताहि हिसाबसं फॉण्ट सेहो बदलि जाइत छै। बियाहक कार्ड जाहि फॉण्टमे लिखल जेतै ताहि फॉण्टमे नौकरीक आवेदन लिखबै तं ओतेक नीक रिजल्ट नै भेटत। किछु उदाहरण–

Calibri (Body) Font–A

Cambria (Headings) font–A

गौरसं देखू दूनू फॉण्टमे एकै लेख प्रतीक छै मुदा दूनूक स्टाइल अलग भ' गेल छै। जेना जतेक लोक ततेक लिखावट तेनाहिते जतेक लोक ततेक फॉण्ट। ई अलग बात जे फॉण्ट बनेबा लेल बेसी मेहनति लागै छै तंइ लोक कम्मे फॉण्ट्सं गुजर चला लैत अछि। कुल मिला क' ई फॉण्ट कोनो भाषाक graphical प्रदर्शन छै से चाहे ओ कोनो माध्यमसं किएक ने हो। वर्तमान समयमे कम्प्यूटर अछि तं सैह सही। मैथिलीमे कंप्यूटरसं पहिने छापाखाना लेल फॉण्ट बनलै आ ताहिमे श्रेय छनि जयकांत मिश्रजीकें जे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, शिमला लेल बनेलाह। तकर बाद टाइपराइटर लेल फॉण्ट बनलै मुदा मैथिलीक टाइपराइटर तिरहुत्तामे नै बनलै। अधिकांश भारतीय भाषा केर फॉण्ट छापाखाना, टाइपराइटर तखन कंप्यूटर धरि आएल छै मुदा तिरहुत्ताक फॉण्ट छापाखानासं सीधे कम्प्यूटर पर। फॉण्टक फार्मेट बहुत होइत छै मुदा तीन तरहक प्रमुख–1) TTF TrueType Font (.ttf), 2) OTF format (OpenType.

संपर्क : 5/1/1सी, दुर्गा चरणमित्र रोड, कोलकाता-6

मोबाइलः 8876162759, ईमेल : ashish.anchinhar@gmail.com

oft) आ 3) WOFF (Web Open Font Format) अछि (ई फॉण्ट सभ कोना काज करैए से एहि लेखक उद्देश्य नहि अछि, एहि लेल हमर अन्य आलेख देखल जा सकैए)। प्राय: यूनिकोड फॉन्ट सभ otf अछि। एकर अतिरक्त कोनो भाषाक मानक लेख प्रतीककें यूनीकोड फॉण्ट कहल जाइत[1] छै आ एहि मानक फॉण्टक आधार पर आनो-आन यूनीकोड फॉण्ट बनाएल जा सकैए। माइक्रोसाफ्टमे वैह फॉण्ट डिफाल्ट रूपमे आबि सकैए जकर कि यूनीकोड संस्करण उपलब्ध हो जेना देवनागरी लेल मंगल फॉण्ट डिफाल्ट रूपमे छै। तंइ यूनीकोड फॉण्टक महत्व बेसी छै। ओनाहुतो कोनो चीजक एकटा मानक रूप रहबेक चाही। चूंकि मैथिली भाषा वर्तमानमे देवनागरीमे लिखल जाइत छै तंइ भारतक मैथिली लेल हिंदी बला फॉण्ट काज केलकै तं नेपालक मैथिली लेल नेपाली बला फॉण्ट। मिथिलाक्षर (तिरहुता)मे फॉण्ट बनाएब बांकी छल आ से सार्वजनिक रूपे नेपालसं दू लोक बनेलथि। नेपालसं पहिल दावेदार सी.के. राउत छथि जे तिरहुता केर नामसं फॉण्ट 9 मार्च 2003 मे बनेलाह। एकर लिंक आ फोटो नीचा देल अछि: https://www.scriptsource.org/cms/scripts/page.php?item_id=entry_detail-uid=ytelv8889u.

नेपालेसं दोसर दावेदार राजबिराज केर गंगेश गुंजन झा आ श्रवीण कुमार मिश्रा (Shravin Kumar Mishra) "मैथिली" नामक फॉण्ट बनेलाह जे कि वर्ष 2004 मे त्रिभुवन विश्वविद्यालय केर सेंट्रल

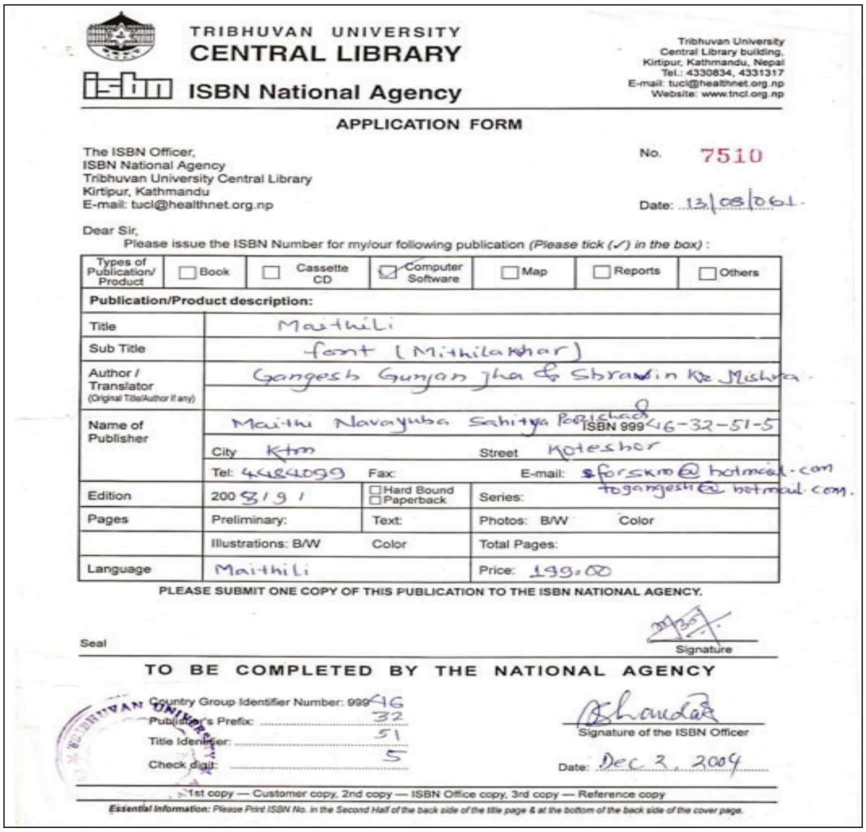

TRIBHUVAN UNIVERSITY
CENTRAL LIBRARY
ISBN National Agency

Tribhuvan University
Central Library building,
Kirtipur, Kathmandu, Nepal
Tel.: 4330834, 4331317
E-mail: tucl@healthnet.org.np
Website: www.tncl.org.np

APPLICATION FORM

The ISBN Officer,
ISBN National Agency
Tribhuvan University Central Library
Kirtipur, Kathmandu
E-mail: tucl@healthnet.org.np

No. 7510

Date: 13/08/061

Dear Sir,
Please issue the ISBN Number for my/our following publication *(Please tick (✓) in the box)* :

Types of Publication/ Product	☐ Book	☐ Cassette CD	☑ Computer Software	☐ Map	☐ Reports	☐ Others

Publication/Product description:			
Title	Maithili		
Sub Title	font (Mithilakhar)		
Author / Translator (Original Title/Author if any)	Gangesh Gunjan Jha & Shravin Kr. Mishra		
Name of Publisher	Maithi Navayuba Sahitya Parishad ISBN 99946-32-51-5		
	City Ktm		Street Koteshor
	Tel: 4484099	Fax:	E-mail: sforskm@hotmail.com togangesh@hotmail.com
Edition	2008/9/	☐Hard Bound ☐Paperback	Series:
Pages	Preliminary:	Text:	Photos: B/W Color
	Illustrations: B/W	Color	Total Pages:
Language	Maithili		Price: 199.00

PLEASE SUBMIT ONE COPY OF THIS PUBLICATION TO THE ISBN NATIONAL AGENCY.

Seal

Signature

TO BE COMPLETED BY THE NATIONAL AGENCY

Country Group Identifier Number: 99946
Publisher's Prefix: 32
Title Identifier: 51
Check digit: 5

Signature of the ISBN Officer

Date: Dec 2, 2004

1st copy — Customer copy, 2nd copy — ISBN Office copy, 3rd copy — Reference copy

Essential Information: *Please Print ISBN No. in the Second Half of the back side of the title page & at the bottom of the back side of the cover page.*

लाइब्रेरीसं ISBN प्राप्त केलक। आ ताहिमे संतोष कुमार मिश्र, सहित आरो लेखक मिथिलाक्षरमे पोथी प्रकाशित भेल। निच्चामे एहि काजक दूटा फोटो प्रमाण देल जा रहल अछि।

2019 मे विनय झा दावा केलाह जे ओहो 2003 मे मिथिलाक्षर फॉण्ट 1DevMithila बनेलाह आ तकर समर्थनमे बहुत रास साक्ष्य रखलाह मुदा ओहि साक्ष्य सभमे ओ कखनो 2000 साल कहलाह तं कखनो 2002, तं कखनो 2004 मने एकरूपता नै। निच्चामे हुनक किछु पोस्टक स्क्रीनशाट देल गेल अछि। मुदा हुनके बहुत पोस्टक अधारपर हम ई मानैत छी जे ओ 2004 मे बनेलाह संगे-संग भवनाथ झा जी सेहो ई स्वीकार केलाह (विनयजीक पोस्टपर) जे विनयजी लगभग 2004मे हुनका स्वनिर्मित फॉण्ट देने रहथिन मतलब ई निश्चित भेल जे विनयजी सेहो ओही कालखंडमे फॉण्टक निर्माणमे लागल छलाह। लगभग 2019 मे विनयजीक दावेदारी बला पोस्ट सभपर अनेक कारणसं आ वर्णक आकार-प्रकार ल' विनयजी आ भवनाथजीमे घोंघाउज होइत रहल। आ हमरा हिसाबें ई दूनू गोटाक अति छल, कारण कोनो भाषाक फॉण्ट मानक लेख प्रतीकक विभिन्न स्टाइल होइत छै। तंइ स्वाभाविक जे गंगेश जी बला फॉण्ट, राउतजी बला फॉण्ट आ विनयजी बला फॉण्ट अलग-अलग हेतै। ओना ई बात निर्विवाद छै जे हरेक चीज आउटडेटेड होइत छै तंइ कोनो फॉण्ट सेहो आउटडेटेड भ' सकैए। विनयजीक एकटा आर बात खटकल हमरा जे जं हुनका अपना कालखंडमे बनल आन

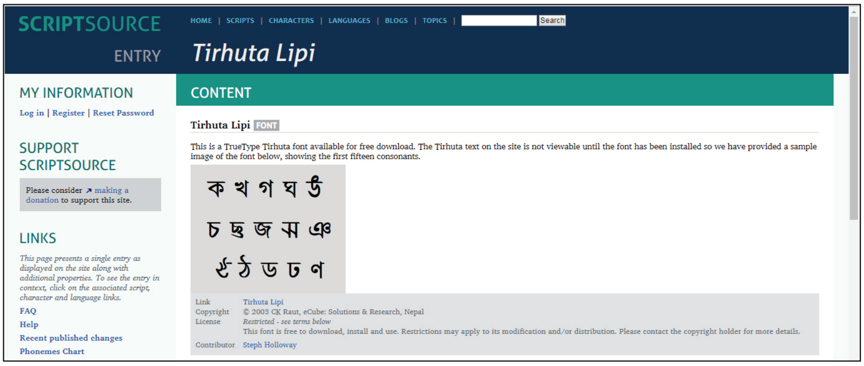

1. हरेक फॉण्ट स्वयं मानक लेख प्रतीक होइछ। यूनिकोड एहन फॉण्ट अछि जे कोनहु ऑपरेटिंग सिस्टम पर यूनिवर्सली (बिना कोनो हेर-फेर) काज क सकय। एहन बझाईछ जे यूनिकोड फॉण्टक अवधारणा पर मैथिल जगत मे किछु स्पष्टताक अभाव अछि। एहि विषय पर आओर विस्तृत विमर्शक आवश्यकता अछि। -संपादक

फॉण्टक जानकारी नै छनि तं एकर ई मतलब नै जे ओ पहिल भ' जेता। एहन प्रवृति हमरा पद्मनाभोजीमे भेटल अछि जकर वर्णन हम अपन पोथी “मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास'' मे केने छी (ई पोथी समय-समयपर अपडेट होइत रहैए। अतेक तं निश्चित जे वर्तमानमे (2018सं ल' क' एखन धरि) विनयजी अपन बनाएल फॉण्टमे बहुत रास परिवर्तन केलथि आ ओकरा बेसी नीक बना क' परसलथि। एहि विवाद सभकें कात करैत हमरा विचारे 2004 एहन बर्ख अछि जे कि सभ फॉण्ट निर्माताक संधिस्थली बनि सकैए तंइ सी.के. राउत जीकें हम पहिल फॉण्ट निर्माता मानितो (आ जे कि ओ वस्तुत: पहिल छथिहो) हम 2004कें मिथिलाक्षर फॉण्ट बर्ख कहि संबोधित करब। दोसर बात जे फॉण्टक संधिस्थली बर्ख 2004 लेल हम एकटा सूत्र बनेलहुं CGSV (चंद्रकांत-गंगेश-श्रवीण-विनय) आ मिथिलाक्षर फॉण्टक पहिल निर्माताक रूपमे हम एहि सूत्र CGSV कें हम जनताक सामने राखि रहल छी। ओना ई हमरा स्वीकार करबामे कोनो हर्जा नै जे 2019सं लगातार सक्रिय भेलाह आ मिथिलाक्षर फॉण्ट अलावे कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इण्टेलिजेन्स) मे विनयजीक योगदान सेहो देलाह जे कि सराहनीय छनि आ एहि काजकें http://vedicastrology.wikidot.com/mithilakshara-font#toc8 लिंक पर देखि सकैत छी। एकर अतिरिक्त ईहो उल्लेखनीय जे मोबाइल पर मिथिलाक्षरमे लिखबाक लेल पहिल टूल विनये जी 2019 मे बनेलाह। एहिसं पहिने लिखबाक सुविधा नै छल मोबाइलमे। विनय झाजी लेखपट्ट नामसं फॉण्ट बना एकर समाधान केलाह जे http://vedicastrology.wikidot.com/mithilakshara-font#toc0 लिंक पर भेटत। विनयजीक लेखपट्टसं पहिने लोक अक्षरमुख केर साइटपर जा क' अपन लिखलकें मिथिलाक्षरमे बदलि ओकर फोटो बना मोबाइलपर दैत छल। मोबाइलक फॉण्ट लेल आर बहुत रास काज लेल विनयजीक अभिनंदन। निच्चा विनयजीक पोस्टक स्क्रीनशाट सभ द' रहल छी–

एकर बाद 2007मे अनु झाक मिथिला नामसं फॉण्ट आएल।

2013 मे कौशल कुमार सूर्यलक्ष्मी नामसं फॉण्ट बनेलाह।

एहिठाम आबि हम एकटा बात कहब। हम चाहितहुं तं कौशलजीक नाम नहियो ल' सकै छलहुं कारण ओ हमरासं बहुत असहमति राखै छथि आ केतेको बेर बहस सेहो भेल अछि। मैथिलीक ई परंपरा रहलैए जे अपनासं असहमत केर नाम लिस्टसं काटि दी। आ तंइ हमर नाम हरेक ठाम कटले भेटत। गजलोपर काज करैत काल हम अपन विरोधीक नाम सेहो देलियनि। एहू लेखमे द' रहल छी। हमर मानब अछि जे जं विरोधी काज केने हो तं ओकर चर्चा हेबाके टा चाही। हमर नाम भने मैथिलीसं कटैत रहए मुदा आन काज केनिहारक नाम हम जोड़ैत रहब। आ हम एही लेल मैथिलीक परंपरासं हटि क' छी।

यूनीकोड लेल सभसं पहिने भारत सरकारक दिससं ओम विकासजी 2005 मे मिथिलाक्षरकें Minority Scripts खंडमे नामित केलखिन जकरा एहि लिंकपर देखि सकैत छी https://www.unicode.org/2/L2005/05063-vikas.pdf 2006 संएहि काज लेल अंशुमान पांडेयजी लगलाह 2006 बला प्रस्ताव केर लिंक अछि http://std.dkuug.dk/jtc1/sc2/wg2/docs/n3312.pdf जाहिमे मिथिलाक्षरक संदर्भ लेल ओ पंडित गोविन्द झाजी

Ashish Home Create

Add Friend Follow

Vinay Jha
19 February

सरकारी कमिटी ने रिपोर्ट दी है कि मिथिलाक्षर में कोई फॉण्ट नहीं है अतः सरकार को फॉण्ट बनवाने का कार्य शीघ्र पूरा कराना चाहिये, अर्थात् कुछ करोड़ रूपये खाने पीने के लिये इन महापुरुषों और इनके मित्रों को देना चाहिये । इस कमिटी को बनवाने वाले नेता हैं जे·डी·यू· के संजय झा जिनको इसबार भाजपा अपनी जीती हुई दरभंगा की सीट दान में दे रही है (जीवन में कभी कोई चुनाव नहीं जीते हैं, जेटली जी की तरह; किन्तु उनकी ही तरह सुपर–नेता हैं, और उनके चहेते भी हैं)।
इस कमिटी के सारे सदस्य और संजय झा मुझे अच्छी तरह जानते हैं और यह भी जानते हैं कि मिथिलाक्षर का फॉण्ट मैंने २००२ में ही बना दिया था और बाद में अन्तर्राष्ट्रीय यूनीकोड कॉन्सॉर्टियम द्वारा मिथिलाक्षर को यूनीकोड में रेंज प्राप्त हुआ तो मैंने यूनीकोड फॉण्ट भी बना दिया । किन्तु इनलोगों के अनुसार मेरा और मेरे सभी कार्यों का कोई अस्तित्व ही नहीं है । समाचार पढ़िये = "completing the work affecting Unicode Scripts of Mithilakshar by Technology Development of Indian Languages (TDIL) early" :--
https://www.indiatoday.in/…/ancient-language-maithili-is-at…

INDIATODAY.IN
www.indiatoday.in

Anikesh K. Jha, Vijay Jha and 409 others 47 comments 76 shares

Like Comment Share

Most relevant

Ashish Home Create

Add Friend Follow

Like · Reply · 31w

View more comments 4 of 62

Vinay Jha
15 January

लेखपट्ट में प्रयोगकर्ता के मनचाहे वर्ड आर्ट सेटिंग को भी मनमाने तौर पर बदलना और स्वतः सुरक्षित करना Save Settings आसान बना दिया ।

२००० ईस्वी में मैंने मिथिलाक्षर से ही यह कार्य आरम्भ किया था जो देवनागरी के साथ २००५ ईस्वी में समाप्त हुआ, किन्तु मन्त्री महेश शर्मा ने मैथिली को गाली पढ़ी तो मैंने कार्य आगे बढ़ाया और अब अन्य बहुत सी लिपियों सहित यूनीकोड वर्ड प्रोसेसर तैयार है । देवनागरी में भी मुझे सबसे अधिक आसानी इसी सॉफ्टवेयर में होती है । जो भारतीय लिपियाँ आपको नहीं आती हैं उनमें भी देवनागरी की तरह बटन दबाने से शुद्ध स्वचालित संयुक्ताक्षरों सहित टाइपिंग की जा सकती है और उनके कलात्मक वर्ड आर्ट बनाये जा सकते हैं ।
मकर संक्रान्ति के अवसर पर मूल कार्य सम्पन्न हो गया । छिटपुट जोड़जाड़ या सुधार तो सॉफ्टवेयरों में चलते ही रहते हैं ।

डाउनलोड लिंक –
http://vedicastrology.wikidot.com/…/mithilak…/Lekhapatta.rar

लेखपट्ट में प्राचीन मिस्री लिपि का कलात्मक वर्ड आर्ट –
Egyptian Hieroglyphs Word-Art in Lekhpatta =

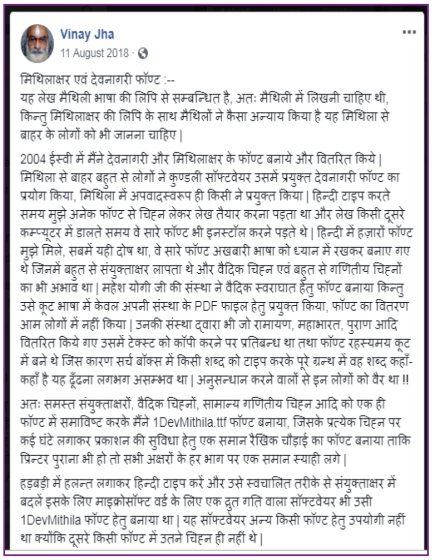

Vinay Jha
11 August 2018

मिथिलाक्षर एवं देवनागरी फॉण्ट :--
यह लेख मैथिली भाषा की लिपि से सम्बन्धित है, अतः मैथिली में लिखनी चाहिए थी, किन्तु मिथिलाक्षर की लिपि के साथ मैथिलों ने कैसा अन्याय किया है यह मिथिला से बाहर के लोगों को भी जानना चाहिए |

2004 ईस्वी में मैंने देवनागरी और मिथिलाक्षर के फॉण्ट बनाये और वितरित किये | मिथिला से बाहर बहुत से लोगों ने कुण्डली सॉफ्टवेयर उसमें प्रयुक्त देवनागरी फॉण्ट का प्रयोग किया, मिथिला में अपवादस्वरूप ही किसी ने प्रयुक्त किया | हिन्दी टाइप करते समय मुझे अनेक फॉण्ट से चिह्न लेकर लेख तैयार करना पड़ता था और लेख किसी दूसरे कम्प्यूटर में डालते समय वे सारे फॉण्ट भी इनस्टॉल करने पड़ते थे | हिन्दी में हज़ारों फॉण्ट मुझे मिले, सबमें यही दोष था, वे सारे फॉण्ट अखबारी भाषा को ध्यान में रखकर बनाए गए थे जिनमें बहुत से संयुक्ताक्षर लापता थे और वैदिक चिह्न एवं बहुत से गणितीय चिह्नों का भी अभाव था | महेश योगी जी की संस्था ने वैदिक स्वराघात हेतु फॉण्ट बनाया किन्तु उसे कूट भाषा में केवल अपनी संस्था के PDF फाइल हेतु प्रयुक्त किया, फॉण्ट का वितरण आम लोगों में नहीं किया | उनकी संस्था द्वारा भी जो रामायण, महाभारत, पुराण आदि वितरित किये गए उसमें टेक्स्ट को कॉपी करने पर प्रतिबन्ध था तथा फॉण्ट रहस्यमय कूट में बने थे जिस कारण सर्च बॉक्स में किसी शब्द को टाइप करके पूरे ग्रन्थ में वह शब्द कहाँ-कहाँ है यह ढूँढना लगभग असम्भव था | अनुसन्धान करने वालों से इन लोगों को वैर था !!

अतः समस्त संयुक्ताक्षरों, वैदिक चिह्नों, सामान्य गणितीय चिह्न आदि को एक ही फॉण्ट में समाविष्ट करके मैंने 1DevMithila.ttf फॉण्ट बनाया, जिसके प्रत्येक चिह्न पर कई घंटे लगाकर प्रकाशन की सुविधा हेतु एक समान रैखिक चौड़ाई का फॉण्ट बनाया ताकि प्रिन्टर पुराना भी हो तो सभी अक्षरों के हर भाग पर एक समान स्याही लगे |

हड़बड़ी में हलन्त लगाकर हिन्दी टाइप करें और उसे स्वचालित तरीके से संयुक्ताक्षर में बदलें इसके लिए माइक्रोसॉफ्ट वर्ड के लिए एक द्रुत गति वाला सॉफ्टवेयर भी उसी 1DevMithila फॉण्ट हेतु बनाया था | यह सॉफ्टवेयर अन्य किसी फॉण्ट हेतु उपयोगी नहीं था क्योंकि दूसरे किसी फॉण्ट में उतने चिह्न ही नहीं थे |

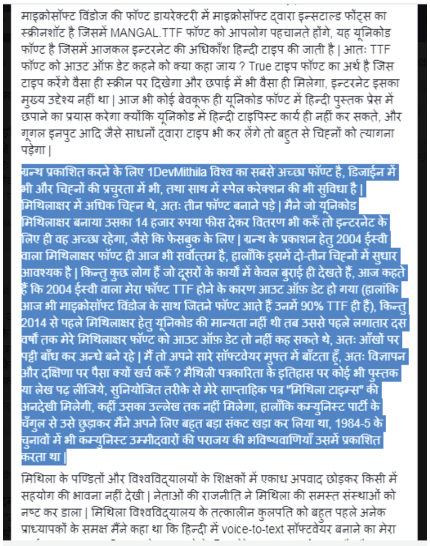

माइक्रोसॉफ्ट विंडोज की फॉण्ट डायरेक्टरी में माइक्रोसॉफ्ट द्वारा इन्सटाल्ड फोंट्स का स्क्रीनशॉट है जिसमें MANGAL.TTF फॉण्ट को आपलोग पहचानते होंगे, यह यूनिकोड फॉण्ट है जिसमें आजकल इन्टरनेट की अधिकाँश हिन्दी टाइप की जाती है | आतः TTF फॉण्ट को आउट ऑफ़ डेट कहने को क्या कहा जाय ? True टाइप फॉण्ट का अर्थ है जिस टाइप करेंगे वैसा ही स्क्रीन पर दिखेगा और छपाई में भी वैसा ही मिलेगा, इन्टरनेट इसका मुख्य उद्देश्य नहीं था | आज भी कोई बेवकूफ ही यूनिकोड फॉण्ट में हिन्दी पुस्तक प्रेस में छपाने का प्रयास करेगा क्योंकि यूनिकोड में हिन्दी टाइपिस्ट कार्य ही नहीं कर सकते, और गूगल इनपुट आदि जैसे साधनों द्वारा टाइप भी कर लेंगे तो बहुत से चिह्नों को त्यागना पड़ेगा |

ग्रन्थ प्रकाशित करने के लिए 1DevMithila विश्व का सबसे अच्छा फॉण्ट है, डिजाईन में भी और चिह्नों की प्रचुरता में भी, तथा साथ में स्पेल करेक्शन की भी सुविधा है | मिथिलाक्षर में अधिक चिह्न थे, अतः तीन फॉण्ट बनाने पड़े | मैने जो यूनिकोड मिथिलाक्षर बनाया उसका 14 हजार रुपया फीस देकर वितरण भी करूँ तो इन्टरनेट के लिए ही वह अच्छा रहेगा, जैसे कि फेसबुक के लिए | ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु 2004 ईस्वी वाला मिथिलाक्षर फॉण्ट ही आज भी सर्वोत्तम है, हालाँकि इसमें दो-तीन चिह्नों में सुधार आवश्यक है | किन्तु कुछ लोग हैं जो दूसरों के कार्यों में केवल बुराई ही देखते हैं, आज कहते हैं कि 2004 ईस्वी वाला मेरा फॉण्ट TTF होने के कारण आउट ऑफ़ डेट हो गया (हालांकि आज भी माइक्रोसॉफ्ट विंडोज के साथ जितने फॉण्ट आते हैं उनमें 90% TTF ही हैं), किन्तु 2014 से पहले मिथिलाक्षर हेतु यूनिकोड की मान्यता नहीं थी तब उससे पहले लगातार दस वर्षों तक मेरे मिथिलाक्षर फॉण्ट को आउट ऑफ़ डेट तो नहीं कह सकते थे, अतः आँखों पर पट्टी बाँध कर अन्धे बने रहे | मैं तो अपने सारे सॉफ्टवेयर मुफ्त में बाँटता हूँ, अतः विज्ञापन और दक्षिणा पर पैसा क्यों खर्च करूँ ? मैथिली पत्रकारिता के इतिहास पर कोई भी पुस्तक या लेख पढ़ लीजिये, सुनियोजित तरीके से मेरे साप्ताहिक पत्र "मिथिला टाइम्स" की अनदेखी मिलेगी, कहीं उसका उल्लेख तक नहीं मिलेगा, हालाँकि कम्युनिस्ट पार्टी के चँगुल से उसे छुड़ाकर मैंने अपने लिए बहुत बड़ा संकट खड़ा कर लिया था, 1984-5 के चुनावों में भी कम्युनिस्ट उम्मीदवारों की पराजय की भविष्यवाणियाँ उसमें प्रकाशित करता था |

मिथिला के पण्डितों और विश्वविद्यालयों के शिक्षकों में एकाध अपवाद छोड़कर किसी में सहयोग की भावना नहीं देखी | नेताओं की राजनीति ने मिथिला की समस्त संस्थाओं को नष्ट कर डाला | मिथिला विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति को बहुत पहले अनेक प्राध्यापकों के समक्ष मैंने कहा था कि हिन्दी में voice-to-text सॉफ्टवेयर बनाने का मेरा

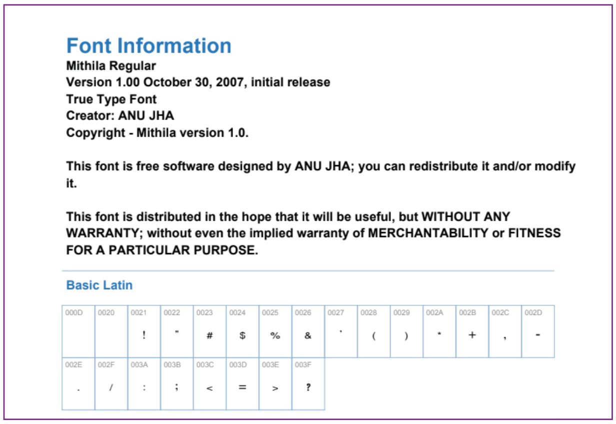

कल्याणी कोश ओ पं. जीवनाथ रायजीक पोथीक सहारा लेने छथि। 2007क लिंक अछि https://www.unicode.org/L2/2007.07139-north-indian-acctg-signs.pdf जे कि लगभग उपरे जकां अछि। अक्टूबर 2009 मे अंशुमान पांडेय फेर मिथिलाक्षरक यूनिकोड लेल आवेदन केलाह https://unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf जे की बादमे स्वीकार भेलै। स्वीकार भेल यूनीकोड रूप एहि लिंकपर देखि सकैत छी http://www.unicode.org/charts/PDF/U11480.pdf एहिठाम ई मोन राखब बहुत-बहुत जरूरी अछि जे जखन अंशुमान पांडेय 2009 मे फेरसं यूनीकोड लेल आवेदन केलखिन तखन ओ प्रमुखतासं गजेन्द्र ठाकुर ओ विदेहक उल्लेख केलथि कारण विदेहक हरेक अंक 2008 सं मिथिलाक्षरमे प्रकाशित छल आ ओकर अतिरिक्त श्रुति प्रकाशनक बहुत रास पोथी सेहो मिथिलाक्षरमे उपलब्ध छल, यूनीकोड लेल विदेह प्रचुर मात्रामे मिथिलाक्षरक नमूना देलक। अंशुमानजी अपन आभारमे एना लिखैत छथि "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS." रमानंद झा रमण, पं. गोविन्द झा, एवं नेपालक Dr. Dragomir Dimitrov एहन तीन नाम आर अछि जिनका प्रति पांडेयजी आभार व्यक्त नेने छथिन से उपरमे अंशुमानजी द्वारा देल 2009 केर प्रस्तावना लिंकपर जा क' देखि सकैत छी।

एकर बाद सी-डैक, पुणे द्वारा सेहो 2014 मे मिथिलाक्षर फॉण्ट बनाएल गेल यूनीकोडक आधारपर। आ सी-डैक, पुणे केर यैह फॉण्ट बेर-बेर अपडेट होइत रहल। अंतिम रूपसं अपडेट करबाक लेल भवनाथ झाजी लगलाह आ ओकर बदलामे गारि-गंजन भोगलाह। ओना भवनाथजी द्वारा कएल गेल अपडेट अंतरिम एप्रूभल केर बाद सी-डैक, पुणे सार्वजनिक करत। ई अपडेट करबाक प्रक्रिया एहन छै जे समयक संग चलैत रहतै। एहि लेल ने भवनाथजी दोषी छथि आ ने सी-डैक, पुणे।[2] दोषी तं ओ ओ सभ छथि जे कि एकटा फॉण्टकें अंतिम वस्तु मानि बैसल छथि। ओनाहुतो जखन पूरा समाजे अतीतोन्मुख अछि आ बात-बातपर वेदेसं अपन परिचय शुरू करैए ताहिठाम जं भवनाथजी जं पुरान हस्तलेखक आधारपर कोनो फॉण्टकें अपडेट केलाह तं ओहिमे दिक्कत की? हमरा कोनो दिक्कत नै बुझाइए, जहिया बुझाएत तहिया यूनीकोड बला फॉण्ट छैहे ओही आधारपर हम अपन नव फॉण्ट बना लेब। बहुत संभव जे भाषाक बदलैत स्वरूपमे दस बर्खक बाद सी-डैक, पुणे के फेर अपडेटकें जरूरति पड़तै तं ओ ओहि समयक मिथिलाक्षर-प्रवीणकें ई काज देत। भवनाथ झा जी द्वारा संवर्धित वैदेही फॉण्ट सेहो एखन सी-डैक, पुणे लग पड़ल अछि जे कि अंतरिम आदेशक बादे सार्वजिनक हएत।

आब विदेहक काज मिथिलाक्षरक प्रति की छै से द' रहल छी मुदा एकरा हम दू भागमे बांटब पहिल 2014 धरि आ दोसर 2015 सं एखन धरि। एहि बांट-बखराक ई आधार जे फेसबुक ओ ह्वाट्सएप केर माध्यमसं सेहो बहुत लोक मिथिलाक्षर सिखा रहल छथि आ ओहिमेसं सभ प्राय: 2015 केर बादे आएल छथि। चंद्रकांतजी बला फॉण्ट ओ विनयजीक प्रारंभिक फॉण्टमे कोनो पोथी ओ पत्रिका नै अछि। गंगेश-श्रवीण जी बलामे विनीत ठाकुरजीक एकटा पोथी प्रकाशित अछि। तकर बाद गंगेश-श्रवीणजी बला फॉण्ट मे संतोष कुमार मिश्रजीक पोथी सेहो छपल आ ई पोथी सभ नेपालसं मंगा सकैत छी। विदेहक पहिल अंक जनवरी 2008 सं ल' क' 149म अंक 1 मार्च 14 धरि मिथिलाक्षर, देवनागरी आ ब्रेल तीनूमे आनलाइन प्रकाशित भेल। 150म अंक 15 मार्च 2014 सं ल' क' एखन धरिक अंक देवनागरीमे प्रकाशित छै। विदेह हरेक पचीस अंकक किछु सेलेक्टेड रचना ल' क' "विदेह-सदेह" नामक प्रिंट रूप निकालने छै जे कि कुल 13 भागमे छै जाहिमेसं दस भाग मिथिलाक्षर, देवनागरी ओ ब्रेल तीनू लिपिमे छै आ शेष तीन भाग देवनागरीमे। विदेहक हरेक अंक फ्री डाउनलोड लेल उपलब्ध छै।

2. फॉण्टक निर्माण एक विशुद्ध तकनीकी विषय अछि। एहि लेल कोनो सरकारी संस्थान पर निर्भरता सेहो स्वयं मे आश्चर्यजनक अछि। हेबाक चाही जे तकनीकी रूपें लोकनि सहज उपयोग योग्य फॉण्ट विकसित करबाक लेल रुचि लेथु आ यदि हुनक प्रयोग सपल होएत त स्वयं आमजनक व्यवहार मे आओत। - संपादक।

संगे-संग “विदेह-सदेह” केर सभ अंक केर सभ लिपिमे प्रिंट ओ फ्री डाउनलोड सेहो उपलब्ध छै। प्रिंट रूप श्रुति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित छै आ पाठक एकरा कीनि सकै छथि जकर संपर्क सूत्र हम निच्चा देब। एकर अतिरिक्त बहुत रास पोथी सेहो मिथिलाक्षरमे प्रकाशित भेल जकर लिस्ट एना अछि–

गजेन्द्र ठाकुरजीक किछु पोथी–

1) कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक
2) Learn Mithilakshar Script तिरहुता (मिथिलाक्षर) सीखू
3) Learn Braille through Mithilakshar Script ब्रेल सीखू
4) Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला सीखू

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा जीक किछु पोथी–

1) Maithili-English Dictionaries-Vol.I (एकै पोथीमे अंगरेजी-देवनागरी-मिथिलाक्षर तीनू रूप)
2) Maithili-English Dictionaries-Vol.II (एकै पोथीमे अंगरेजी-देवनागरी-मिथिलाक्षर तीनू रूप)
3) Videha English-Maithili Dictionary Vol.I (एकै पोथीमे अंगरेजी-देवनागरी-मिथिलाक्षर तीनू रूप)
4) जीनोम मैपिंग (450 ए.डी. सं 2009 ए.डी.)-मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध (एकै पोथीमे देवनागरी-मिथिलाक्षर दूनू रूप)

एकर अलावे नचिकेताजीक नाटक “नो एण्ट्री : मा प्रविश” केर मिथिलाक्षर भर्सन सेहो अछि। उदयप्रकाशजीक हिंदी उपन्यास “मोहनदास” केर मैथिली अनुवाद विनीत उत्पलजी द्वारा एही नामसं भेल आ ई मिथिलाक्षर-देवनागरी आ ब्रेल लिपि तीनूमे अछि। ई सभ पोथी-पत्रिका निर्मलीसं उमेश मंडल द्वारा प्राप्त क' सकैत छी। लोक देवनागरीसं मिथिलाक्षर वा मिथिलाक्षरसं देवनागरीपर अटकल छथि मुदा गजेन्द्र ठाकुर 2008हि केर

आस-पास मिथिलाक्षर द्वारा ब्रेल लिपि ओ International Phonetic Script सिखबाक लेल किताब निकाललाह। विदेह पत्रिका मंगल आ वृंदा फॉण्टपर आधारित रहैत छल।

विनीत ठाकुरजीक पोथी “बांकी अछि हम्मर दूधक कर्ज” जनवरी 2008 मे गंगेश गुंजन झा-श्रवीण मिश्र बला मिथिलाक्षर फॉण्टमे प्रकाशित भेलै। एहि पोथीक एक कात मिथिलाक्षर ओ दोसर कात देवनागरी लिपिमे रचना छै। जं नेपालक संदर्भमे बात करी तं विनीत ठाकुर बहुत पहिने लगभग 2003-4 सं मिथिलाक्षर अभियानमे जुटल छथि से भने पत्रे बला माध्यम किएक ने हो। एखनो हिनकर बहुत रास रचना मिथिलाक्षरमे भेटत।

प्रारंभिक कालखंड ओ काजक बाद सोशल मीडियापर अजय नाथ झा शास्त्री मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान फेसबुकपर चला रहल छथि। जाहिमे दावा कएल गेल अछि जे लगभग दू लाखसं बेसी लोक मिथिलाक्षर सीखि लेलक। दूर्वाक्षत संस्था “मिशन मिथिलाक्षर योजना” चला रहल अछि। किछु गोटे एकर मासिक, त्रैमासिक कोर्स सेहो चला रहल छथि। बहुत गोटे तं ह्वाट्सएप पर सिखबाक-सिखेबाक आह्वान केने अछि। कुल मिला क' देखी तं प्रारंभिक (2003-14) केर बाद ई स्थिति नीक आ उत्साहजनक लगैत छै। नै दू लाख जं बीसे हजार सिखने हेता तैयो ई एकटा सकारात्मक पक्ष भेलै सोशल मीडियाक। उपरमे जे नाम देल तकर अतिरिक्तो बहुत नाम अछि जे एतए देब संभव नै मुदा ई बात तय जे मिथिलाक्षरक प्रति लोकक रुचि जगलै आ ताहि लेल नेओ केर पाथर सी.के. राउत, गंगेश-श्रवीण, विनय झा, गजेन्द्र ठाकुर, अंशुमान पांडेय सहित सोशल मीडियापर एखनुक समयमे सिखा रहल आ अपनाकें चमचमाइत शिखर मानि लेने सभ लोक धन्यवादक पात्र छथि।

एहिठाम ई कहब उचित जे अधिकांश सिखबए बला ओ सीखए बला या तं अक्षरमुख साइट केर सहायतासं फोटो बना दै छथि वा हाथसं लिखल पन्नाक फोटो। एहि ठाम सोशल मीडियासं सिखाएल जा रहल मिथिलाक्षरपर किछु एहन गलतीक उल्लेख हम करब जे कि प्राय: सभ सिखबए बला क' रहल छथिन आ सीखए बला क' रहल छथि। सिखबए आ सीखए बला दूनू वर्तनीक गलती बहुत क' रहल छथि। अहां भने मिथिलाक्षरेमे किए ने लिखी मुदा जं वर्तनी गलत रहत तं ओकर फइदा की? जाहि लिपिमे लीखू, सही लीखू। दोसर गलती बहुत बड़का गलती छै विभक्ति

केर संदर्भमे। मैथिलीमे विभक्ति शब्दमे जुड़ि जाइत छै मुदा अधिकांश मिथिलाक्षर बलामे देखि रहल छी विभक्ति हटल, ई तं मैथिलीक मूल विशेषतापर कुड़हड़ि मारि रहल छिये, जखन मूल विशेषते नै बंचतै भाषाक तखन लिपिए बचा की करब आ एहि प्रकारक गलती लेल सीखए बलासं बेसी सिखेनहार दोषी छथि। फेसबुकपर एहन गलती बला पोस्ट देखाइ पड़िए जाएत हम जानि बूझि क' एहिठाम नै देलहुं अछि। कहबाक लेल ईहो कहल जा सकैए जे देवनागरीमे जे मैथिली रचनाकार लिखलाह तकरे कियो मिथिलाक्षरमे लिप्यंतरण क' देलाह तंइ विभक्ति नै सटल भेटत मुदा ई जानब जरूरी जे मिथिलाक्षरमे विभक्ति सटब अनिवार्य। गीताप्रेस, गोरखपुरक हरेक हिंदी किताबमे विभक्ति सेहो सटल भेटत। जं ई सिखबए-सिखाबए बला सभ विदेहक मिथिलाक्षर पोथी-पत्रिका, नेपालसं प्रकाशित मिथिलाक्षर पोथी एवं छापाखाना बला मुद्रित मिथिलाक्षर पोथी पढ़ता ओ तखन लिखता तं आर बहुत बेसी लाभ हेबाक संभावना रहत।

ओना काज भेलै आ काज हेबो करत मुदा एहि लेखक अंत हम ई कहए चाहब जे किछु लोक एहन होइत छथि जे कि हरेक लोक लग प्रश्न करै छथि बिना ई चिंता केने जे उत्तर भेटत कि नै भेटत। कमसं कम मिथिलाक्षर फॉण्ट एवं कीबोर्ड संबंधमे रौशन चौधरी जी हमरा सभ लग एहने प्रश्नकर्ताक रूपमे छथि जे अपना भरिसक सरकारीसं ल' क' प्राइभेट साफ्टवेयर कम्पनीक साइटपर 2008 सं लगातार पुछैत रहलाह जे मैथिली फॉण्ट बनलै की नै बनलै, कहिया बनतै आदि। भ' सकैए जे फॉण्ट - कीबोर्ड रौशनजी लेल नै बनल हो मुदा सामने वला आदमीकें ई बुझाएल जरूर हेतै जे मिथिलाक्षर लेल प्रश्न करए बला कियो छै, ओकरो मोन उत्सुक भेल हेतै मिथिलाक्षरक लेल ईहो बड़के काज भेलै। ■

श्रद्धांजलि

प्रखर कवि कैलाश झा 'किंकर'क निधन कोरोना सं

खगड़िया निवासी बहुभाषी कवि आ शिक्षक कैलाश झा 'किंकर' केर निधन कोरोना वायरसक संक्रमण सं भ गेल। मैथिली, अंगिका आ हिंदी मे हुनक रचना सभ बेश चर्चित रहल। हिंदी पत्रिका 'कौशिकी' केर संपादक सेहो छलाह। ओ चम्मन टोला, खगड़ियाक प्राथमिक विद्यालय मे प्रधानाध्यापक छलाह। अखिल भारतीय मिथिला संघक स्मारिका समय संकेत (2019) मे सेहो हुनक कविता आ गीत प्रकाशित भेल छल। संघ दिश सं हम सब हुनका श्रद्धा सुमन अर्पित करैत छी। हुनक प्रमुख रचना सब अछि: अंगिका संग्रह : 'जत्ते चले चलैने जा', 'ओकरा कोय सनकैनें छै', 'जानै जौ कि जानै जाता'। किछु प्रतिनिधि रचना: 'मास्टर के मस्टरबा कहबो', 'भेलै केहन ससुरा', 'बकलेल', 'दीवाली', 'नाता टुटलै', 'प्रेम-प्यार के बाते छोड़ऽ', 'बूढ़ऽ तें जपाले होय छै', 'बाकी सबकुछ ठीक-ठाक छै', 'बैठ कें धुनऽ अप्पन कपार' आदि।

(12 जनवरी, 1962 - 13 जुलाई 2020)

अल्पायु मे परलोक सिधारला सुशांत सिंह राजपूत

फिल्म अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत केर देहांत गत 14 जून कें मुम्बई मे रहस्यमय परिस्थिति मे भ गेल। ओ पूर्णिया जिलाक निवासी छलाह। हाल किछु वर्ष सं परिवार पटना मे छलनि। सुशांत टीवी सीरियल सब सं अपन कॅरिअर आरम्भ कयलनि आ बॉलीवुड मे खूब नाम कमौलनि।

हुनक निधन सं सम्पूर्ण मिथिला शोक संतप्त अछि। अखिल भारतीय मिथिला संघ परिवार हुनका श्रद्धाञ्जलि अर्पित करैत अछि। संगहि, संघक अध्यक्ष विजयचन्द्र झा सुशांत केर रहस्यमय निधनक जांच सीबीआई सं करेबाक मांग कयलनि।

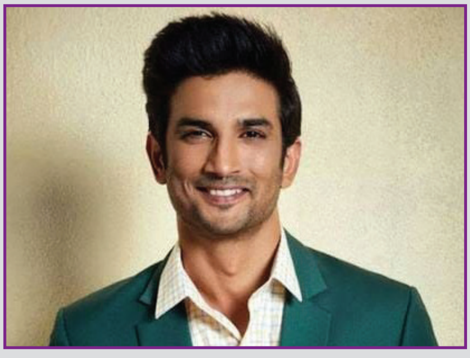

(21 जनवरी 1986-14 जून 2020)

मिथिलामे अमर रहता प्रदीप

विद्यापति के बाद मिथिला संस्कार गीत लिखबाक सबसं बेसी श्रेय अगर कोनो कवि के जाइत अछि त' ओ मैथिली पुत्र प्रदीप छथि। मां दुर्गा के भक्त कवि प्रदीप के देहांत कोरोना कालमे उम्र संबंधी बेमारी के चलते भ' गेल। अपन कालजयी रचना सं प्रदीप विद्यापति जकां हमेशा के लेल अमर रहता। कवि प्रदीप के मुख्य रूप से पहचान 'जगदंब अहीं अवलंब हमर हे माय अहां बिनु आस ककर' सं भेटल। मुदा हुनकर रचना 'तूं नै बिसरिहें गे माय, तूं जं बिसरबें त दुनियामे पड़तै बौआय' सेहो बच्चा-बच्चा के गाबैत सुनल जा सकैत अछि। एकरा अलावा हुनक लिखल कतेको विवाह गीत आ सोहर-समदाउन सब मिथिला संस्कारमे गाओल जाइत अछि।

एहि बीच प्रदीप के जखन निधन भेल तखन समूचा देशमे लॉकडाउन छल जाहि चलते हुनकर श्रद्धांजलि सभा सब सेहो वर्चुअल रूप सं आयोजित भेल। एहि क्रममे अखिल भारतीय मिथिला संघ के तत्वावधानमे सेहो एकटा वर्चुअल श्रद्धांजलि सभा के आयोजन कयल गेल। वर्चुअल प्लेटफॉर्म जू पर आयोजित एहि श्रद्धांजलि सभामे देश के तमाम कोन मे रहय वला मैथिल भाषी सहित नेपाल के लोक सब सेहो हिस्सा लेलाह। कार्यक्रम के शुरुआत करैत प्रो शेफालिका वर्मा कहली जे प्रदीप कतहु नहि गेला हं बल्कि ओ हमरा सबहक बीचमे छथि। किएक त हुनकर रचना हरदम हमरा सबहक संग अछि। अखिल भारतीय मिथिला संघ के अध्यक्ष विजयचंद्र झा कहला जे मैथिली पुत्र प्रदीप के चेहरा एक छल मुदा रचनात्मक मामलामे हुनकर कतेको रूप छल। एहि सबमे आध्यात्मिक, श्रृंगारिक, व्यावहारिक, प्राकृतिक, सामाजिक और आंदोलन सन विषयमे हुनकर लेखनी काफी प्रासंगिक अछि।

एहि सं पहिन फूलचंद झा 'प्रवीण' श्रद्धा सुमन अर्पित करैत कहला जे प्रदीपजी शुरुआत मे श्रृंगार आ प्राकृतिक सौंदर्य सं संबंधित रचना कयला आ बादमे मिथिला के पारंपरिक भाष्य पर व्यावहारिक गीत लिखलाह। ओ सामाजिक कुरीति सब आ गरीब वर्गक लोक दिस अपन कलम के मोड़ला जाहिमे 'पहिर लाल साड़ी उखारय खेसारी, बदन गोर छै भूख सं भेल कारी' सन रचना भारतीय भाषा साहित्यमे विरले भेटि सकैत अछि।

एहि अवर पर दरिभंगा सं हीरेन्द्र कुमार झा, उदयकांत मिश्र, परमानंद झा, आकाशवाणी दरभंगा के उमानंद झा, पटना आकाशवाणी के संवाददाता मणिकांत झा, उदयशंकर मिश्र, गायक आ गीतकार चंद्रमणि झा, युवा कवि गुफरान जिलानी, चेन्नै सं मनोज कुमार झा, गुवाहाटी सं प्रेमकांत चौधरी, सिलचर सं ऋतेश पाठक, पटना सं चेतना समिति के अध्यक्ष विवेकानंद झा, नागपुर सं मनोज चौधरी, अहमदाबाद सं राजकिशोर, नेपाल सं प्रवीण नारायण चौधरी सहित दिल्ली सं डॉ. ममता ठाकुर, निवेदिता झा, रंजना झा आदि लोकिन हिस्सा लेलनि आ हुनका याद कयलनि। एहि सं पहिने तीरभुक्ति के संपादक विनीत उत्पल कहलनि जे विद्यापति के बाद मैथिली पुत्र 'प्रदीप' के रचना अछि, जकरा मिथिला के लोग गुनगुनाबैत अछि। एहि अवसर पर अखिल भारतीय मिथिला संघ के महासचिव विद्यानंद ठाकुर, अखिलेश मिश्र, सचिव शंकर झा, पंडित कौशल झा, ब्रह्मेन्द्र झा सेहो हुनका श्रद्धासुमन अर्पित कयलनि। धन्यवाद ज्ञापन संस्था के सचिव आशुतोष झा कयलिन आ कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रकाश झा के द्वारा कयल गेल।

– रौशन कुमार झा

मैथिली पुत्र 'प्रदीप' को दी गई श्रद्धांजलि

Roushan.Jha
@timesgroup.com

■ **नई दिल्ली:** विश्व कवि विद्यापति के बाद मिथिलांचल में सबसे ज्यादा गाए और सुने जाने वाले जनकवि मैथिली पुत्र 'प्रदीप' के निधन पर पूरे मिथिलांचल सहित जहां कहीं भी देश और दुनिया में मैथिल रहते हैं, शोक की लहर फैल गई। प्रदीप जी ने तो मैथिली में हजारों गीत लिखे लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा ख्याति 'जगदंब अहीं अवलंब हमर, हे माय अहां बिनु आस ककर' से मिली थी। 84 वर्षीय प्रदीप का निधन 30 मई को दरभंगा के लहेरियासराय में हो गया था। पूरे देश में उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए वर्चुअल सभा का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में बीते रविवार को अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा नई दिल्ली में भी वर्चुअल प्लैटफॉर्म पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संघ के अध्यक्ष विजयचंद्र झा ने कहा कि प्रदीप जी का चेहरा एक था लेकिन रचनात्मक मामलों में उनके कई रूप थे। इनमें आध्यात्मिक, श्रृंगारिक, व्यावहारिक, प्राकृतिक, सामाजिक और आंदोलन जैसे विषयों में उनकी लेखनी काफी प्रासंगिक है। साहित्यकार प्रो. शेफालिका वर्मा ने कहा कि प्रदीपजी कहीं गए नहीं, वे हमारे बीच हैं, क्योंकि उनकी रचनाएं सदैव हमारे साथ हैं। फूलचंद झा 'प्रवीण' ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि प्रदीपजी ने प्रारंभ में श्रृंगार एवं प्राकृतिक सौंदर्य से संबंधित रचना की और बाद में मिथिला के पारंपरिक भाष्य पर व्यावहारिक गीत लिखे। इस मौके पर दरभंगा से हीरेंद्र कुमार झा, चेन्नै से मनोज कुमार झा, सिलचर से ऋतेश पाठक, दिल्ली से डॉ. ममता ठाकुर, विद्यानंद ठाकुर, अखिलेश मिश्र इत्यादि ने भी उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया।

श्रृंगार एवं प्राकृतिक सौंदर्य पर रचना की, पारंपरिक भाष्य पर व्यावहारिक गीत लिखे

ISSN : 2582-1660
29 अप्रैल, 2020 कें प्रकाशित

अखिल भारतीय मिथिला संघक मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोहक मध्य पाहुन लोकनिक सत्कार। चित्र मे छथि: सर्वश्री जे पी नड्डा (राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा), हुकुमदेव नारायण यादव (भूतपूर्व सांसद), प्रभात झा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा), मनोज तिवारी (तत्कालीन दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष, भाजपा) विजय चन्द्र झा, (राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.), ममता ठाकुर (उपाध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.) आ अन्य गणमान्य लोकनि

भारतीय प्रशासनिक सेवाक पूर्व अधिकारी मंत्रेश्वर झा कें 'सर गंगानाथ झा सम्मान' सं विभूषित करैत पाहुन आ पदाधिकारी लोकनि, संग मे छथि येह अवसर पर 'यात्री सम्मान' सं विभूषित श्री रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर'

मंच पर उपस्थित संघक पदाधिकारीगण आ कार्यकर्ता लोकनि

डॉ. भीमराव अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय सभागार मे उपस्थित मैथिल जनसमुदाय

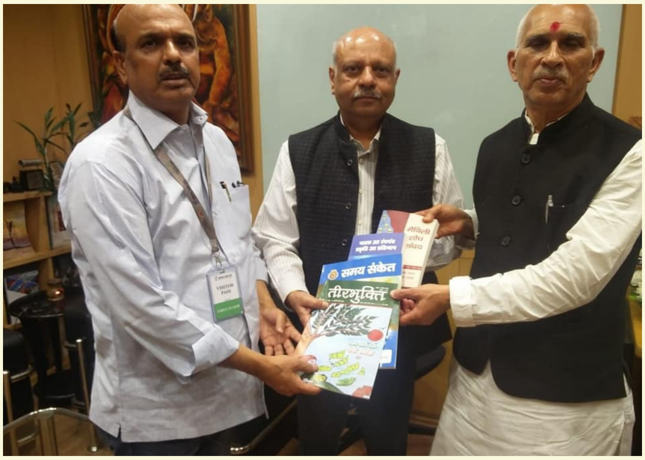

जिंदल शॉ ग्रुप केर सीईओ नीरज कुमार जी सं भेंट वार्ताक केर अवसर पर अ.भा.मि. संघक अध्यक्ष विजय चन्द्र झा आ महासचिव विद्यानन्द ठाकुर

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसं मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सं प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसं मुद्रित।
संपादक : विनीत कुमार झा 'उत्पल'